राजस्थानी लोकगीत

डा० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
एम० ए० (पी-एच० डी), साहित्यरत्न
उप निदेशक
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

चिन्मय प्रकाशन

प्रकाशक :
चिन्मय प्रकाशन
चौडा रास्ता, जयपुर—३

●

मुख्य विक्रेता
दी स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी
चौडा रास्ता, जयपुर—३
सोजती गेट, जोधपुर

●

मूल्य
५)

●

सन्
१९६८

●

मुद्रक :
दी यूनाइटेड प्रिन्टर्स,
जयपुर—३

विषय-तालिका

लोक-गीत ही जनता का साहित्य है।

—महात्मा गांधी

द्वितीय संस्करण की भूमिका

हमारा साहित्य मुख्यतः दो रूपो मे उपलब्ध होता है—(१) शास्त्रीय साहित्य, ऐसा साहित्य जो एक व्यक्ति विशेष द्वारा शास्त्रीय नियमोपनियमो का निर्वाह करते हुए रचित हो तथा (२) लोक-साहित्य, यह साहित्य मौखिक परम्परा से प्राप्त होता है और इसका सम्पूर्ण रूप व्यक्ति विशेष द्वारा रचित न होकर काल-परम्परानुसार अनेक जन-समुदायो द्वारा रचित और परिमार्जित होता है। हमारा लोक-साहित्य केवल ग्राम्य जनता और आदिवासियो मे ही प्रचलित नही है, वरन् नगरो के सुसस्कृत परिवारो मे भी इसका प्रसार और महत्व है। सुसस्कृत परिवारो के अनेक धार्मिक और सामाजिक पर्व और विधि-विधान लोकगीतो और लोक-कथाओं आदि से सम्पन्न किये जाते हैं। अनेक धार्मिक अवसरो पर लोक-गीतो का व्यवहार अनिवार्य होता है। ऐसी अवस्था मे लोक-साहित्य को अग्रेजी के 'फॉक लोर' का पर्याय मान कर केवल असभ्य जन-समुदायो का साहित्य नही माना जा सकता है। डॉ० श्याम परमार के मतानुसार लोक-साहित्य अथवा लोक-वार्ता को 'फॉक लोर' का पर्याय माना गया है।[१] "फॉक लोर" शब्द की व्याख्या इस प्रकार की गई है—

"१८४६ मे डवल्यू० जे० थामस ने यह शब्द सभ्य जातियों मे मिलने वाले असस्कृत समुदाय की प्रथाओ, रीति-रिवाजो तथा मूढाग्रहो को अभिव्यक्त करने के लिए गढा था। शब्दो के अर्थ परिभाषाओ द्वारा नियत नही होते, प्रयोग द्वारा होते है और आज लोक-वार्ता के क्षेत्र मे वह भी आ जाता है जिसे आरम्भ की परिभाषा मे जानबूझ कर बाहर रखा गया था, यथा लोकप्रिय कलायें तथा शिल्प। दूसरे शब्दो मे जानपदजन की भौतिक के साथ-साथ

---

१. भारतीय लोक साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ० ६ से २२।

बौद्धिक सस्कृति भी। मुख्यतः टेलर, फ्रेजर तथा अन्य अग्रेज वैज्ञानिको के उद्योगो के परिणामस्वरूप, जिन्होने, यूरोपीय जाननृजन के मूढाग्रहो और परम्परागत रीति-रिवाजों की व्याख्या करने के लिए तथा उन्हे समझाने के लिए निम्नस्तर की सस्कृति मे मिलने वाले साम्य के उपयोग करने की ओर विशेष ध्यान दिया। अग्रेजी परम्परा मे फॉक लोर के क्षेत्र तथा सामाजिक जीवन-विज्ञान के क्षेत्र की कोई सूक्ष्म सीमा निर्धारित नही की जाती— प्रयोग मे साधारण प्रवृत्ति इस फॉक लोर के क्षेत्र को सकुचित अर्थ मे सभ्य समाजो मे मिलने वाले पिछडे तत्वो की सस्कृति तक ही सीमित रखने की है।"[१]

इसी प्रकार लोक-सस्कृति की व्याख्या करते हुए उसको आदिम-मानव की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति कहा है—"लोक-सस्कृति वस्तुतः आदिम मानव की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति है, वह चाहे दर्शन, धर्म, विज्ञान तथा औषधि के क्षेत्र मे हुई हो, अथवा सामाजिक सगठन तथा अनुष्ठानो मे अथवा विशेषत इतिहास काव्य और साहित्य के उपेक्षाकृत बौद्धिक प्रदेश मे सम्पन्न हुई हो।"[२]

लोक साहित्य मे निहित 'लोक' से तात्पर्य हमारी सम्पूर्ण जनता से है, फिर चाहे वह ग्रामवासिनी हो अथवा नगरवासिनी। 'लोक' शब्द अत्यन्त प्राचीन है जिसका प्रयोग वैदिककाल से आधुनिक काल तक होता रहा है। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने इस विषय मे लिखा है—"लोक" हमारे जीवन का महासमुद्र है, उसमे भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ सचित रहता है। 'लोक' राष्ट्र का अमर स्वरूप है, 'लोक' कृतज्ञान और सम्पूर्ण अध्ययन मे सब शास्त्रो का पर्यवसान है। अर्वाचीन मानव के लिये लोक सर्वोच्च प्रजापति है। 'लोक' की धात्री सर्वभूत माता पृथ्वी और लोक का व्यक्त रूप मानव, यही हमारे नये जीवन का अध्यात्मशास्त्र है। इसका कल्याण हमारी मुक्ति

१. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका।

२. क—ए हैड बुक ऑव फॉक लोर—सोफिया बर्न।
   ख—ब्रजलोक-साहित्य का अध्ययन—डा० सत्येन्द्र, पृ० ४-५।

का द्वार और निर्वाण का नवीन रूप है। लोक, पृथ्वी, मानव इसी त्रिलोकी मे जीवन का कल्याणतम रूप है।"[1]

आचार्य प हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'लोक' शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा है—"लोक" शब्द का अर्थ 'जानपद' या 'ग्राम्य' नहीं है बल्कि नगरो और गावो मे फैली हुई वह समूची जनता है, जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथिया नही हैं। ये लोग नगर मे परिष्कृत, रुचि-सम्पन्न तथा सुसस्कृत समझे जाने वाले लोगो की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते है और परिष्कृत रुचि वाले लोगो की समूची विलासिता और सुकुमारता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुए आवश्यक होती है, उनको उत्पन्न करते हैं।"[2]

लोक-साहित्य के क्षेत्र की व्याख्या करते हुए डा० सत्येन्द्र ने लिखा है—"लोक-साहित्य मे पिछडी जातियो मे प्रचलित अथवा अपेक्षाकृत समुन्नत जातियो के असस्कृत समुदायो मे अवशिष्ट विश्वास, रीति-रिवाज, कहानियाँ, गीत तथा कहावते आती हैं। प्रकृति के चेतन तथा जड़ जगत के सम्बन्ध मे, भूत-प्रेतो की दुनिया तथा उनके साथ मनुष्यो के सम्बन्धो के विषय मे जादू-टोना, सम्मोहन, वशीकरण, तावीज, भाग्य, शकुन, रोग तथा मृत्यु के सबध मे आदिम तथा असभ्य विश्वास इसके क्षेत्र मे आते हैं। और भी इसमे विवाह, उत्तराधिकार, बाल्यकाल तथा प्रौढ जीवन के रीति-रिवाज तथा अनुष्ठान और त्यौहार, युद्ध, आखेट, मत्स्य-व्यवसाय, पशु-पालन आदि विषयो के भी रीति-रिवाज और अनुष्ठान इसमे आते हैं तथा धर्म-गाथायें, अवदान (लीजेण्ड), लोक कहानियाँ, गीत, साके (बेलेड) किवदन्तियाँ, पहेलियाँ तथा लोरियाँ भी इसके विषय है।"[3]

'लोक' शब्द का अर्थ व्यापक है इसलिये 'लोक' शब्द के अन्तर्गत सम्पूर्ण मानव-समाज का समावेश किया जाना चाहिये। लोक-साहित्य के अन्तर्गत साहित्यिक रचनाओ का समावेश करना ही समीचीन होगा। लोक-

---

१. सम्मेलन-पत्रिका, (लोक-सँस्कृति विशेषांक) स० २०१०, लोक का प्रत्यक्ष दर्शन, निबन्ध, पृ० ६५।

२. जनपद, वर्ष १, अक १, पृ० ६५।

३. ब्रज लोक-साहित्य का अध्ययन, डॉ० सत्येन्द्र, पृ० ४-५।

साहित्य के विषय—पूजा, अनुष्ठान, व्रत, जादू-टोना, भूतप्रेत, तावीज, सम्मोहन, वशीकरण आदि अनेक हो सकते है, किन्तु लोक-साहित्य के प्रकारों के अन्तर्गत साहित्यिक रचनाओ को ही लिया जाना चाहिये क्योकि लोक-साहित्य का अर्थ लोक का साहित्य है।

लोक-साहित्य का वर्गीकरण

लोक साहित्य का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है—
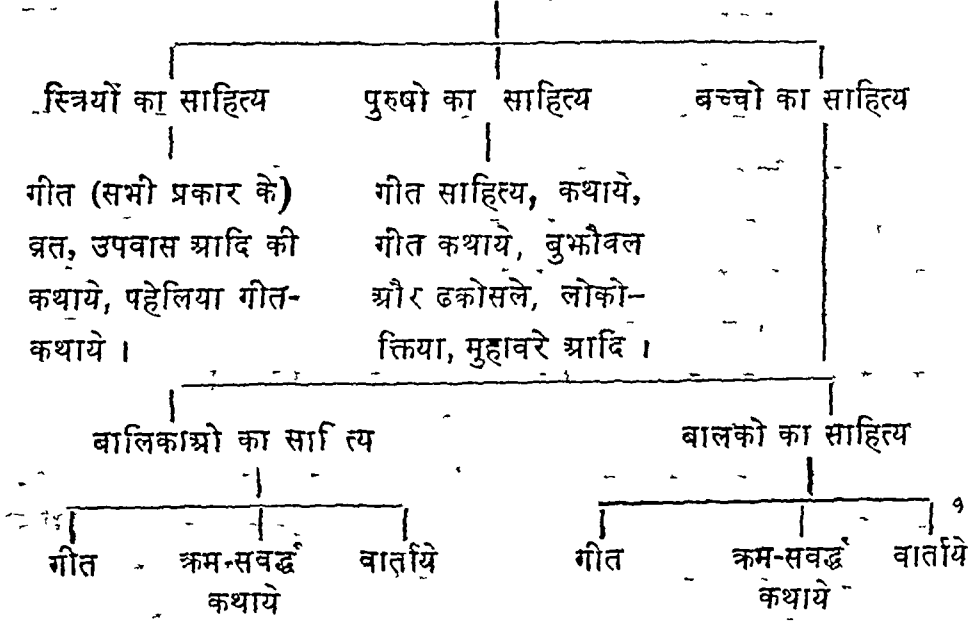
ऐसे लोक-गीत, कथाये और लोकोक्तिया आदि भी है जिनका प्रचलन स्त्रियो और पुरुषो मे समान रूप से और बालक-बालिकाओ मे समान रूप से अथवा स्त्री-पुरुष-बालक सबमे समान रूप से है। उक्त वर्गीकरण मे ऐसे साहित्य का समावेश नही है इसलिए उक्त वर्गीकरण पूर्ण नही कहा जा सकता। हमारे लोक-साहित्य का वर्गीकरण निम्नलिखित रूप मे करना उचित होगा—

---

१ डॉ० श्याम परमार, भारतीय लोक-साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ० २१।

लोक-साहित्य

- लोकगीत
  - धार्मिक लोक गीत
    - (१) सस्कारो के गीत
    - (२) देवी-देवताओ के गीत
    - (३) व्रतो के गीत
    - (४) रातीजगो के और स्फुट गीत
  - मनोरजनात्मक लोक गीत
    - (१) त्योहारो के गीत
    - (२) ऋतुओ के गीत
    - (३) क्रीडाओ के गीत
    - (४) फुटकर गीत
- लोक-कथाएँ
  - (१) नीति कथायें
  - (२) व्रत कथायें
  - (३) प्रेम कथाये
  - (४) मनोरजक कथाये
  - (५) दन्त कथाये
  - (६) पौराणिक कथाये
  - (७) विविध विषयक कथायें
- लोक कथा काव्य (पवाडे)
  - (१) धार्मिक लोक-कथा काव्य
  - (२) ऐतिहासिक लोक कथा काव्य
  - (३) विविध विषयक लोक कथा काव्य
- लोक नाटक
  - (१) धार्मिक लोक नाटक
  - (२) ऐतिहासिक लोक नाटक
  - (३) प्रेमाख्यानपरक लोक नाटक
  - (४) विविध विषयक लोक नाटक
- कहावतें मुहावरे, पहेलिया आदि
  - (१) नीति सम्बन्धी
  - (२) सामाजिक
  - (३) धार्मिक
  - (४) ऐतिहासिक
  - (५) स्थान और जाति-सम्बन्धी
  - (६) विविध ज्ञान-सबंधी

राजस्थानी लोकगीतो के अब तक अनेक सग्रह प्रकाशित हो चुके हैं किन्तु उनके सम्पादको की रुचि सग्रह-सम्बन्धी अधिक रही है, अध्ययन सम्बन्धी कम । यही कारण है कि राजस्थानी लोकगीतों को अनेक व्यक्तियो द्वारा उपेक्षित दृष्टि से देखा जाता है ।

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों मे हुए पुरातात्विक उत्खनन-कार्यों और अनुसधानो से प्रकट होता है कि वैदिक सभ्यता का प्रारम्भिक विकास राजस्थान मे हुआ था तथा अधिकाश वैदिक साहित्य की रचना राजस्थान मे ही हुई । वैदिककाल के अनेक ऋषियों के आश्रम राजस्थान मे आज भी प्रसिद्ध है । वैदिक काल की प्रसिद्ध सरिता सरस्वती राजस्थान मे ही प्रवाहित होती थी । वेद, पुराण और उपनिषदादि साहित्य "विद्या कण्ठे" नामक उक्ति के अनुसार ऋषि-परम्परा मे मौखिक रूप से ही प्रचलित था । कालान्तर मे विस्मृत होने के भय से ही यह लिपिबद्ध किया गया । उक्त साहित्य के लिपिबद्ध होने पर भी मौखिक रूप मे गेय होने की परम्परा शताब्दियो तक हमारे देश मे प्रचलित रही । मौखिक रूप मे प्रचलित हमारा लोक-साहित्य और मुख्यतः हमारे लोकगीत प्राचीन साहित्य-परम्परा के ही प्रतीक है । इस साहित्य मे समयानुसार अनेक परिवर्तन-परिवर्द्धन हो गये है किन्तु इनमे प्राचीन वैदिक तत्वों के अवशेष भी किसी न किसी रूप मे अवश्य उपलब्ध हो जाते है । वैदिक देवता इन्द्र, वरुण, वायु, जल और प्रजापति आदि से सम्बन्धित अनेक वर्णन हमारे इन लोकगीतो मे बिखरे हुए हैं । आधुनिक काल मे प्रचलित हमारे धार्मिक एव सामाजिक सस्कारो मे अनेक लोकगीत अनिवार्य रूप मे मन्त्रवत् गेय होते हैं । विषय और स्वर दोनो ही दृष्टियो से अनेक लोकगीतो की प्रतिष्ठा वैदिक परम्परा मे हो सकती है ।

राजस्थानी लोकगीतो के माध्यम से पूर्व वैदिककाल से आधुनिक काल तक के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और सास्कृतिक विषयो मे हुए अनेक उथल-पुथल एव परिवर्तन ज्ञात किये जा सकते है । भाषा-शास्त्र की दृष्टि से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि वैदिककाल के अनेक शब्द-प्रयोग राजस्थानी गीतों मे ही अब सुरक्षित है । हमारा जातीय और सास्कृ-

तिक इतिहास इन लोकगीतो मे ही रक्षित है। राजस्थानी लोक-गीतों के ऐसे महत्व को ध्यान मे रखते हुए ही वेद-वीथि-पाथिक गुरुवर स्व० पं० मोतीलालजी शास्त्री ने इन्हें महासंगीत की सज्ञा प्रदान की है।

अत्यन्त दुख का विषय है कि राजस्थानी लोकगीतो का विधिवत् सर्वाङ्गीण अध्ययन तो दूर रहा अभी उनका सर्वेक्षण और सङ्कलन तक पूर्ण नही हो सका है तथा विस्मृति के गहन गर्त मे दिनों-दिन इनका विनाश होता जा रहा है। नवीन सभ्यता और शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ ही हमारी यह कण्ठस्थ पुरातन थाती वृद्धजनों के साथ ही काल के कराल गाल मे समाती जा रही है। हमारे यहाँ साहित्यिक-सास्कृतिक क्षेत्र मे स्थापित सस्थाओ की कमी नही किन्तु कोई इस महत्वपूर्ण कार्य को तुरन्त पूर्ण करने मे तत्पर नही दिखाई देती। अपने सीमित साधनों से भी अनेक सास्थाओं ने राजस्थानी लोक-साहित्य और लोकगीतो के विषय मे यत्किञ्चित कार्य किया है किन्तु प्रान्त की साहित्य-अकादमी ने तो अभी तक इस कार्य का श्रीगणेश तक नही किया है। इस विषय मे वहा अभी तक विचार ही चल रहा है और यह साहित्य नष्ट होता जा रहा है। अब भी इस अपराध का परिमार्जन नही हो सका तो भावी पीढिया हमे क्षमा नही करेगी और इतिहास हमारी अकर्मण्यता की साक्षी देता रहेगा।

राजस्थानी लोक-साहित्य और मुख्यत राजस्थानी लोक-गीत विषय मे अनेक प्रशसनीय व्यक्तिगत प्रयत्न हुए है किन्तु व्यक्तिगत प्रयत्नो की एक सीमा होती है। यह भी सीमित साधनो से किया गया अध्ययनपरक एक व्यक्तिगत प्रयत्न ही है। सङ्कलन हजारो ही राजस्थानी लोकगीतो का अब तक हो चुका है किन्तु वह भी अपूर्ण ही लगता है। इस विषय के अध्येता आगे आवें तो उन्हे साधुवाद सहित पूर्ण सहयोग समर्पित है।

मुझे समय-समय पर स्व० झवेरचन्दजी मेघाणी, प० रामनरेशजी त्रिपाठी, महा प० राहुल साकृत्यायन, डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल, पं० मोतीलालजी शास्त्री, प० लक्ष्मीलालजी जोशी, डॉ० कन्हैयालाल सहल, प्रो. सत्येन्द्रजी, देवेन्द्र सत्यार्थी, डॉ० श्याम परमार जैसे लोक-साहित्य के प्रमुख

अध्येताओं से मार्गदर्शन और प्रेरणा मिलती रही जिसके लिये हार्दिक रूप मे आभारी हू ।

'राजस्थानी लोकगीत' के प्रथम सस्करण को प्रिय पाठको ने प्रेम-पूर्वक अपनाया और प्रशसा की तदर्थ उनके प्रति आभारी हू । यह दूसरा परिवर्द्धित सस्करण भी पूर्ण विश्वास है कि पाठको को रुचिकर लगेगा । अपने समस्त सहयोगियो और इसके प्रकाशक मान्यवर श्री ताराचन्दजी वर्मा को अनेक-अनेक धन्यवाद ।

३६, नाहटा भवन, जोधपुर
मकर सक्रान्ति, २०२४ वि.
ता० १४ जनवरी, १९६८

—पुरुषोत्तमलाल मेनारिया

१. राजस्थानी लोकगीतों का महत्त्व

लोकगीत हमारी जनता के स्वाभाविक उद्गार है, जिनका प्रादुर्भाव सुख-दुःख, हर्ष-शोक आदि विविध अनुभूतियो के परिणामस्वरूप हुआ है। हमारी जनता की वास्तविक स्थिति और सस्कृति को समझने के लिए सम्बन्धित लोकगीतो का अध्ययन आवश्यक है इसलिए आधुनिक काल मे देश-विदेश के प्रमुख विद्वानो का ध्यान भारतीय लोकगीतो के सग्रह और अध्ययन की ओर आकर्षित हुआ है।

राजस्थान अत्यन्त प्राचीन काल से ही एक सुसस्कृत और साहित्य-सम्पन्न प्रदेश रहा है। प्राचीनतम भारतीय सभ्यता के अवशेष राजस्थान मे ही मिलते हैं। साथ ही राजस्थान मे समय-समय पर विभिन्न मानव-जातियो का आगमन होता रहा है जिसका प्रभाव यहा के साहित्य एव सस्कृति पर भी पडा है। राजस्थान की प्राकृतिक स्थिति मे भी पर्याप्त विविधता है। राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी भाग मे सुविस्तृत मरु-भूमि है। राजस्थान का दक्षिणी-पूर्वी भाग उपजाऊ खेतो से लहराता रहता है। राजस्थान के मध्य मे अरावली पर्वत-श्रेणी है जिसमे हरी-भरी घाटियां और सैकडो झीलो की शोभा राजस्थान के जन-जीवन को आनन्दित करती है। इस प्रकार राजस्थान के विविध प्रकार के प्राकृतिक वातावरण मे पोषित होने वाले लोकगीतो की निरन्तर प्रवाहमयी धारा भी विविधता से पूर्ण है।

वसत मे राजस्थान की धरती नवीन शृगार धारण करती है तो हमारी जनता भी गैर और घूमर जैसे लोकनृत्यो के साथ गाने लगती है। गर्मी की ठण्डी रातो मे ऊँट सवार "कतारिये" अपनी लम्बी यात्रा गीतो के सहारे ही पूरी करते है। श्रावण-भादो की बरसाती रातो मे जब 'तीजणी' प्रियतम की राह देखती हुई व्याकुल हो उठती है तो लोकगीतो मे उसके उद्गार फूट पडते हैं। इसी प्रकार नवरात्रो मे देवी-पूजा के समय पर अथवा रातीजगो मे पूर्वजो के चरित्र बखाने जाते हैं तब वीर रसात्मक लोकगीतो की धारा प्रवाहित हो जाती है।

हमारे लोक-जीवन का कोई भी मगलदायक अवसर लोकगीतो से रहित नही होता। कोई भी सस्कार हो अथवा त्योहार हो उसमे लोकगीतो की ही प्रधा-

नता होती है। देवी-देवताओ को भी लोकगीतो से रिझाया जाता है। अ धेरी रातो मे कुओ पर चरस चलाते "वारिये" लोकगीतो के द्वारा ही अपने परिश्रम को सरस बनाते है। इसी प्रकार स्त्री-पुरुष खेतो मे काम करते हुए, पशु चराते हुए, ऊ ट,घोडे अथवा गाडी मे बैठते हुए, चक्की चलाते हुए, दुहनी करते हुए, दही बिलोते हुए और खेलते हुए गीत गाते अथवा गुनगुनाते रहते है। हमारा कोई कार्य लोकगीतो के बिना मानो पूर्ण नही हो सकता है।

राजस्थानी लोकगीतो मे हमारे लोक-जीवन से सम्बन्धित कोई भी विषय अछूता नही छोडा गया हे। इनमे लोक-जीवन सम्बन्धी प्रत्येक वस्तु अथवा प्रसग का विस्तृत और सजीव चित्रण किया गया है। हमारी वेश-भूषा और आभूषणो का, खाद्य पदार्थों का, भवन के प्रत्येक भाग का, विविध प्रकार के वाहनो ओर क्रीडाओ का, विभिन्न त्यौहारो और देवी-देवताओ का विस्तृत वर्णन राजस्थानी लोकगीतो मे पाया जाता हे। साथ ही हमारे मानव समाज के प्रत्येक मनोभाव तक का सूक्ष्म चित्रण इन लोकगीतो मे हुआ हैं। बाल सुलभ भावनाओ, हर्ष-शोक, मिलन-विरह, राग और वैराग्य सभी भावनाओ का सूक्ष्म वर्णन मिलता हे। कई गीत लोक-कथा-काव्य के रूप मे मिलते हैं जिनमे मार्मिक कहा-नियो के उतार-चढाव देखे जा सकते हैं। कई गीत ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व-पूर्ण होते हैं। इन गीतो के आधार पर हम अपने भूतकाल को भी अङ्कित कर सकते हैं।

राजस्थानी लोकगीतो के आधार पर हमारा मानव-समाज निरक्षर रहते हुए भी गुणी बनता है। लोकगीतो से ही हमारा लोक-समाज प्राचीन काल से जीवन के उतार-चढाव मे अपना मार्ग प्रशस्त करता रहा है। इसलिए लोक-गीतो का वैज्ञानिक रूप मे सग्रह और अनुशीलन आज के युग की महान् आवश्य-कता है। *

सगीत के प्रति हमारी जनता की आदिकाल से ही रुचि रही है इसलिए जनता मे लोकगीतो के प्रति अनुराग होना स्वाभाविक है। महात्मा गाधी के

---

* राजस्थानी लोकगीतो के विषय मे विशेष जानने के लिए देखिये—लेखक की अन्य पुस्तक 'राजस्थान की रसधारा' पृष्ठ-७३।

शब्दो मे "लोकगीत ही जनता की भाषा है ···· लोकगीत हमारी समूची सस्कृति के पहरेदार हैं ।" स्व० रामनरेश त्रिपाठी ने लोकगीतो के लिए "प्रकृति के उद्गार" लिखा है । स्व० पं० मोतीलाल शास्त्री ने लोकगीतो की महत्ता इस प्रकार बताई है—

"मानवस्वरूप के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा चारो तत्वो मे प्रथम तीन से सुसम्बन्धित क्रिया सभ्यता कहलाती है और चौथे आत्मतत्व से सम्बन्धित क्रिया संस्कृति । लोकगीत वास्तव मे आत्म तत्व से अनुप्राणित होने से सस्कृति के प्रतीक हैं ।"

डॉ० सत्येन्द्रजी ने लोकगीतो को "निर्माता मे निर्माण के अहं चैतन्य से शून्य" होना लिखा है । परी के मतानुसार "लोकगीत आदिमानव का उल्लासमय संगीत" है । मेरिया लीच ने "डिक्शनरी आफ फॉकलोर" मे लोकगीतो की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं—

१. लोकगीत लोक समूह मे प्रचलित होवे हैं ।

२. लोकगीतो मे लोक-समूह का काव्य तथा संगीत निहित है जिसका साहित्य मौखिक परम्परा से आता है, लिखित अथवा छपे हुए रूप से नही ।

३. लोकगीतो मे गेय तत्व और नृत्य की धुन अवश्य होती है परन्तु नृत्य गुण सम्पूर्ण लोकगीत साहित्य के लिए अनिवार्य नही । कुछ व्यावसायिक तथा अन्य प्रकार के गीत साधारण रागो के भी होते हैं जो कि नृत्य के लिए उपयुक्त नही ।

———

२. राजस्थानी लोकगीतों का वर्गीकरण

राजस्थानी लोकगीत प्रचुर मात्रा मे मिलते है और समय-समय पर परिवर्तित-परिवर्धित भी होते रहते हैं। साथ ही नये गीतो का उदय और पुराने गीतो का विनाश भी लोक-रुचि के अनुसार होता रहता है। राजस्थानी लोकगीतो का सकलन कार्य बहुत कम हुआ हें। राजस्थान मे ऐसे कई व्यक्ति मिलेंगे जिनको १६-२० नही सैकडो लोकगीत कठस्थ हैं। दु ख है कि अभी तक हमारी इस राष्ट्रीय निधि के सरक्षण का कोई समुचित प्रयत्न नही किया गया है और प्रचलित लोकगीत लगातार काल के कराल गाल मे समाविष्ट होते जा रहे हैं।

राजस्थानी लोकगीतो के पूर्ण संकलन के अभाव मे निजी संग्रह और विभिन्न अवसरो पर सुनाई देने वाले लोकगीतो की स्मृति के आधार पर ही यह सक्षिप्त अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है।

राजस्थानी लोकगीतो का वर्गीकरण कई प्रकार से किया जा सकता है। जैसे—

(क) उद्देश्य के अनुसार राजस्थानी लोकगीतो के दो भाग किये जा सकते हैं—१ धार्मिक लोकगीत, जिनमे राजस्थानी संस्कारो, देवी-देवताओ और व्रत, भक्ति, हरजस आदि से सम्बन्धित लोकगीत है। २. मनोरजनात्मक, जिनमे विभिन्न क्रीडाओ, त्यौहारो, ऋतुओ और मानव-जीवन के सरस प्रसंगो से सम्बन्धित लोकगीतो का समावेश किया जा सकता हैं।

(ख) लावणी, घूमर, माड आदि विभिन्न लौकिक रागनियो के अनुसार लोकगीतो के वर्गीकरण का दूसरा प्रकार अपनाया जा सकता है।

(ग) राजस्थानी लोकगीतो को १. धार्मिक, २. सामाजिक, ३. ऋतु-सम्बन्धी, ४. घर-गृहस्थी सम्बन्धी, ५. दाम्पत्य प्रेम सम्बन्धी, ६. ऐतिहासिक आदि विभिन्न विपयो के अनुसार भी विभाजित किया जा सकता हैं।

(घ) राजस्थानी लोकगीतो को १. पुरुप गीत, २. स्त्री गीत ३. बाल गीत ४. पुरुष, स्त्री और बालक सभी के साथ मिल कर गाये जाने वाले गीत, इन चार श्रेणियो मे भी बाँट सकते है।

(ङ) राजस्थानी लोकगीतो को राजस्थानी भाषा की विविध बोलियों के अनुसार भी विभक्त किया जा सकता है। राजस्थानी लोकगीत बोली सम्बन्धी साधारण हेर-फेर के साथ प्रायः समान रूप मे पाये जाते हैं।

(च) राजस्थानी लोकगीतो को राजस्थान के विभिन्न प्रशासनीय विभागो के अनुसार भी विभक्त किया जा सकता है। राजस्थान के प्रशासन विभाग, शासन सम्बन्धी सुविधाओ के अनुसार किये गये हैं। इनमे कोई संस्कृति सम्बन्धी वैज्ञानिक आधार नही अपनाया गया है, इसलिए इस प्रकार से लोकगीतो का वैज्ञानिक अध्ययन नही किया जा सकता। साथ ही राजस्थान के बहुत-से प्रशासनीय विभागो के लोकगीत सकलित भी नही हुए हैं।

राजस्थानी लोकगीत-वर्गीकरण के उपर्युक्त सभी प्रकारो मे पहिला प्रकार सर्वथा उपयुक्त है जिसके अन्तर्गत समस्त राजस्थानी लोकगीतो का समावेश वैज्ञानिक रूप मे किया जा सकता है।

(१) राजस्थानी धार्मिक लोकगीत

(अ) सस्कार सम्बन्धी गीत

धार्मिक लोकगीतो मे सस्कार सम्बन्धी लोकगीतो का प्रमुख स्थान है। विभिन्न सस्कारो द्वारा ही भारतीय जीवन सुसस्कृत माना जाता है और गर्भाधान सस्कार से लेकर मृत्यु-संस्कार तक भारतीय जीवन आबद्ध रहता है। प्रत्येक सस्कार के दो भाग होते हैं—पहला शास्त्रीय और दूसरा लौकिक। शास्त्रीय भाग किसी पुरोहित, कुल-गुरु और पुजारी के द्वारा शास्त्रीय विधि से सम्पन्न किया जाता है। सस्कारो का लौकिक पक्ष लोकगीतो द्वारा और लौकिक रीति-व्यवहारो द्वारा पूरा किया जाता है।

राजस्थान मे प्रचलित मुख्य सस्कार इस प्रकार हैं—

१ जन्म पूर्व के सस्कार—जैसे फुलेरा अर्थात् नववधू को होने वाला प्रथम रजोदर्शन और आगरणी आदि। २. जन्म, छठी, नामकरण, सूर्य-पूजा, जलवा, ढूढ आदि। ३. जडूलो और नाक-कान विधाई। ४. जनेव। ५. विवाह जिसमे सगाई, विनायक, गृहशान्ति, मायरो, बनोलो, कामण, कलश, पीठी,

तेल चढाना, साँकडी, निकासी (गोडछडी), तोरण, फेरा, कुवर कलेवो, जुआ-जुई, विदाई, पडलो, पेसारो, रातीजगो, आणो आदि का समावेश होता हैं। ६. मृत्यु।

(क) गर्भावस्था के गीत

गर्भवती स्त्रियो को कई प्रकार के स्वादिष्ट पदार्थ खाने की इच्छा स्वाभाविक रूप मे होती हैं और इस इच्छा की पूर्ति आवश्यक रूप में की जाती है। ऐसी अवस्था मे गर्भवती स्त्री को खट्टी वस्तुएँ अच्छी लगती है। नारगी का गीत इस प्रकार है—

नारगी

मालीकारे खिड़की खोल भवर ऊभा बारणै।
आओ कँवरां बैठो नी पास, कांई तो कारण आया ?
म्हाकी धण नै पैलो जी मास, नारगी में मन गयो जी।
नारंगीरा लागै छै हजार, कलियांरा पूरा डोड़सै जी।
नारगीरा दांला हजार, कलियांरा पूरा डोड़सै जी।
पैली खाई खाटी लागी, दूजी खट-मीठी लागी।
तीजी नै बींदड़ राजा जनम लियो।
म्हारी धण नै दूजो जी मास, नारंगी में मन गयो।
म्हारी धण नै तीजो जी मास. नारगी में मन गयो।
म्हारी धण नै चौथो जी मास, नारगी में मन गयो।
म्हारी धण नै पाँचवों जी मास, नारगी में मन गयो।
म्हारी धण नै छठो जी मास, नारगी में मन गयो।
म्हारी धण नै सातवों जी मास, नारगी में मन गयो।
म्हारी धण नै आठवों जी मास, नारंगी में मन गयो।
म्हारी धण नै पूरा जी मास, नारंगी में मन रह्यो।

अर्थ

माली के लडके खिडकी खोल, भवरजी बाहर खडे है। आओ कुंवरजी पास वैठो, किस कारण आना हुआ ?

हमारी स्त्री के पहिला महीना है और उसका मन नारंगी मे लगा है। नारंगी के लगते हैं हजार और कली के पूरे डेढ सौ जी। नारंगी के देंगे हजार और कली के पूरे डेढ सौ जी। पहली खाई तो खट्टी लगी और दूसरी खाई तो खट-मीठी लगी। तीसरी मे बीदड राजा ने जन्म लिया।

मेरी स्त्री को दूसरा महीना लगा है जी, और उसका मन नारंगी मे गया है। मेरी स्त्री को तीसरा महीना लगा है जी और उसका मन नारगी मे गया है। मेरी स्त्री को चौथा महीना लगा है जी और उसका मन नारगी मे गया है। मेरी स्त्री को पांचवा महीना है जी और उसका मन नारगी मे गया है। मेरी स्त्री को छठा महीना लगा है जी और उसका मन नारगी मे गया है। मेरी स्त्री को सातवा महीना लगा है जी और उसका मन नारगी मे गया है। मेरी स्त्री को आठवां महीना लगा है जी और उसका मन नारगी मे गया है। मेरी स्त्री को पूरे महीने हो गये हैं और उसका मन नारंगी मे रह गया है।

सन्तान उत्पन्न होने पर कई प्रकार के गीत गाये जाते हैं। इस अवसर पर जच्चा को जिस प्रकार की वस्तुएं दी जाती हैं उनका गीतो मे विशेप महत्व होता है। जच्चा सम्बन्धी गीत इस प्रकार हैं —

(ख) जच्चा

कुण्डलो भर केसर घोली जद लाम्बा केस पछाड्या,
ओ मलूकजादी जच्चा।
गोरी एक अरज म्हारी सुणज्यो, सासूजीरा आदर लीज्यो।
हो पिया सासूजी म्हानै नीं सुहावैं,
म्हारी खाल चरुंठ्या मारै ए, मलूकजादी जच्चा।
गोरी एक अरज म्हारी सुणज्यो,
भाभीजीरो आदर लीज्यो, ए मलूकजादी जच्चा।
पिया भाभी जी म्हानै नी सुहावैं,
मोपै रात्यूं पीसणों पिसावैं, ए मलूकजादी जच्चा।
गोरी एक अरज म्हारी सुणज्यो,
दौराणी रो आदर लीज्यो, ए मलूकजादी जच्चा।

पिया दौराणी म्हानै नीं सुहावै,
म्हारी आधी रसोई बँटावै, ए मलूकजादी जच्चा।
गोरी एक अरज म्हारी सुणज्यो,
बाईसारो आदर कीज्यो, ए मलूकजादी जच्चा।
पिया बाईसा म्हानै नीं सुहावै,
म्हारी एकरी आठ लगावै, ए मलूकजादी जच्चा।

अर्थ

बरतन भर केसर तैयार की, जब लम्बे बाल बिखेरे, ओ मलूकजादी जच्चा। गोरी एक अरज हमारी सुनना—सासूजी का आदर करना। प्रियतम ओ! सासूजी हमको नहीं सुहाते, हमारी खाल मार से दर्द करती है। गोरी एक अरज हमारी सुनना, भाभी जी का आदर करना। प्रियतम! भाभीजी हमको नहीं सुहाते, वे हमसे रात भर अनाज पिसवाते हैं। गोरी एक अरज हमारी सुनना—दौरानी का आदर करना। प्रियतम! दौरानी हमको नही सुहाती, वह हमसे आधी रसोई तैयार करवाती है। गोरी एक अरज हमारी सुनना—बहिन का आदर करना। प्रियतम! बहिन हमको नही सुहाती, वह एक बात को आठ गुना बढाकर कहती है।

पीपली

म्हारै आंगण पीपल रो पेड़ झड़ झड़ पीपल झड़ पड़ै।
सुसराजी ल्याया छै बीण, पीपल पीवो म्हारी कुल बऊ।
म्हे नीं पीवां म्हारा सुसराजी, पीपल म्हानै लागै चिरपरी।
दाजैली कमल बदन सी जीब, पीपल लागै म्हानै चिरपरी।
थांका हालरिया ने हलवो जी हलवो दूध,
नखराली ने पीपल गुण करे।
म्हांका सायबजी ल्याया छै बीण, पीपल पीवो म्हांकी गोरडी।
थांका हालरिया ने हलवो जी हलवो दूध,
नखराली ने पीपल गुण करे।
पीपल ले जच्चा पी गई, राख्यो छै आपणा सायबजी रो मान।

अर्थ

मेरे आगन मे पीपल का पेड है, पीपल झड-झड कर पडती है। सुसराजी पीपल एकत्रित करके लाये हैं, पीयो मेरी कुल वहू। हम नही पीते मेरे सुसराजी, पीपल हमको चिररारो लगती है, कमल वदन सी जिह्वा जल जायगी। पीपल हमको चिरपरी लगती हैं। तुम्हारे लाडले को भरपूर दूध मिलेगा। नखराली को पीपल लाभदायक है। मेरे प्रियतम पीपल एकत्रित कर लाये हैं, मेरी गोरी पीपल पीयो। तुम्हारे लाडले को भरपूर दूध मिलेगा, नखराली को पीपल गुण करती है। जच्चा पीपल लेकर पी गई। अपने प्रियतम का उसने मान रख लिया है।

सन्तान उत्पन्न होने के सातवें दिन सूर्य-पूजा होती है। इस अवसर पर जच्चा स्नान करती है, नवीन वस्त्र धारण करती है और घर से छुआछूत का सामान दूर किया जाता है अथवा शुद्ध किया जाता हैं। सूर्य-पूजा सम्बन्धी दो लोकगीत इस प्रकार है—

(ग) सूरज-पूजा

सूरज पूजतां कुरजा नावण थू'कठे जाय?
जणी घर सूरज पूजती, सूरज पूजावा ने जाय।
डूंगर चढ़ती वेलडी, ढोलण थू कठे जाय?
जणी घर सूरज पूजती, ढोल बजावा ने जाय।
डूंगर चढ़ती बेलड़ी, कुमारण थू कठे जाय?
जणी घर सूरज पूजती, कलस वंदावा ने जाय।

अर्थ

सूरज-पूजा करवाने के लिए नाइन चलने लगी, तो कुरजा बोली—नाइन तू कहाँ जाती है? जिस घर मे सूरज-पूजा है मैं वही सूरज पूजा के लिए जाती हूँ। पहाड पर चढती हुई वेलडी बोली—ढोलिन तू कहा जाती है? जिस घर में सूरज-पूजा है मैं वही ढोल वजाने के लिए जाती हू, पहाड पर चढती वेल बोली—कुम्हारिन तू कहा जाती है? जिम घर मे सूरज पूजा है मैं वही कलश वधाने जाती हूँ।

सूरज–पूजा, गीत-२

सूरज पूजण बहू नीसरी, भला भला सुगण मनाय ।
तू मत जाणे जच्चा मैं बड़ी जी,
राणी भाग बडो छै थारी सासू को, जिण जाया पूत सुलखणा ।
दोय दोय लाडू सोंठ का धण उठी मचकाय,
सूरज पजण बहू नीसरी ।

अर्थ

अच्छे अच्छे सुगन मना कर वह सूरज पूजने के लिए निकली । जच्चा तू मत समझना कि मैं बडी हू । राणी ! तेरी सासू का भाग बडा है, जिसने अच्छे लक्षण वाले पुत्र को जन्म दिया है । दो दो लड्डू सोठ के खाकर स्त्री उमगित होती हुई सूरज-पूजा के लिए निकली ।

बालक-जन्म के बाद जलवा अर्थात् जल पूजने का सस्कार भी होता है । इस अवसर पर मा के मस्तक पर छोटा कलश रक्खा जाता है और उसके साथ स्त्रिया गीत गाती हुई जल पूजने के लिए कुए या तालाब पर जाती हैं और मार्ग मे इस प्रकार गाती है—

(घ) जलवा का गीत

कौण चिणायो झालरो, कौण लगाई गज नीव ।
पूज सुहागण जच्चा झालरो ।
सुसर चिणायो झालरो, जेठजी लगाई गज नीव । पूज०
कौण की या कुल बहू, कौण की या धीय ।
सुसराजी की कुल बहू, सात पाचा की है धीय ।
भाई तो बहन सहोदरा, पिया की बडनार । पूज०
ओढ पहर जचा नीसरी, थाना गाजी के वजार ।
मांढो तो चूंढो कूलडो, गाढो भी लियां माय । पूज०
या कूलडो जब नीकले होकर जलवा माय,

कोथली को मूंडो सांकडो घुल रही रेशम डोर। पूज०
दे थारा डूम खवास ने सास ननद पहराय।
बहुए विवाई माता थें जायो सुलखणो पूत
पूज सुहागण जच्चा झालरो।

अर्थ

किसने कुए पर झालरा चुनवाया और किसने गहरी नीव लगवाई ? सुहागिन जच्चा झालरा पूज। सुसराजी ने झालरा चुनवाया और जेठजी ने गहरी नीव लगवाई। किसकी यह कुल बहू है और किसकी यह लडकी है ? सुसराजी की यह कुल बहू है और पाच सात घरो की (प्यारी) यह बेटी है। भाई-बहनों की सहोदरा और अपनी प्रियतम की मानी हुई स्त्री है। जच्चा थाना गाजी के बाजार मे पहिन-ओढकर निकली। सुन्दर चित्रित, कुल्लड के भीतर गाढा (सामग्री) है। कूलडा लेकर बच्चे की मा जलवा मे निकली किन्तु रुपये की थैली का मुंह सँकडा है और रेशम की डोरी बध रही है। सास-ननद ने वेश अपने डूम को दिया है। मा तुमने अच्छा लक्षण वाला पुत्र उत्पन्न किया जिससे इस बहू का विवाह हुआ। सुहागन जच्चा झालरा पूज।

जन्म के बाद बालक का जडूला अर्थात् केश-मुण्डन सस्कार होता है। यह सस्कार प्राय माताजी, बालाजी आदि देवी-देवता की मनोती के अनुसार सम्बन्धित स्थानक पर होता है। मनोती पूरी करने के पूर्व लडकी के बाल काटे जाते है और लडको के बाल रक्खे जाते हैं। इस अवसर पर सम्बन्धित देवी-देवता के गीत गाये जाते हैं। देवी-देवताओ के गीत आगे प्रसगानुसार दिये गये है।

(ड) यज्ञोपवीत

यज्ञोपवीत सस्कार से विद्याध्ययन का प्रारम्भ माना जाता है। इस अवसर पर गृह-शान्ति, हवन आदि धार्मिक क्रियाओ के बाद लडका गुरु के पास काशी जाने जा रिवाज पूरा करता है। कुछ कदम भागने पर लोग उसे पकड लाते हैं। जनेव से सम्बन्धित एक गीत इस प्रकार है —

बालो चाल्यो ए बहिन बनारस जी,
थांका दादासा जाबा नी देय, कुवर बाला यहीं पढोजी।
थांका पढवा ने देस्यां मैडी ओवरा जी,
थांका गुरुजी ने देस्यां चतर साथ,
कॅवर बाला यहीं पढ़ोजी।
थांका गुरुजी ने देस्यां दक्षणा धोवती जी,
थांका साथीडा ने देस्यां पचरंग पाग।
कंवर बाला यही पढोजी।

अर्थ

ओ बहिन ! प्यारा लडका बनारस पढने चला। उसके दादाजी जाने नहीं देते, प्यारे कुंवर यही पढो जी। तुम्हारे पढने के लिए हम मेडी और ओवरे देंगे। तुम्हारे गुरुजी को अच्छा साथ देंगे, प्यारे कुवर यही पढोजी। तुम्हारे गुरुजी को दक्षिणा और धोती देगे। तुम्हारे साथियो को पचरगी पाग देंगे। प्यारे कुंवर ! यहीं पढोजी।

(च) विवाह-सम्बन्धी लोकगीत

विवाह-सस्कार का मानव-जीवन मे विशेष महत्व होता है। इस संस्कार द्वारा दो व्यक्ति एक सूत्र मे बध कर अगम जीवन-पथ मे अग्रसर होते है। यह सस्कार हँसी-खुशी के वातावरण मे पूर्ण होता हैं। विवाह के अवसर पर कई प्रकार के लोकाचार होते है। सर्वप्रथम सगाई होती है जिसके अनसार आपस मे विवाह निश्चित किया जाता है, उसके पश्चात् मुहूर्त निश्चित किया जाता हैं, जिसमे गणेश-स्थापना की जाती है। इस अवसर पर विनायक गाया जाता है—

विनायक

पूरब दिशा मे सूर्य देवजी समरतजी,
हां जी देवा सहस किरण ले उगसी।
मालिक तुम बिन और नहीं आसी,
बेग पधारो गोरां का गणपतजी।

पच्छिम दिशा मे चांद देवा समरतजी।
हाँजी देवा नौलख तारा लासी। वेग पधारो॥
कैलाशपुरी में सदा शिवजी समरत।
हाँजी देवा डूंडियाँ नाड्या लारॉ लासी।
वेग पधारो राणी गोरॉ का गणपतजी।

अर्थ

पूर्व दिशा मे सूर्य देवता सामर्थ्यवान हैं। हाँ जी यह देवता हजार किरणो से उदय होगे। स्वामी तुम्हारे विना दूसरे कोई नही आवेंगे। गोरा के गणपतजी जल्दी पधारो। पश्चिम दिशा मे चाँद-देवता सामर्थ्यवान हैं। हा जी देव वे ९ लाख तारे साथ लावेंगे। कैलाशपुरी मे सदाशिव सामर्थ्यवान है, वे भूत-प्रेत साथ लावेंगे। रानी गोरा के गणपतजी जल्दी पधारिये।

विवाह के अवसर पर मामा की तरफ से मायरा अर्थात् वेशभूषा आती है, तव यह गीत गाया जाता है—

मायरा का गीत

वीरा रे चोवटे ने पेरायो, चौरासी सरायो,
मायरो पेराओ पहला म्हारे सेरिया में,
पाडोसी सरायो मायरो।
वीरा ओ पहली म्हारा सासूजी ने पेराओ,
सुसराजी सरायो मायरो।
वीरा ओ पहली म्हारी जेठाणी ने पेराओ,
जेठसा सरायो मायरो।
वीरा ओ पहली म्हारी दौराणी ने पेराओ,
देवर सा सरायो मायरो।
वीरा ओ पहली म्हारी नणदल नें पेराओ,
नणदोई सा सराओ मायरो।
वीरा ओ पहली म्हारी बहिनां ने पेराओ,

बन्दोई सा सरायो मायरो ।
बाई मल म्हारी बेन वांयड़ली पसार ।
बाई गरबी, गरबी, के थारे पूतड़लारो राज ?
के थारे धन को गरबो । बीरा ओ पुत्र परमेश्वर को माल,
धन को कई गरबो ?
बाई ए मल म्हारी बायडली पसार,
जामरण रो जायो अबे मिलियो ।

अर्थ

वीरा ओ ! मायरा पहिले चौहट्टे के लोगो को पहिनाओ । सारी चौरासी के लोगो ने इसकी सराहना की है । वीरा ओ ! मायरा पहिले मेरे पड़ौसी को पहिनाओ । पडौसी ने मायरे की सराहना की है । वीरा ओ ! पहिले मेरी सास को पहिनाओ । सुसराजी ने मायरे की सराहना की है । वीरा ओ ! पहिले मेरी जेठाणीजी को पहिनाओ । जेठजी ने मायरे की सराहना की है । वीरा ओ ! पहिले मेरी दौरानी को पहिनाओ । देवरजी ने मायरे की सराहना की है । वीरा ओ ! पहिले मेरी ननद को पहिनाओ । ननदोईजी ने मायरे की सराहना की है । वीरा ओ ! अब अपनी बहिन को पहिनाओ । बहनोईजी ने मायरे की सराहना की है । बाई ! तुम बाह फैला कर मिलो । बाई तुमको गर्व किसका है ? क्या तेरे पुत्रो का राज है अथवा तुझे धन का घमड है । भाई ओ ! पुत्र तो परमेश्वर का धन है और धन का तो क्या गर्व किया जाय ? बाई बाहें पसार कर मिलो । मा जाया भाई अब मिला है ।

विवाह के पूर्व दूल्हा सम्बन्धित व्यक्तियो के यहा आमन्त्रित किया जाता है । वहा से लौटते समय बिनोला सम्बन्धी गीत गाया जाता है—

बिनोलो

झिर-मिर झिर-मिर मेह्वो बरसे, मोतीड़ा झड़ लागा ।
म्हें थाने पूछू कुंवर लाड़ला, थारो बिनोलो कुण न्योत्यो ।
ईसर घर बहू गोरा, म्हारो बिनोलो उण न्योत्यो ।

सूरज घर बहू रोहणीं, म्हारो बिनोलो उण न्योत्यो ।
घर से तो लाडो पग-पग आयो, घुड़ले चढ़ पहुंचायो ।
थे चिर जीवो देवी देवता का जाया, भली ए जुगत पहुँचाया ।
लाम्बी सी डांडी को झबरक दिवलो, उपर लाल चंदोवो ।

अर्थ

झिर-मिर झिर-मिर मेह बरसता है । मोती झडते हैं । मै तुमको पूछती हूँ कि प्यारे कुंवर तुम्हारा बिनोला किसने न्यौता है ? ईशरजी के घर मे गोरा बहू है, मेरा बिनोला उन्होने न्योता हैं । सूरज के घर पर रोहनी बहू है । मेरा बिनोला उन्होने न्योता है । घर से प्यारा पैदल चल कर आया था, उसको घोडे पर पहुचाया गया है । देवी-देवता आप सभी चिर जीवो, आपने अच्छी तरह पहुँचाया है । लम्बी डाडी का तेज रोशनी वाला दीपक है और ऊपर लाल चदोवा है ।

इस अवसर पर कामण, कलश, पीठी, साकडी, निकासी, घोडचढी, तोरण, फेरा, कँवर कलेवा, जुआ जूई, विदाई, पडला, पैसारा आदि से सम्बन्धित लोकगीत गाये जाते हैं । कुछ गीत इस प्रकार है—

कस्तूरी

सोनारी डाड्या राज रूपारा चेला
थू झुकती तो तोल गाँधी कस्तूरी जी ।
कूणीजी तोलावे, राज कूणीजी मोलावे ।
कूणीजी जो तोले ओ कस्तूरी ?
मोतीलालजी मोलावे, राजन् छगनलालजी तोलावे ।
यो गांधीजी तोले ओ राजन् कस्तूरी जी ।

अर्थ

तुम्हारी तकडी मे सोने की डाडी है और चादी का पलडा है । गाधी ! तू कस्तूरी को झुकती हुई पूरी तोलना । कौन तुलाता है और कौन भाव करता है ?

कौन यह कस्तूरी तोलता है ? मोतीलाल जी भाव करते है और छगनलाल जी तुलवाते हैं। यह गाधी इस कस्तूरी को तोलता है ।

सेवरो

आज म्हारे दादाजी री पोल्या मालण ऊभी ओ राज ।
सुण सुण ए मालिड़ा री बेटी कई कई विक्री लाई ए ?
फूल मोगरो केल केवड़ो गूथी लाई ओ राज ।
आज म्हारे काकाजी री पोल्या मालण ऊभी ओ राज ।
सुण सुण ए मालण री बेटी कई कई विक्री लाई ए ?
फूल मोगरा केल केवड़ा सेवरड़ा गूथीं लाई ओ राज ।
आज म्हारे मामाजी री पोल्या मालण ऊभी ओ राज ।।
सुण सुण ए मालिड़ा री बेटी कई कई विक्री लाई ए ?
फूल मोगरो केल केवडो सेवरडो गूथी लाई ओ राज ।।
आज म्हारे मासाजी री पोल्या मालण ऊभी ओ राज ।
सुण सुण ए मालिडा री बेटी कई कई विक्री लाई ए ?
फूल मोगरो केल केवड़ो सेवरडो गूंथी लाई ओ राज ।।

अर्थ

आज मेरे दादाजी की पोल मे मालिन खडी है । सुन सुन ओ माली की बेटी ! तू क्या—क्या बिक्री लाई है ? मोगरे का फूल, केल केवडा और सेवरा गूथ लाई हूँ जी । आज मेरे काकाजी की पोल मे मालिन खडी है । सुन सुन ओ मालिन की बेटी तू क्या क्या बिक्री लाई है ? मोगरे का फूल, केल केवडा और सेवरा गूथ लाई हू । आज मेरे मासाजी की पोल मे मालिन खडी है । सुन सुन ओ मालिन की बेटी तू क्या क्या बिक्री लाई है ? फूल मोगरा, केल केवडा और सेवरा गूंथ लाई हू ।

घोड़ी

घोडी पग मोड़े झांझर बाजे ।
घोड़ी गई ओ जोसीड़ारी हाट, वारी जाऊँ ओ नारायणगढ़ रो सेवरो ।

छोडो छाडो दादाजी म्हारो सेवरो ।
छोडो छोड़ो काकाजी म्हारो सेवरो
म्हाने परणवा री आई ओ हूँस ।
घोडी पग मोड़े झांझर बाजे,
घोड़ी गई ओ बजाजाँ री हाट
वारी जाऊँ ओ नाराणगढ रो सेवरो ।
छोडो छोडो मामासा म्हारो सेवरो ।
म्हाने परणवा री आई ओ हूँस ।
घोडी पग मोड़े झांझर बाजे ।।
घोडी गई नणदोईजी री हाट, वारी जाऊँ ओ नाराणगढ़ रो सेवरो।
छोडो छोड़ो मासाजी म्हारो सेवरो ।
म्हाने परणवा री आई ओ हूँस।
घोड़ी पग मोड़े झाझर बाजे, वारी जाऊँ ओ नाराणगढ़ रो सेवरो ।

अर्थ

घोडी पैर मोडती है तो झाझर बजती है । घोडी जोसी की हाट मे गई है । वारी जाऊ ओ नारायणगढ का सेवरा । छोडो छोडो, मेरा सेवरा छोडो । मुझे विवाह करने की उमग हुई है । घोडी पैर मोडती है तो झाझर बजती है । घोडी बजाज की हाट पर गई । वारी जाऊं ओ नारायणगढ़ का सेवरा । छोडो छोडो मामाजी मेरा सेवरा, छोडो छोडो जीजाजी मेरा सेवरा । मुझे विवाह करने की उमग हुई है । घोडी पैर मोडती है तो झाझर बजती है । घोडी नणदोई की हाट पर गई । वारी जाऊ ओ नारायणगढ का सेवरा । मासाजी मेरा सेवरा छोडो । मुझे विवाह करने की उमङ्ग हुई है । घोडी पैर मोडती है तो झाझर बजती है । वारी जाऊ ओ नारायणगढ का सेवरा ।

फेरा

पहलो तो फेरो ए लाड़ी, बाबासा री प्यारी,
दूजो तो फेरो ए लाड़ी दादासा री प्यारी,
तीजो तो फेरो ए लाड़ी, काकासा री प्यारी,

चौथो तो फेरो ए लाड़ी, बीराजी री प्यारी,
पाँचवों तो फेरो ए लाडी, मामाजी री प्यारी,
छठो तो फेरो ए लाड़ी, मासाजी री प्यारी,
साँतवो तो फेरो ए लाडी, हुई छै पराई।

अर्थ

पहिला फेरा ओ लाडी बाबा साहब की प्यारी। दूसरा तो फेरा ओ लाडी दादा साहब की प्यारी। तीसरा तो फेरा ओ लाड़ी काका साहब की प्यारी। चौथा तो फेरा ओ लाडी भाई की प्यारी। पाचवा तो फेरा ओ लाडी मामाजी का प्यारो। छठा तो फेरा ओ लाडी मौसाजी की प्यारी। सातवा तो फेरा ओ लाडी दूसरो की हुई है।

पेसारा

आज तो सोना को सूरज ऊग्यो, ऊग्यो रे लाल, आज रे।
मोती रो तोरण जगमग्यों रेलाल, आज रे,
बाबाजी रे हिवडे हरख घणो रे लाल, आज रे॥
दादाजी रे हिवड़े हरख घणो रे लाल आज रे,
आज रे दादी मायड़ गावे मगल रे लाल।
आज रे काकाजी रे हिवड़े हरख घणो रे लाल॥
आज रे मामाजी रे हिवड़े हरख घणो रे लाल॥
आज रे काकी मामी गावे रे मंगल गान,
आज रे नानीजी रे हिवड़े हरख घणो रे लाल।
आज रे नानी गावे मगल रे गान,
आज रे जीजाजी रे हिवड़े हरख घणो रे लाल।
आज रे जीजी गावे मगल गान।

अर्थ

आज तो सोने का सूरज ऊगा। मोती का तोरण आज जगमगाया। बाबाजी के हृदय मे आज बहुत हर्ष है। दादाजी के हृदय मे आज बहुत हर्ष है।

आज दादी मा मगल गीत गाती है। आज काकाजी के हृदय मे बहुत हर्ष है। आज मामाजी के हृदय मे बहुन हर्ष है। आज काकी मामी मंगल गीत गाती है। आज नानाजी के हृदय मे बहुत हर्ष है। आज नानी मंगल गीत गाती है। आज जीजाजी के हृदय मे बहुत हर्ष है। आज जीजी मगल गीत गाती है।

बनी

बनी थारी चोटी कणी रे गूथी ?
म्हारी चोटी गूथी ओ म्हारी माता सुजान।
म्हारी चोटी ओ गूथी म्हारी काक्यां सुजान।
थारी माता रो चाकर, ए थारी काक्यां रो चाकर ए।
बनी थारी चोटी कणी रे गूँथी ?
म्हारी चोटी गूथी ओ म्हारी माम्यां सुजान।
म्हारी चोटी ओ गूंथी ओ म्हारी बेनां सुजान।
थारी चोटी में कामण ए बनी।
थारी चोटी कणी रे गूथी ?
म्हारी चोटी गूथी ओ म्हारी भूवा सुजान।
म्हारी चोटी गूथी ओ म्हारी मास्याँ सुजान।
थारी चोटी मे कामण ए बनी।
थारी चोटी कणी रे गूथी ?

अर्थ

बनी ! तेरी चोटी किसने गूथी है ? मेरी चोटी गूथी है जी मेरी सुजान माता ने, मेरी चोटी गूथी हैं जी मेरी सुजान काकीओ ने। तुम्हारी मा का चाकर। तुम्हारी काकीओ के चाकर जी हम। बनी ! तुम्हारी चोटी किसने गूथी है ? मेरी चोटी गूथी जी मेरी सुजान मामीओ ने। मेरी चोटी गूथी जो मेरी सुजान बहिनो ने। बनी ! तेरी चोटी मे जादू है। तेरी चोटी किसने गूथी है ? मेरी चोटी गूंथी है मेरी सुजान भुवा ने। मेरी चोटी गूथी है मेरी सुजान मौसी ने। बनी ! तरी चोटी मे जादू है। तेरी चोटी किसने गूथी है ?

(आ) देवी-देवता सम्बन्धी गीत

राजस्थानी धार्मिक गीतो मे देवी-देवता सम्बन्धी गीतो का महत्वपूर्ण स्थान है। देवी-देवताओं मे गणेश, विष्णु, शिव, सूर्य, गगा, तुलसी, माता, भैरव आदि पौराणिक देवी-देवताओ के गीत प्रचुर मात्रा मे मिलते हैं। इन गीतो मे सम्बन्धित देवताओ के सुप्रसिद्ध स्थानको पर पूजा-विधि और सम्बन्धित लीलाओ का विस्तृत वर्णन मिलता है। देवी-देवताओ के विभिन्न चरित्रो का भी यथारूप चित्रण इन गीतो मे किया गया हैं।

राम और कृष्ण सम्बन्धी लीलाओ के राजस्थानी लोकगीत भी बहुत प्रचलित हैं। गीतो मे राम, सीता, लक्ष्मण आदि के उज्ज्वल चरित्र वर्णित किये गये हैं। राजस्थान मे रामलीला सम्बन्धित अभिनय-मडलियो की सुविधानुसार वर्ष मे कभी भी आयोजित हो सकती है और इनमे राम-चरित्र सम्बन्धी लोकगीत विशेष शैली मे गाये जाते हैं।

कृष्ण सम्बन्धी लोकगीतो मे मुख्यत कृष्ण, राधा और गोपियो का प्रेम-पक्ष निरूपित किया गया है। कृष्ण की विविध लीलाओ के गीत भी मिलते है।

राजस्थानी लोक-देवताओ मे पाबूजी, गोगाजी, रामदेवजी, कल्याणजी आदि मुख्य हैं। इनके चरित्र राजस्थान मे बडे चाव से गाये जाते हैं। लोकगीतो मे उपर्युक्त देवी-देवताओ के ऐतिहासिक चरित्र बहुत मार्मिक रूप मे चित्रित किये गये हैं। वास्तव मे उपर्युक्त ऐतिहासिक चरित्र अपने त्याग, वीरता और परोपकारिता से राजस्थान मे देवी-देवताओ की तरह से पूजे जाते है।

राजस्थान मे भजन-मडलिया कई भक्ति-सम्बन्धी गीत गाती है, जिन्हे हरजस कहा जाता है। हरजस गीतो की संख्या बहुत अधिक है और इनमे बडी ही विनम्रता से आत्मनिवेदन किया जाता है। इसी प्रकार राजस्थान मे भोपे भी रावणहत्थे, मजीरे, इकतारे आदि वाद्यो की सहायता से देवी-देवताओ के गीत गाकर जनता का मनोरजन के साथ मानसिक परिष्कार करते रहते है। कई साधु भी राजस्थानी गीत गाकर जनता मे धार्मिक प्रवृत्तियो को प्रेरित करते हैं।

नीचे देवी-देवताओ सम्बन्धी कुछ गीत दिये जाते हैं—

भेरूजी

भैरूजी मेवाड़ बीचाल अन्तरसीर सो गाम,
अन्तरसर की गलियां मे कालुडे रोल मचाई ।
मतवाला भैरू कासी का वासी आज मुसरमान ध्यावैं,
मालण लागी, तेलण लागी, लागी लाल लुहारी,
उपरोडा के डाकता या लटको भरे कलाली ।
वणियाणी के रगरंगीलो वड़ा गुलगुला ल्यावै ।
वामणी के सदा रंगीलो, गहरा मगल गावै ।
जाटण को लागै मतवाला, काचो दूदो पावे ।
रागडी के सदा रगीलो, मद का प्याला पावे ।
मतवाला भैरू कासी का वासी ।

अर्थ

भैरूजी मेवाड़ के वीच मे अन्तरसार सा गाव मे है। अन्तरसर की गलियो में कालूडे ने मस्ती की है, मतवाले भैरू, काशी के वासी, आज तुम्हारा मुसलमान भी ध्यान करते हैं। मालण, तेलण और लुहारी तुम्हारी मनुहार करती है और तुम्हारे ऊपर कलाली भी लटका करती है । वनियानी के लिये तू वडा रगीला है। वह खूब मगल गाती है। जाटणी के लिए तू मतवाला लगता है। वह तुझे कच्चा दूध पिलाती है और राघडी राजपूतनी के लिये तू सदा रगीला है जो तुझे मद का प्याला पिलाती हे। मतवाले भैरू काशी के वासी हैं ।

गगाजी

सांपड आया, भजन कर आया तो लीनो छै हरिनाम
प्रयाग जी मे सापड आया ।
चांवल राधूंला, हरि सॉपड आया,
तो हरिया मूगा की दाल, धाराजी में सांपड आया ।
घी वरताऊंली वावड्यां, हरि सॉपड़ आया

तो ढब से परूसू ली खांड, धाराजी में सांपड़ आया ।
जीमत निरखू ली आ गली, हरि सांपड आया.
बीजा तो पुर को बीजणो, हरि सांपड आया ।
तो गढ़ मुथराजी को छै थाल, धाराजी में सांपड़ आया
ओछा तो पागा री ढोलणी, हरि सांपड आया ।
तो उलट पुलट को छै सौड, धाराजी में सापड आया ।

अर्थ

स्नान कर आये, भजन कर आये, तो लिया है हरि का नाम, प्रयागजी मे स्नान कर आये । तुम्हारे लिए उजले चावल बनाऊ गी । हरि जी स्नान कर आये तो हरे मू गो की दाल बनाऊ गी । धाराजी मे स्नान कर आये, तो ऊपर घी और चतुराई से शक्कर परोसू'गी । धाराजी मे स्नान कर आये । जीमते समय अंगुली देखू गी । विजयपुर की पखी करू गी । गढ मथुराजी के थाल हैं, धाराजी में स्नान कर आये । छोटे पायो की ढोलणी खाट है तो उलट-पुलट की सोड हैं । धाराजी में स्नान कर आये ।

भोमिया

सरवर आवे, भोमिया सरवर जाय, गुडला डकावे सरवरिया पाल ।
तीखा सा नैणा रो भोम्यो प्यारो लागे ।
जुगल म्हारा दिवला जुगल थारी बाट ।
काये को दिवलो, काये री बात ।
काये रो घीरत बले सारी रात ।
सोनारो दिवलो रेशम री बात,
सुरीली रो घीरत बले सारी रात ।
भर सुवागण जोयो चौदस की रात,
तीखासा नैणा रा भोम्या प्यारा लागो राज ।

अर्थ

भोमिया सरोवर आता है, सरोवर जाता है। सरोवर की पाल पर घोड़ा कुदाता है।

तीखे नयनो का भोमिया प्यारा लगता है। जुगल मेरा दीपक और जुगल मेरी बत्ती। किसका दीपक है और किसकी बात है? किसका घी है सो सारी रात भर जलता है? सोने का दीपक है और रेशम की बत्ती है और सुरीली का घी सारी रात जलता है।

सुहागन ने दीपक को चौदस की रात जलाया है। तीखे नयनो का भोमिया प्यारा लगता है।

रामदेवजी

कोठे तो वाज्या ओ अजमलजी रा छावा बाजिया।
वारी जाऊँ, कोठे तो घुर्‌या छै निसाण।
आज अजमलजी रो छावो धोकस्याँ,
रुणीचे तो वाज्या ओ, अजमलजी रा छावा बाजिया।
जाती तो आवे ओ अजमलजी रा छावा दूर का।
वारी जाऊँ साँवलिया मोट्यार,
जातरा आवे तो अजमलजी रा छावा कुल वऊ,
वारी जाऊँ गोद जडूला जी पूत।
चढ़ै चढावे थारे चूरमो और चोटूयाला नारेल।
वारी जाऊँ ज्याँरी थे पूरो आस।

अर्थ

कहा अजमलजी के पुत्र कहे गये? वारी जाऊ, कहाँ नक्कारे बजते हैं? आज अजमलजी के पुत्र के आगे धोक देंगे। रुणीचे के हैं। अजमलजी के पुत्र हैं। अजमलजी के पुत्र के लिये दूर दूर के यात्री आते हैं। सावलिया

मोट्यार ! वारी जाती हूं। कुल बऊ जात के लिए आती है। वारी जाऊं, उनकी गोद मे पुत्र है। तुम्हारे चूरमा चढता है और चोटी वाला नारियल चढता हैं, जिनकी तुम आशा पूरी करते हो, वारी जाऊं।

तेजाजी

कल में तो दोउ फुलड़ा बडा जी, एक सूरज दूजो चॉद हो।
वा सकराओ तेजाजी थे बडा जी,
सूरज री किरण तपे जी, चन्दा री निरमल रात हो।
इन्दर तो बरसावे जी, धरती में निपजैला धान हो.
मायड जण जनम दीना, बाप लडाया छै लाड ओ।

अर्थ

कलजुग मे दो फूल बडे है। एक सूरज और दूसरा चाद। वासुकी राव तेजाजी तुम बडे हो। सूरज की किरणें तपती है और चाद को निर्मल रात होती है। इन्द्र बरसेगा और धरती मे धान उत्पन्न होगे। जिस माँ ने जन्म दिया और जिस बाप ने प्यार किया, उसको धन्य है।

(इ) व्रत सम्बन्धी लोकगीत

राजस्थानी व्रतो मे गणगौर, नवरात्र, रामनवमी, गंगादशमी, वन सोमवार, तीज, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी भैय्या दूज, कार्तिक पूर्णिमा आदि के व्रत विशेष उल्लेखनीय हैं। प्रत्येक भारतीय महीने की एकादशी, पूर्णिमा और अमावस्या को, साथ ही अपनी श्रद्धा के अनुसार सोमवार, बुधवार आदि को भी कई स्त्री-पुरुष व्रत रखते हैं। वैशाख, श्रावण, कार्तिक और अधिक मास भी विशेष व्रत द्वारा व्यतीत किये जाते है।

इन गीतो मे सम्बन्धित देवी-देवताओ के गीत और व्रतो की महत्ता सम्बन्धी गीत गाये जाते हैं। कुछ गीत इस प्रकार है '—

(क) गणगोर

गोर ये गणगोर माता खोल ए किवाड़ी,
बायर ऊबी थानै पूजण वाली ।
पूजो ये पूजन्ता वाली, कांई कांई मांगो ?
कान कँवर सो वीरो मांगा, राई सी भौजाई ।
जमवर जामी बाबल मांगा, राता देई मायड़ ।
बड़ो दुमालिक काको मांगा, चूड़ला वाली काकी ।
फूस उडावण फूफो मांगा, कूड़ो धोवण भूवा ।
काजल्यो बहनोई माँगा, सदा सुहागण बहनां ।

अर्थ

गोर ए गणगोर माता ! किवाड खोल । बाहर तुम्हारी पूजा करने वाली खडी है । पूजो ओ पूजने वाली तुम क्या क्या माँगती हो ? कानकुवर सा भाई मागती हैं, राई सी भौजाई माँगती हैं । श्रेष्ठ स्वामी जैसा पिता मागती है, राता देई जैसी माँ मागती हैं । श्रीसम्पन्न काका मांगती हैं, चूडी वाली सुहागन काकी मागती है । फूस उडाने वाला कमजोर फूफा मागती हैं, कूडा धोने वाली भूआ मागती हैं । काजल वाला बहनोई मागती हैं और सदा सुहागन बहिन माँगती हैं ।

(ख) चौथ

थे तो चोथ मनाल्यो जी,
थारे धन लछमी गोपाल, सकडरी राणी चौथ मनाल्यो जी ।
सोने की घडाऊं मेरी माय, रूपेरी घड़ाऊं मेरी माय,
तनै ये पुवाऊं भवानी, पीला पाट में,
म्हारे सेठ निवाज मेरी माय सेठाणी,
अभचल राखो चूडलो ।

अर्थ

तुम तो चौथ मनालो जी ! तुम्हारे धन और बाल-बच्चा होगा । सकड की रानी, चौथ मनालो जी । मेरी मा सोने की बनवा लूगी । चादी की बनवा

लूंगी और देवी तुझे पीले पाट मे पिरोवा लूंगी। मेरा स्वामी पालनकर्त्ता सेठ है और मेरी मा सेठानी है। मेरे चूडले को अविचल रखना।

जोगीडा गीत

दशरथ के घर जनमिया, सेविया नारायण जी
सेर सोनो पहिरती, सेर सोनो तोलती।
खावती फल-फूल जीवड़ा जाग रे धंधारती।
सेर सोनो तोलती, फूलां री माला पेरती,
गेल हाले झूठ बोले कूड़ काया खाय,
कूड को फकीर बणियो, झूठ को लेख बणियो,
धरावता गल् जाय, जीवडा जाग रे धंधारती।
बोलणा अहकार से बोलो नही एकण बार।
रावणिया थारो राज जाय, जाय रे लका सोवनी।
बनड़ा में आव एकलो बनड़ा को प्राणी एकलो।
दूखे जिण के पीड़, जीवडा जाग रे धंधारती।
हसा ले नी गुरु को नाम,
सूरत सूती तुरत जागे हसा पहरादार॥

अर्थ

दशरथ के घर उत्पन्न हुए और नारायण की सेवा की। सेर सोना पहिनती, सेर सोना तोलती। फल-फूल खाती। धन्धे मे पडे हुए प्राणी जाग रे। सेर सोना तोलती। फूल की माला पहिनती। मारग चलते झूठ बोले। खराब खाना खावे। कूडे का फकीर बना। झूठ का लेख लिखा और अपने गले को फसाता चलता है। धन्धे मे पडे हुए प्राणी जाग रे। घमड की बोली एक बार भी नही बोलना। रावण तेरा राज्य चला जावे और तेरी सोने की लका भी चली जावे। वन का प्राणी अकेला है और अकेला ही वन मे आता है। दुखता है उसको पीड होती है। धन्धे मे पडे हुए प्राणी जाग रे। प्राणी गुरु का नाम ले जिससे भला होवे। सुरत तुरन्त जाग जावे। हंस पहरेदार है।

(ई) रातीजगा सम्बन्धी लोकगीत

परिवार मे किसी के बीमार होने पर, पुत्री के विवाह के पूर्व, पुत्र के विवाह कर लौटने पर और किसी धार्मिक पर्व के अवसर पर राजस्थान मे "रातीजगा" किया जाता है। इस अवसर पर रात भर पूर्वजो की शूरवीरता के और देवी-देवताओ के गीत गाये जाते हैं। रातीजगा मे सबसे पहिले दीपक का गीत गाया जाता है, यह इस प्रकार है—

कुणीजी रे दींवला मेली रे बाट,
तो कुणींजी री राणी घी भरे।
जागो म्हारा दीवला आखी जो रात,
तो आज म्हारा पूरवजां रो रातीजगो।
रुकमाबाई मेली रै बाट,
तो मगनीराम जीं री राणी घी भरे।
बलजे रे दीवला आखी जो रात,
तो आज म्हारा पूरवजा रो रातीजगो।

अर्थ

किसने दीपक मे वत्ती रक्खी और किसकी रानी दीपक मे घी भरती है ? मेरे दीपक ! सारी रात जलना, क्योकि आज मेरे पूर्वजो का रातीजगा है। रुक्माबाई ने दीपक मे वत्ती रखी है और मगनीरामजी की रानी घी पूरती हैं। दीपक ! सारी रात जलना, क्योकि आज मेरे पूवजो का रातीजगा है।

इसी प्रकार परिवार की बहिन-बेटियो और विवाहित पुरुषो के नाम लेकर गीत पूरा किया जाता है।

रातीजगा मे पूर्वजो का विशेष रूप मे स्मरण किया जाता है, क्योकि उनका आगमन ऐश्वर्यवर्द्धक माना जाता है।

निम्न गीत पूर्वजो के स्वागत मे गाया जाता है—

पूरवज आया म्हारी अलियां-गलियां,
फूल बिखेरूँ चम्पा कलियां।

पूरवज भला ओ पधारिया,
फूल बिखेरूँ चम्पा कलियाँ ।
पूरवज आया म्हारे चूले परेडे,
तो काचा दूध उफणाया । पूरवज भला०
पूरवज आया म्हारी गाया रे ठाणे,
गायां धोला धोली रे जाया । पूरवज भला०
पूरवज आया म्हारे खेत खले,
तो अन धन लछमी आई । पूरवज भला०
पूरवज आया म्हारी बऊआँ रे ओवरे,
तो बऊआँ कु वर जाया । पूरवज भला०

अर्थ

पूरवज मेरी घर-गली मे आये । आपके स्वागत मे चम्पा कली बिखेरू । पूरवज आप अच्छे आये । आपके स्वागत मे चम्पा कली विखेरू ।

पूरवज मेरी रसोई और जल-घर मे आये तो कच्चे दूध को उफणाया । पूरवज मेरी गायो के स्थान पर आये तो बछडे-बछडी हुए । पूरवज मेरे खेत-खलिहान मे आये तो अन्न, धन और लक्ष्मी आई ।

पूरवज मेरी बहुओ के कमरे मे आये तो बहुओ के पुत्र हुए । पूरवज आप अच्छे आये ।

पूर्वजो की शूरवीरता से सम्बन्धित गीत भी गाये जाते है । इन लोकगीतो मे युद्ध का और वीरतापूर्वक लड-मरने का मार्मिक चित्रण मिलता है जिसका अन्यत्र अभाव है । रण मे भूझ मरने की अनोखी छटा देखिये—

शूरा तो रण में भूझिया ।
हथायां बैठा ओ दादाजी बरज रिया
बेटा मती जाओ रे राड । शूरा ओ०
जाया ओछी ऊमर, बाली वेश में,
शूरा कूं कर ढाबोला तरवार । शूरा ओ०
दादाजी पाछा फरां तो म्हारो कुल लाजे,

लाजे म्हारी माताबाई रो थान । शूरा ओ०
शूरा भाला राल्या जी बालू रेत मे,
शूरा बरछ्या री बाजी घमरोल । शूरा ओ०
शूरा गोडी वाली जी जीणी रेत मे
शूरा नम नम बाई तरवार । शूरा ओ०
शूरा झाड्यां झाड्यां वेगी देवल्यां ।
शूरा मेला-मेला वेगी राड । शूरा ओ०
शूरा शीष पड्या ओ धड़ तडफिया,
शूरा रगता रा मच्या खोखाल ।
शूरा ओ रण में भूझिया ।

अर्थ

शूरवीर ओ ! युद्ध मे भूझ गये, द्वार के बाहर चबूतरे पर बैठे हुए दादाजी मना करते रहे—बेटा युद्ध मे मत जाओ । बेटा तुम्हारी थोडी ऊमर है । तुम बालक हो, वीरवर ! तलवार कैसे पकडोगे ? दादाजी पीछे लौटें तो मेरा कुल लज्जित हो जावे और लज्जित हो जावे मेरी माँ की कोख ! शूरा ओ ! रेतोले मैदान मे घुटने मोड कर और झुक झुक कर तलवार चलाई । शूरा ओ ! ऐसी वीरता बताई कि शत्रुओ के झाडियो-झाडियो मे स्मारक बन गये और महल-महल मे स्त्रियाँ विधवा हो गई । शूरा ओ ! तुम्हारा शीश कट कर गिरा और धड तडफने लगा और सर्वत्र खून ही खून हो गया । शूर ओ ! युद्ध मे भूझ गये ।

सन्तान-प्राप्ति की आशा से प्रेरित होकर भी 'रातीजगा' में कई गीत गाये जाते हैं । ऐसे गीतो मे पूर्वजो द्वारा परिवार मे पुन बालक रूप मे अवतरित होने की कल्पना की जाती है और उनकी बाल-क्रीडाएँ वखानी जाती हैं—

धर्म द्वारे ओ खड़ी पीपली जी,
जठे पूरवज करे रे वचार ।
तो कुणीजी रे जास्या पामणा जी,
जास्या जास्या मोतीरामजी रे पेट ।
तो वॉरी वहु लाड्या री कूखॉ उपजा जी ।

वारी सवागण पावे आखड़ियो दूध,
तो हालग्ये हलरावसी जी।
आवती जावतीं देवे रे मचोला चार,
तो हीन्दो म्हारा पूरवज पालणे जी।
पाले पोसे (परिवार के प्रमुख व्यक्ति का नाम) जी,
सपूत तो खेलो म्हारा पूरवज आगणे जी।

प्रात काल होने पर रातीजगा के अ त मे 'कूकडा' गाया जाता है—

म्हारा राज दीवाण रा कूकडा बोल रे।
परबात बोल, बोल रे नसीत बोल,
बोल रे पसीत बोल, कू कू कू,
थू तो मागीलालजी ने वायर काढ रे,
थू तो खूणे ढोलियो ढलाव रे,
थू तो नसीत बोल बोल रे,
थू तो पसीत बोल बोल रे,
म्हारा राज दीवाण रा कूकडा बोल रे,
परबात बोल कू कू कू।

मेरे दीवाण के मुर्गे बोल। प्रात काल होगया है, तू निश्चित होकर बोल। तू घर के पीछे से बोल कू कू कू। तू मागीलालजी को कमरे से बाहर निकाल और तू ढोलिया अर्थात् खाट को कोने मे खडी करवा। मेरे दीवाण के कूकडे तू निश्चित होकर बोल, घर के पीछे से बोल। प्रात काल हो गया कू कू कू।

इस प्रकार सारी रात गीत गाते हुए व्यतीत की जाती है और प्रात काल स्त्रियाँ विदाई लेकर अपने-अपने घर जाती हैं।

(२) राजस्थानी मनोरंजनात्मक लोकगीत

राजस्थान के विविध त्यौहारो मे गणगोर, तीज, दीपावली और होली मुख्य है। त्यौहारो मे राग-रग के साथ लोकगीतो का पूरा योग रहता है। राज-

स्थानी क्रीडाओ मे शिकार, फाग, झूला, नौका-बिहार आदि प्रमुख हैं जिनके विषय मे कई लोकगीत मिलते हैं। दाम्पत्य जीवन की सरसता को भी लोकगीतो मे ही व्यक्त किया गया है। खेतो मे काम करते हुए कृषक-मजदूर, "हाली" ठण्डी रातो मे अमृत-सागर से पानी खीच कर अपने खेतो को पिलाने वाले माली "वारिये", और भयावनी अधेरी रात मे अपनी लम्बी दूभर यात्रा पूरी करने वाले "कतारिये" लोकगीतो द्वारा अपने कठिन कार्यो को सरस बनाते हैं।

राजस्थानी मनोरजन सम्बन्धी लोकगीतो मे राजस्थान की छोटी बडी ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक आदि विषयो से सम्बन्धित लोककथाओ को भी सगीतमय वनाया गया हैं। ऐसी गीत-कथाओ का साहित्य-क्षेत्र मे विशेष महत्व है जिनमे डूगजी जवारजी रो गीत, नागजी, वगडावत, महाभारत, जीरण-मातारो गीत, पावूजीरा पवाडा, तेजाजी, गूजरी, रेवा मालण आदि विशेष उल्लेखनीय है। इन गीत-कथाओ मे राजस्थानी सस्कृति का सजीव चित्रण किया गया हैं और इनमे श्रोताओ अथवा पाठको को महाकाव्य की सरसता मिलती है।

(अ) गणगोर के राजस्थानी लोकगीत

वर्ष के प्रारम्भ मे ही राजस्थानियो द्वारा गणगोर का त्यौहार विशेष आयोजन और उत्साह के साथ सम्पन्न किया जाता है। गणगोर को धार्मिक महत्व भी दिया गया है, किन्तु इस त्यौहार का अधिकाश आयोजन मनोरजन-पूर्ण होता है। गणगोर के अवसर पर घूमर नृत्य और नौका-विहार की विशेषता रहती है। नवविवाहित व्यक्ति गौने के लिए ससुराल पहुँचते है। परिवार के सभी सदस्य एक जगह एकत्रित होते है और राग-रग मे समय व्यतीत करते हैं। इस अवसर पर महिलायें गणगोर सम्बन्धी व्रत पूरा करती हैं और फिर नवीन रग-विरगे वस्त्रो और आभूषणो से सज्जित होकर गणगोर के साथ गीत गाती हुई नदी अथवा झील के किनारे जाती हैं। यहा पर नाचती और गाती हं। गणगोर सम्बन्धी कुछ गीत इस प्रकार हैं—

वधी कमर कस खोल दो जी सायबा,
छोगो विराजे लैर्‌या, पाग मे जी सायबा।
सायबा सायबा, म्हें करां जी,

सायबा सोकड बाई रा सेण सा ।
बधी कमर कस खोल दो जी सायबा ।
म्हें तो बुलाया होल्या पामणाजी सायबा ।
आया गणगोर्यां री तीजरा ।
बधी कमर कस खोल दो जी सायबा ।
छोगो बिराजे लेर्यां पाग में जी सायबा ।
म्हें तो जाण्यॉ छे राजन फूल गुलाब रा,
नीसर गया करेण रा फूल रा,
बधी कमर कस खोल दो जी सायबा,
छोगो बिराजे लेर्यां पाग मे जी सायबा ।

प्रियतम ! कमर की बधी हुई कस खोल दो जी । प्रियतम आपकी लहरिया पाग मे तुर्रा शोभायमान है । सायबा जी ! हम सायबा सायबा करती हैं और आप सोकड से मिले रहते है । प्रियतम हमने तो आपको होली पर मेहमान बुलाया और आप तीज पर आये, प्रियतम ! कमर की बंधी हुई कस खोल दो जी । आपकी लहरिया पाग मे तुर्रा शोभायमान है । राजन् ! हमने तो आपको गुलाब का फूल समझा और आप करेण के फूल निकले । प्रियतम ! कमर की बंधी हुई कस खोल दो जी । आपकी लहरिया पाग मे तुर्रा शोभायमान है ।

(२)

म्हारा हंज्या मारू याई रेवो जी ।
म्हारी लाल नणद रा बीर,
म्हाने कूण खेलावे गणगोर ?
म्हारा हंज्मा मारू याई रेवो जी ।
याई रेवो पातलिया सेण यांई रेवो जी,
आपने रस्ता में मली गणगोर,
म्हारा हंज्या मारू याई रेवो जी ।

मेरे प्यारे प्रियतम ! यही रहो । मेरो लाल नणद के वीर ! हमको कौन गणगोर खेलावे ? मेरे प्यारे प्रियतम ! यही रहो । पातलिया साथी ! यही रहो । आपको मार्ग मे गणगोर मिली । प्यारे यही रहो !

(३)

म्हारा राजा आज तो गुलाबी गणगोर छे,
म्हारा राजा आज तो वसन्ती गणगोर छे ।
माथा ने मेमद अजब बण्यो छे,
रखड़ी पर मोर छे,
म्हारा राजा आज तो गुलाबी गणगोर छे ॥
मुखड़ा ने वेसर अजब बण्यो छे,
टीली पर मोर छे ।
म्हारा राजा आज तो गुलाबी गणगोर छे ॥

अर्थ

मेरे प्यारे राजा ! आज तो गुलाबी गणगोर है । मेरे राजा ! आज तो वसन्ती गणगोर है । सर पर मेमद अनोखा बना हुआ है । रखडी पर मोर है । मेरे राजा ! आज तो गुलाबी गणगोर है । मुँह पर वेसर अनोखा बना हुआ है । बिन्दी पर मोर है । मेरे राजा ! आज तो गुलाबी गणगोर है ।

(आ) तीज के लोकगीत

श्रावण मे तीज का त्यौहार प्रमुख है । तीज के अवसर पर परिवार के सभी प्रियजन एकत्रित होते है । यह राजस्थानियो का परम प्रिय त्यौहार है । दूर-दूर तक गये हुए व्यक्ति भी अपने घर अथवा ससुराल मे जहा भी उनकी पत्नी होती है, पहुँचते है । तीज के अवसर पर "लहरिया" नामक वस्त्रो का विशेष व्यवहार किया जाता है । रग-विरगी बँधेज की ओढनियाँ, साडियाँ, साफे और पगडिया पहना जाती है । इन्द्र-धनुषी भांत को "धनक", लाल-श्वेत धारी

को राजाशाही और पचरगी त्रिकोणात्मक धारीवाला भूपालशाही और काली-सफेद धारी वाले काजली लहरिये कहे जाते हैं।

तीज के अवसर पर भूले का विशेष महत्व होता है। बागो मे स्त्रियाँ गीत गाती हुई और प्रियमिलन की उमंग मे मस्त होकर भूलती है। तीज के अवसर पर स्त्रिया अपने परदेश मे गये हुए प्रियतम के आगमन की उत्सुकता-पूर्वक प्रतीक्षा करती है। विवाहित लडकिया भी पीहर जाना चाहती हैं। भाई अवश्य ही अपनी बहिन को लेने जाते है। तीज से सम्बन्धित कुछ गीत इस प्रकार है—

तीज सुरयां घर आव।
मफल आपरी नोकरी जी म्हारा राज,
तीज सुरया घर आव।
कूण दिसा आपरी नोकरीजी म्हारा राज,
कूण दिसा नालू बाट, तीज सुरयां०
उगेणी दिसा आपरी नौकरी जी म्हारा राज,
आथूणी दिशा नालू बाट, तीज सुरयां०
पाँच रीप्यारी आपरी नौकरी जी म्हारा राज,
लाख मोहर री तीज, तीज सुरया०

अर्थ

तीज सुनकर घर आइये। मेरे राजा ! नौकरी को अभी रहने दीजिये और तीज सुनकर घर आइये। किस दिशा मे आपकी नौकरी है ? मेरे राजा ! मै किस दिशा मे आपकी राह देखती रहूँ ? पूर्व मे आपकी नौकरी है मेरे राजा ! और मैं पश्चिम मे आपकी राह देख रही हूँ। पाच रुपयो की आपकी नौकरी है और मेरे राजा लाख मुहर की यह तीज है इसलिये तीज सुन कर घर आइये।

फिर यह विरहणी आम पर बैठी हुई है कोयलड़ी को भी दो "सब्द" सुनाती है—

आँबे जी बैठी कोयलड़ी,
दोय सबद सुणावे जी।
जाय ढोलाजी ने यूं कहिजे—
पैली तीज पधार।

खरची खदाऊ म्हारा बाप री ।
पैली तीज पधार ।
खरची घणी है म्हारी मारुणी,
नी है राणाजी री सीख,
घुडलो खधाऊ म्हारा बापरो,
पैली तीज पधार ॥
घोड़ला घणा है म्हारी मारुणी,
नहीं दे राणाजी म्हाने सीख,
आडी तो गोरीं । नदिया फिर रही,
बैरण हुई है बनास ।
कीर रा बेटा म्हारा भायला,
वीरा म्हारा । ढोलाजी ने पार उतार ।
कांई तो दस्यो रीझ री,
कांई तो देस्यो म्हाने इनाम ।
कडियां री कटारीं दस्या हो वीरा म्हारा,
सेज चढियां रो सरपाव ।

अर्थ

आम पर बैठी हुई कोयल को दो शब्द सुनाती है, जाकर प्रियतम से कहना कि पहली तीज पर घर आवें । अपने बाप का खर्चा भेजती हूँ । पहली तीज पर ही आ जावे । मेरी मारुणी ! खर्चा तो मेरे पास भी बहुत है किन्तु राणाजी की सीख नही है । अपने बाप का घोडा भेजती हूँ । पहली तीज पर ही पधारिये । मेरी मारुणी ! घोडे मेरे पास भी बहुत हैं । किन्तु राणाजी हमको सीख नही देते है । फिर मेरी गोरी । रास्ते मे नदिया बह रही हैं । बनास नदी तो बैरिन ही हो गई है । कीर (घड़नावो से नदी पार कराने वाली जाति) के बेटे मेरे लाडले भाई होते हो, मेरे प्रियतम को पार उतार देना । इस खुशी का क्या दोगो और हमको क्या पुरस्कार मिलेगा ? मेरे भाई ! तुमको कडी वाली या कमर मे बाधने की कटार देंगे और सेज चढ़ने का सरपाव देंगे ।

ज्यो-ज्यो तीज समीप आती है विवाहित लड़किया पीहर जाने को आकुल रहती हैं, कौए उडाती हुई अपने भाई की प्रतीक्षा करती तथा कहती है—

लाग्यो लाग्यो मा, सावण रो मास,
तीज तिवारां मां, बावड़ी जे ।
और सहेली मां पीवरिये जाय,
हूँ तो तरसू मा सासरे जे ।
उडज्या उड़ज्या म्हारा नीबडली रा काग,
वीरो आवै मेरा पावणो जे,
बोलू बोलू मां बालाजी रा रोट,
चढ चढ देखूं मां डागले जे ।
आई आई मा पीवरिये री ए कूंज,
आय र बैठी मां नीमडी जे,
कूंजा राणी थारे गल में कठली ए बांध,
पगल्या बांध्या थारा घूघरा जे,
कहज्यो कहज्यो म्हारी माऊ जी ने ए जाय,
बीरो भेजे ज्यूं लेण ने जे ।

अर्थ

मा सावण का महीना लग गया है और तीज का त्यौहार भी आगया है । सहेलिया अपने पीहर जा रही हैं और मा, मै सुसराल मे ही तरस रही हूँ । मेरी नीमडी पर वैठे कौए उडा जा, मेरा भाई महमान बन कर आ जावे । मै हनुमान जी को रोट (बडी रोटी) भेंट करने की मनोती करती हू और मा ! छत पर बार-बार जा कर भाई की राह देखती हूँ । मा ! पीहर की कूंज आई और नीम पर बैठ गई । कूंजा रानी गले मे कठला बाध और पैरो मे घूघरे । मा को जाकर कहना कि भाई को लेने जल्दी भेजो ।

(इ) दीपावली के लोकगीत

राजस्थान की जनता सियालू फसल प्राप्त कर बडी उमग से दीपवली महोत्सव की आयोजना करती है । लीप-पोतकर मकानो का पुनरुद्धार कर दिया जाता है । विविध प्रकार के माडनो द्वारा चौक पूरे जाते हैं और घर-द्वार सजाये

दीपक हमारी सस्कृति का जगमगाता प्रतीक है । राजस्थानी महिलाओ को भी लोकगीतो मे "दीवलेरी जोत" कहा गया है । दीपावली दीपको का त्यौहार है । दीपावली की काली अमारात्रि का अंधकार दीपो की प्रज्ज्वलित अवलियो से दूर किया जाता है । दीपक मानो हमारे अगम्य कण्टकाकीर्ण पथ को आलोकित कर देते हैं । दीपावली सम्बन्धी कुछ लोकगीत इस प्रकार हैं—

सोने रो म्हे दिवलो घडास्यां,
रेसम वाट बटास्या जी ।
चार वाट रो चौमुख दीवो,
चादीं री थाल मेल म्हारो दिवलो,
रग महल ले जास्या जी ।
मही मही वाट, सुरंग म्हारो दिवलो,
रग महल जगवास्या जी ।

अर्थ

सोने का हम दीपक तैयार करावेगे और वत्ती वनायेगे रेशम की । चार वत्ती का चौमुखी दीपक हम घी से पूर्ण करेगे और चादी की थाल मे रख कर रङ्ग-महल ले जावेंगे । महीन वत्ती और सुरग हमारा दीपक । ऐसे दीपक से हमारा रगमहल प्रकाशित हो जावेगा ।

कांई दसरावा रो मुजरो,
दीवाल्यां घर री करज्यो जी ढोला !
काई काकड़िया पधारिया जी ढोला,
कांकड़िया कलस बंधाया जी ढोला,
दीवाल्या घर री करजो जी ढोला ।
कांई वागा मे पधारिया जी ढोला,
मालीडे फूलडा बंधाया जी ढोला,
दीवाल्यॉ घर री करजो जी ढोला ।
कॉई चौवटिये पधारिया जी ढोला,
चौरास्यॉ चवर ढुलाया जी ढोला,
दीवाल्यां घर री करजो जी ढोला ।
कांई दरवाजे पधारिया जी ढोला,

दरवाजे हस्ती झुकाया जी ढोला,
दीवाल्यां घर री करजो जी ढोला।
कांई मेलाँ में पधारिया जी ढोला,
कांई मेलाँ में मगल गाया जी ढोला।
काई दसरावा रो मुजरो,
गढपतिया राजा आवो जी मैलां।

अर्थ

दशहरे का प्रणाम, प्रिय! दीवाली का त्योहार घर पर ही मनाना। जंगल में पधारे प्रियतम! और जगल मे कलश बँधवाए। दीवाली घर की करना। प्रियतम! बागो मे पधारे और माली ने फूल भेंट किये। दीवाली घर की करना, प्रियतम! चोहट्टे में पधारे प्रियतम! और चौरासिये लोगो ने चँवर डुलाये। दीवाली घर की करना, प्रियतम! दरवाजे पधारे प्रियतम और दरवाजे पर हाथी को झुकाया, दीवाली घर की करना प्रियतम! महलो मे पधारे प्रियतम और महलो में मगल-गान हुआ। दशहरे का प्रणाम, गढपतिया राजा! महलो में पधारना।

हरणी मेवाड के बालको का बहुत ही प्रिय गीत है। मुहल्ले अथवा गांव-गवाड़े के लडके अलग-अलग टोलियो मे एकत्रित हो जाते हैं और घर-घर हरणी सुनाने के लिए निकलते है। हरणी सुनकर घर के लोग लडको के मुखिया को थोडा अनाज अथवा पैसे देना अपना कर्तव्य समझते है। हरणी-गायन का यह क्रम नौरतो के कुछ दिन बाद प्रारम्भ होता है और दीपावली तक चलता है। हरणी के कुछ अश इस प्रकार है—

हरणी हरणी थूं क्यूँ दुबली ए।
चाल म्हारे देस।
राता गऊवाँ री गूगरी ए।
नवी तेली रो तेल
सल्हा सायजादो लौंडी।
म्हू तो हरणी गावा निकलियो रे।
कूण मल्यो दातार ?

लीला घोडा वालो राम जी रे,
दुनिया गे दातार ।
सल्हा सायजादी लौड़ी ।
लौड़ी लौडी थने कणी रंगी ए ?
रंगी ए रामे भील ।
रामा भील ने बुलाश्रो रे !
नाक मे घालू तीर ।
साल्हा सायजादी लौड़ी ।
श्राम्बो निपज्यो भाई मालवे रे,
डाल लगी गुजरात ।
फल लागा भाई दुवारका रे
खाइग्यो बद्रीनाथ ।
सल्हा सायजादी लौड़ी ।

श्रर्थ

हरणी हरणी ! तू क्यो दुर्बल है ? मेरे देश चल । लाल गेहूं की गूगरी श्रौर नई तिल्ली का तेल खाना । सल्हा छोटी शाहजादी !

मैं तो हरणी गाने के लिये निकला । कौन दातार मिल गया ? नीले घोडे वाला राम जी (मिला) जो दुनियाँ का दातार है । सल्हा छोटी शाहजादी !

लौडी लौडी (छोटी श्रथवा लडकी से तात्पर्य है) तुमको किसने रगा ? रगा रामे भील ने । रामा भील को बुलाश्रो, नाक मे तीर डालूं । सल्हा छोटी शाहजादी !

मालवे मे श्राम लगा । डाल गुजरात तक फैली । द्वारिका मे फल लगे श्रौर बदरीनाथ खा गया । सल्हा छोटा शाहजादी !

(ई) होली सम्बन्धी लोकगीत

बसन्त ऋतु की मादकता से प्रभावित होकर हमारी जनता होली का त्यौहार बडे उत्साह से मनाती हैं। इस श्रवसर पर कई प्रकार के रगीन वस्त्रो

का उपयोग किया जाता है जिन्हे फागणियो, पीलो और वसन्तियो कहा जाता हैं। होली के कई दिन पूर्व राजस्थान मे सर्वत्र रङ्गरेज इसी प्रकार की साडिया, साफे और पगडिया तैयार करने मे लग जाते हैं। चूंदडिया वधाई का इन वस्त्रो मे विशेष उपयोग किया जाता है।

होली के कई दिन पूर्व से लोग रात मे एकत्रित होते है और गैर, गीदड आदि नृत्यो की आयोजना करते हैं। गीत के साथ चग अर्थात डफ का इस अवसर पर विशेष उपयोग किया जाता है। गीतो की लय भी विशेष मादकता लिये हुए होती है। होली के गीत वहुधा धमाल राग मे गाये जाते हैं इसलिये होली सम्वन्धी कई गीतो का नाम ही धमाल हो गया है। होली सम्वन्धी कुछ गीत इस प्रकार हैं—

घूमर

म्हारी घूमर छे नखराली ए मां,
घूमर रमवा जावा दे।
म्हाने राठौड़ांरी बोली प्यारी लागे ए मां, घूमर०
म्हाने राठोडारा पेच वाला लागे ए मां, घूमर०
म्हाने राठोडांरे भल दीज्ये ए मा, घूमर०

अर्थ

मेरा घूमर नृत्य है, वडी शृंगार-प्रिय मा, मुझे घूमर खेलने जाने दो। हमें राठोडो की बोली प्यारी लगती है। हमे राठोडो के पेच-साफा पाग आदि अच्छे लगते हैं। राठोडो के यहा भले ही हमारा विवाह करना। राठोड़ो की जगह मेवाड में सीमोदिया का प्रयोग होता है।

किसी गीत मे सास और साजन की मनोवृत्ति का चित्रण किया गया है तथा मिलने का आनन्द अधिक देर तक प्राप्त करने के लिए सूरज से थोडी देर मे उदय होने की प्रार्थना की जाती है—

रसिया फागण आयो।
चार कूंटरो चोंतरो हा रसिया,
जिसमें कातूं सूत।

तो सासू मांगे कूकडी,
तो साजन मागे रूप । रसिया०
दन्यू दांगा कूकड़ी हो रसिया ।
रात्यूं दांगा रूप हो रसिया०
चरा चरीरो बेवडो हो रसिया०
तो मधरी चालूं चाल ।
सासूजी नरखै बेवड़ो हो रसिया०
मैं साजन नरखै चाल । हो रसिया०
सूरज थाने पूजती हो,
तो भर-भर मोत्यॉ थाल । रसिया०
छनेक मोडो तो ऊगज्यो हो रसिया०
म्हारा भँवर चढ़े दरबार ।
रसिया फागण आयो ।

अर्थ

रसीले ! फागुण महीना आया । चार कोनो का चबूतरा है जिस पर बैठकर मै सूत कातती हू । सास सूत की कूकडी मागती है और साजन मागते हैं रूप । दिन मे देंगे कूकडी और रात मे देंगे रूप । चरू और चरवी का बेवडा (पानी भरने के वर्तन) हैं जिनको सर पर रखकर मैं धीमी-धीमी चाल से चलती हू । सासजी मेरा बेवडा देखते हैं और साजन देखते हैं मेरी चाल । सूरज आपको मोतियो के थाल भर-भर कर पूजूं, थोडी देर मे निकलना, नही तो मेरे प्रियतम मुझे छोड कर नौकरी पर दरबार में चले जायेंगे । रसीले ! फागुन महीना आया ।

कुण मारी पिचकारी

गोरी रा बदन पे कुण मारी पिचकारी, मोय बताओ ।
चढ़ता जोबण पे कुण मारी पिचकारी । मोय०
माथाने में मद, अधक बराजै,
तो रखड़ीरी छब न्यारी ।
बाईसा रा वीरा सासूजी रा जाया, तो राजन मारी पिचकारी ।
कुण मारी पिचकारी । गोरी रा०

अर्थ

गोरी के वदन पर किसने पिचकारी मारी ? मुझे बताओ। मेरे विकास-मान यौवन पर किसने पिचकारी मारी ? मस्तक पर मेमद बहुत शोभायमान है तो रखडी की छवि भी अनूठी है। ननद बाई के भाई, सासजी के पुत्र प्रियतम ने पिचकारी मारी है। गोरी के वदन पर किसने पिचकारी मारी ? इसी प्रकार मेंमद और रखडी के स्थान पर क्रमश कुडल और तिलडी, बाजूबन्द और गजरा, पायल और बिछिया का समावेश कर गीत पूरा किया जाता है।

(उ) शिकार सम्बन्धी लोकगीत

शिकार राजस्थान की राजसी क्रीडा है किन्तु इसका लोकोपयोगी महत्व भी कम नही है। जगल के महान् हिंसक पशुओ से ग्रामीण जनता बहुधा आतंकित रहती है और राजस्थानी शासको का यह परम कर्त्तव्य रहा है कि वे सदा जनता को हिंसक पशुओ से भय-मुक्त करने के लिये तत्पर रहे। शिकार के लिए शासको को सुदूर वन-प्रान्तर मे जनता के निकट सम्पर्क मे आने का और अपने देश की वास्तविक स्थिति को समझने का अवसर मिलता है। हिंसक पशुओ मे सिंह, अधवेसरा और सुअर मुख्य हैं। सुअर जनता की खेती का बहुधा विनाश कर देता है। इसलिये इनको मारना सर्व प्रथम आवश्यक होता है। सुअर सामना करने मे भी बडा शूरवीर होता है। शिकार सम्बन्धी गीतो मे दाढाला एकल गीड, टोली नायक सुअर, भूंडण अर्थात् मादा सुअर और सिंह को सम्बोधित किया गया है। शिकार सम्बन्धी कुछ गीत इस प्रकार हैं—

सुअरिया

सुअरिया ए चढ ऊँचो जोवजै काँई करे ओ वेटा रावरा ?
भूंडणड़ी ए अठे चढिया वेटा रावजी रा।
सुअरिया ए ऊँचो चढ़ जोवजे काई करे ओ वेटा रावरा ?
भूंडणी ए भालाँरा भलका पड़े
भूंडणी ए तरवारां चमक्या सेलड़ा,
ए जाय ने छपाड़े थारा छेबरिया।
सूअरिया रे कठे तो छपाड़ू म्हारा छैबरिया

भूडणीये खींचीयां रे जाइजै, वठीने छपाडे थारा छेबरिया,
सूअरिया रे खींचीयां का रे बेटा अनीता, पटक पछाड़े म्हारा छेबरि[illegible]
सूअरिया ए ऊँचो चढ़ने नालजै कांई करे ओ बेटा रावरा ?
भूँडणीए भाला भलकाता आया एडा चढ़िया बेटा रावरा,
ए जायने छपाड़े थारा छेबरिया,
भूँडणाडी ए राठौड़ां रै जावजे वठे छपाड़े थारा छेबरिया
सूअरियारे राठौड़ां रा वेटा घणा रे अनीता,
पटक पछाड़े म्हारा छेबरिया,
सूअरिया रे ऊँचो चढ़ने जोवजे कांई करे बेटा रावरा ।
भूंडणाडीये एडे चढ़िया बेटा रावजी रा, पटक पछाड़े थारा छेबरिया,
सूअरिया रे कठै तो छपाडूं म्हारा छेबरिया ?
भूंडणाडी ए भाटियां रे जावजे,
भाटियाँ रे जायने छपाडे थारा छेबरिया ।
भाटियाँ रा वेटा घणा रे सनतोखी,
ऊँडॉ ने ओवरा मे राखै म्हारा छेबरिया ।

अर्थ

सूअरिया ! ऊँचा चढकर देखना । राव के वेटे क्या करते हैं ? भूंडन ए ! राव के वेटे चढ आये हैं । सूअरिया रे ! ऊँचा चढ कर देखना राव के वेटे क्या करते है ? भूंडण ए भालो की नोकें चमकती हैं; ऐसे चढे हैं । भूंडन ए तलवार और शैलें चमकती हैं । तू जाकर अपने वच्चो को छिपा ले । सूअरिया रे ! कहाँ अपने वच्चो को छिपाऊँ ? भूँडन ए खींचियो के जाना, उधर अपने वच्चो को छिपा देना । सूअरिया ! खीचियो के वेटे अनीते हैं, मेरे वच्चो को पटक पछाडे गे । सूअरिया रे ! ऊंचा चढ कर देख, राव के वेटे क्या करते हैं ? भूंडन ए भाले चमकाते आते हैं, राव के वेटे । तू जाकर अपने वच्चो को छिपा ले । भूँडन ए राठोडो के जाना वहा अपने वच्चो को छिपाना । सूअरिया, राठोडो के वेटे वहुत अनीते हैं । मेरे वच्चो को पटक पछाड़े गे । सूअरिया रे, ऊँचा चढ कर देख, राव के वेटे क्या करते हैं ? भूंडन ए राव जी के वेटे ऐसे चढे हैं कि तुम्हारे वच्चो को पटक पछाडे गे । सूअरिया रे, कहाँ अपने वच्चो को छिपाऊँ ? भूंडण

ए भाटियो के जाना। भाटियो के जाकर अपने बच्चो को छिपाना। भाटियो के बेटे बहुत सन्तोप देने वाले हैं। भीतर के कमरे मे मेरे बच्चो को रक्खेगे।

मगरो छोड़ दे रे वन का राजा, मारियो जासी रे,
जंगल छोड़ देरे बन का राजा, मारियो जासी रे।
शिकारी आसी रे, मगरो छोड़ दे रे,
पातलिया प्रतापसी नितरी खबरा लावे रे
म्हारा राजा रे पधारो, मगरो छोड़ दे,
बन रा राजा मगरो छोड दे रे, मारियो जासी रे।

वन के राजा, पहाड छोड दे नही तो मारा जावेगा। जगल छोड दे वन के राजा! नही तो मारा जावेगा। शिकारी आवेंगे, पहाड छोड दे। प्रतापसिंह के पास तेरे नित्य समाचार आते है—हमारे राजा जल्दी शिकार करने पधारें। बन के राजा, पहाड छोड दे, नही तो मारा जावेगा।

---

३. राजस्थानी लोकगीतों में शृङ्गारिक सौन्दर्य

राजस्थानी जनमानस की सरस आत्मा शौर्य-प्रदर्शन और राजस्थान के प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रेरित होती रही है । प्राचीन राजस्थान मे युद्ध के वातावरण मे ही जन-जीवन का विकास होता था इसलिये शूरवीर योद्धा ही हमारी महिला का परम आदर्श माना गया । राजस्थानी लोकगीतो मे शूरवीर योद्धा का सौन्दर्य-चित्रण अनूठे रूप मे मिलता है ।

राजस्थानी शृ गारिक लोकगीतो मे विरह-भाव अपने तीव्रतम रूप मे मिलता है क्योकि राजस्थानी शूरवीरो का समय बहुधा प्रवास मे व्यतीत होता था । प्रवासी पतियो की शुभ कामना और प्रतीक्षा मे राजस्थानी नायिकाओ के हृद-योद्गार लोकगीतो मे भली भाँति प्रकट हुए है । साथ ही मिलन की घडियो मे अपने प्रियतम की रीझ-मनुहार करना राजस्थानी नायिकाओ ने अपना परम कर्त्तव्य समझा है । इस प्रकार राजस्थानी प्रेमगीतो मे वीरता और शृ गार की गङ्गा-जमुनी मनोवृत्ति का सरस एव स्वाभाविक चित्रण अनूठे रूप मे हुआ है । ऐसे लोकगीतो के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

(१)

अणी सरवरिया री पाल, आबा दोई रावला ।
वणियारा कु वर जी ओ, काची केरी मत तोड़ो,
पाकण दो दन चार, दूणो रस आवसी ओ राज !
वणियारा कु वर जी ओ !
अणी सरवरिया री पाल, हिन्दा दोई रावला ओ राज !
हीन्दे दोई राज री !
हीन्दोले मुझ सायबा जी राज !
वणियारा कु वर जी ओ !
अणी सरवरिया री पाल, नीम्बू दोई रावला ।
वणियारा कुंवरजी ओ, काचा नीम्बू मती तोड़ो,
पाकण दो दन चार, दूणो रस आवसी ओ राज !

वणियारा कुंवरजी ओ ।
अणी सरवरिया री पाल चम्पा दोई रावला ।
वणियारा कुंवर जी ओ, काचा चम्पा मती तोडो,
पाकण दो दन चार. दूणो रस आवसी ओ राज !
बणियारा कुंवर जी ओ !

अर्थ

इस सरोवर की पाल पर आम के पेड दोनो राज के हैं। स्वरूपवान कुंवर जी ओ ! कच्चा आम मत तोडिये। दो चार दिन पकने दीजिये, ओ राज ! दूना रस आवेगा। इस सरोवर की पाल पर झूले दोनो राज के हैं, जहा दोनो 'राजवी" झूलती है और मेरे प्रियतम झूला देते हैं। इस सरोवर की पाल पर नीबू दोनो राज के हैं, स्वरूपवान कुंवरजी ओ ! कच्चे नीबू मत तोडिये, दो चार दिन पकने दीजिये, दूना रस आवेगा। इस सरोवर की पाल पर चम्पे दोनो राज के है। स्वरूपवान कुंवर जी ओ ! कच्चे चम्पे मत तोडिये। दो चार दिन पकने दीजिये, दूना रस आवेगा।

(२) जलो

जलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर माले रे।
वीरो भोली नणद रो म्हारो हुकम न उठावे रे।
म्हें थाने जलोजी बरजियो, तू उदियापुर मत जाय।
उदियापुर री कामणी, छैला राखेली बिलमाय।
जलो म्हारी जोड़ रो फोजां रो मांझी रे।
वीरो म्हारी नणद री, म्हारो कह्यो नी माने रे।
साझ समें दिन आंथवे रे, छैला तैलण लावै तेल।
कई ए करूं थारे तेल ने हे, म्हारे आलीजे बिना किसो खेल।
छैलो म्हारी जोड रो उदियापुर माले रे।
साझ पड़े दिन आथवे रे, जला ! खातण लावे खाट।
कई हे करूं थारी खाट ने, म्हारे मारूड़े बिना किसो ठाट ?
छैलो म्हारी जोड़ रो, म्हारे घर नहीं आयो रे।

सांझ पड़े दिन आथवे रे, छैला मालण लावे फूल ।
कई हे करू मालण फूल ने हे, म्हारे आलीजे बिना लागे शूल ।
जलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर माले रे ।
सांझ पड़े दिन आथवे रे, जला तम्बोलण लावे पान ।
कई हे करू थारा पान ने हे, म्हारे आलीजे बिना किसी आन ।
जलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर माले रे ।
मस्त महीनो आवियो रे जला, अब तो खबरां म्हारो लेह ।
तो विन घडिय न आवड़े रे, छैला जीव उठे इत देह ।
जलो म्हारी जोड़ रो सैजा रो सवादी रे ।

अर्थ

मेरी जोड का जला उदयपुर मे मौज करता है। भोली नणद का भाई मेरा कहना नही मानता है । जलाजी ! मैंने आपको मना किया कि आप उदयपुर मत जाइये । उदयपुर की कामिनी आपको मोहित कर रोक लेगी, मेरी जोड का जला फौजो का अगुआ है ।

साझ होती है, सूर्य अस्त होता है और तेलिन तेल लाती है । तेरे तेल को क्या करू ? मेरे प्रियतम के विना कैसा खेल ? मेरी जोडी का प्रियतम उदयपुर मे मौज करता है ।

साझ होती है, सूर्य अस्त होता है और खातिन खाट ले कर आती है । तेरी खाट को क्या करू ? मेरे प्रियतम के बिना कैसा ठाट ? मेरी जोडी का प्रियतम घर नही आया ।

साँझ होती है, सूर्य अस्त होता है और मालिन फूल लाती है । मालिन ! फूलो का क्या करू ? मेरे प्रियतम के विना वे शूल जैसे लगते हैं । मेरी जोडी का प्रियतम उदयपुर मे मौज करता है ।

मस्त महीना आ गया है, जलाजी ! अब तो मेरी सुधि लो । तेरे विना घडी भी नही सुहाता, प्रियतम ! जीव वहाँ तुम्हारे साथ है और शरीर यहां है । मेरी जोड का प्रियतम सेज का स्वादू है ।

(३) पणिहारी

आज धूराऊ धूधलो हे, पणिहारी हे लो ।
मोटोडी छांट्यारो बरसे मेह, बाला जी हो ॥१॥
किणजी खुदाया नाडा नाडिया है, पणिहारी हे लो ।
किणजी खुदाया हे तलाव, बालाजो हो ॥२॥
सासूजी खुदाया नाड़ा नाड़िया, पणिहारी हे लो ।
सुसरोजी खुदाया है तलाव, बालाजी ओ ॥३॥
सात सहेल्या रै झूलरे, पणिहारीजी हे लो ।
पाणीड़े ने गई रे तलाव, बालाजी ओ ॥४॥
घडो न डूबे बेवडो, पणिहारी हे लो ।
इडोणी तिर-तिर जाय, बालाजी ओ ॥५॥
ओरां रे तो काजल टीकिया, पणिहारी हे लो ।
थारोडा है फीका नेण, बालाजी ओ ॥६॥
ओरा रा पीव जी घर बसे, लञ्जा ओठी हे लो ।
म्हारोडा बसे परदेश, बालाजी ओ ॥७॥
घडो तो पटक देनी ताल में, पणिहारी हे लो ।
चालैनी ओठीडे री लार, बालाजी ओ ॥८॥ -
बालू ने जालू थारी जीभडी, लञ्जा ओठी हे लो ।
डस जा थाने कालो नाग, बालाजी ओ ॥६॥
एक ओठी म्हाने इसो मल्यो, म्हारा सासूजी ओ ।
पूछी म्हारे मनडेरी बात, बालाजी ओ ।
देवरजी सरीखो डीगो पातलो, म्हारा सासूजी ओ ।
नणदल बाई रो आवे उणियार, म्हारा बालाजी ओ ।
थे तो म्हारा बहु जी भोला घणा, भोला बहुजी ए लो ।
वे तो है थारा ही भरतार, म्हारा बालाजी ओ ।

(सक्षिप्त)

अर्थ

पणिहारी हे लो ! आज उत्तर दिशा मे बादल छाये हुए हैं और प्यारे मोटी बूदो का मेह बरसता है ।

किसने छोटे बडे सरोवरो को खुदवाया है और किसने प्रियतम ! तालाब खुदवाये हैं ? सासजी ने छोटे-बडे सरोवरो को खुदवाया है और सुसराजी ने प्रियतम ! तालाब खुदवाये है ।

सात सहेलियो के समूह मे पणिहारी तालाब पर पानी लेने गई । पानी मे न तो घडा डूबता है और न ऊपर का बेवडा । ईडोणी भी तैर-तैर जाती है ।

* * *

पणिहारी ओ ! तुम्हारी अन्य सहेलियो के काजल-टीकी है और तुम्हारे नयन कोरे है । दूसरी सहेलियो के प्रियतम घर बसते हैं ओ सुन्दर ऊंट सवार ! मेरे प्रियतम परदेश मे रहते हैं ।

पणिहारा ओ ! घडा तो डाल दो तालाब मे और मेरे साथ चल दो । ऊंट सवार ! तेरी जीभ जला दूं और तुझे काला नाग डसे ।

* * *

मेरे सासूजी ! एक ऊंट सवार मुझे ऐसा मिला जिसने मेरे मन की बात पूछी । वह देवर जी जैसा लम्बा और पतला था । उसका चेहरा नणदल बाई जैसा था ।

बहुजी ! तुम तो बहुत भोली हो ! यह तो तुम्हारा ही पति है ।

(४) कुरजा

तूँ छै ए कुरजां भायली, तूँ छै धरम री बैण,
एक सन्देशो ए बाई म्हारी ले उडो ए म्हारी राज ।
कुरजां म्हारा पीव मिला दीजो ए ।
वी लसकरिये ने जाय कहिये क्यूँ परणी थे मोय ?
ऊठी कुरजां ढलती मॉझल रात,
दिनडा उगायो मारूजी रा देश में जी, म्हारा राज ।
आवो ए कुरजां ! बैठो म्हारे पास,
कुणीजी री भेजी अठे आई जी, म्हारा राज ।
थारी धण री भेजी अठे आई जी,
थांरी धण रा कागद साथ भँवर, थे बॉच लेवो म्हारा राज ।

अन्न बिना रह्यो ए न जाय,
दूध दही थारी धरण खरण लिया जी, म्हारा राज ।
के चित आयो थारो देसडो, के चित आया माई बाप,
ना चित आयो म्हारो देसडो, ना चित आया माई बाप ।
भायेला म्हाने गोरी चित आई जी ।
ओ लो साथीड़ा ! थारो साथ,
ओ लो राजाजी ! थारी नोकरी जी,
भायेला म्हा तो देश सिधारया जी ।
झटसी घुड़ला कस लिया जी, कस ली घोड़े पर जीण,
म्हाने वेग ⌐गाद्यो जी ।
दातण करो कुवा बावड़ी जी, मल मल करो असनान,
भवर थाने वेग पुगाद्या जी ।

अर्थ

कुरजा ए ! तू मेरी साथिन है । तू धर्म-बहिन है । मेरी बाई ! मेरा एक सन्देश ले उडो । कुरजा ! मेरे प्रियतम को मिला दो । उस सैनिक को जा कर कहना कि तुमने मुझसे क्यो विवाह किया ?

कुरजा ढलती हुई पिछली रात मे उठी और प्रियतम के देश मे दिन उगाया । आओ ए कुरजा ! मेरे पास बैठो । तुम किनकी भेजी हुई यहा आई ? ...आप पढ लीजिये । भेजी हुई यहा आई हैं । तुम्हारी स्त्री का पत्र साथ मे दूध-दही खाना छोड दिया है । ...बिना तो रहा नही जाता है किन्तु तुम्हारी स्त्री ने

या तो तुम्हे अपने देश की याद आई है अथवा अपने मा-बाप की । न तो मुझे देश की याद आई है और न मा-बाप को । साथियो ! मुझे तो अपनी प्रियतमा की याद आई है । साथियो ! लो यह लो तुम्हारा साथ, राजाजी ! रखिये अपनी नौकरी । साथियो ! हम तो अपने देश जाते है ।

तुरन्त घोडे पर जीन कस कर तैयार हो गया, अब हमको जल्दी पहुँचा दो जी । कुए-बावडी पर दातुन करो और खूब मल मल कर स्नान करो । भवरजी तुमको जल्दी पहुचा देंगे ।

———

४. राजस्थानी लोक-गीतों में कृष्ण-लीला

राजस्थानी लोकगीत—साहित्य समुद्र की भाँति गहन और सुविस्तृत है जिससे नाना प्रकार के रत्नो की प्राप्ति होती है । राजस्थानी जनता ने अपनी भक्ति-भावना को लोकगीतो मे "हरजस" के रूप मे व्यक्त किया है । राजस्थानी हरजस-साहित्य के अन्तर्गत कृष्णलीला-सम्बन्धी गीत भी प्रचुर मात्रा मे प्राप्त होते हैं । माखन-चोरी, गो-चारण, नागदमण, चीर हरण, रास, मथुरागमन आदि कृष्णलीला सम्बन्धी गीतो मे मुख्यत. लोकानुरजन और लोकोपकार की भावनाएँ सजीव रूप मे व्यक्त हुई हैं ।

कृष्णलीला सम्बन्धी राजस्थानी लोकगीत प्राय चक्की चलाने के समय से रात मे सोने के पूर्व तक गाये जाते हैं । इन गीतो को भक्त-मण्डली पूर्ण सरसता और तन्मयता से गाती है जिससे श्रोता भी प्रभावित हुए बिना नही रहते ।

कृष्णलीला-सम्बन्धी राजस्थानी लोकगीतो की प्रधान विशेषता यही है कि इनमे राजस्थानी जीवन और राजस्थानी सस्कृति के बहुत ही मनोहर दृश्य अङ्कित किये गये हैं । इन गीतो मे गोकुल राजस्थान के गाव की तरह अङ्कित किया गया है और राधा-कृष्ण को राजस्थानी पात्रो के रूप मे चित्रित किया गया है ।

कृष्ण की बाल-लीलाओ मे नाग-दमण मुख्य है जिसमे गेंद खेलने का वर्णन इस प्रकार किया गया है--

हा ओ, जल जमना रे बीच, दड़िया देहे तो बगाय ।
माता जसोदा कान्ह जगावै, उठो ओ म्हारा लालजी ।
दूध-दही रो करो कलेवो, गायां ने होय अवार जी ॥
हां ओ०
कान्हे तो उठ मुरली बजाई, ग्वाल बाल गया आय जी ।
ग्वाल बाल सब भेला होकर, पूग्या वन रे माय जी ॥
हां ओ०
ग्वाल बाल सब वन मे जा, मांड्यो गेंद रो खेल जी ।
कान्हो बैठ कदम री डाली, कूद्यो जल रे माय जी ॥
हा ओ०

ग्वाल बाल सब भेला होकर, आया नन्द रे द्वार जी।
तेरो कान्हो जल में कूद्यो, सुण कान्हे री माय जी ॥

हां ओ०

रोवत कूकत माता आई, पूगी जमना तीर जी।
दूध दही रो पड्यो कलेवो, कान्हा बिण कुण खाय जी ॥

हां ओ०

नाग नाथ हर बाहर आया, ग्वाल बाल हरखाय जी।
मात जसोदा लेवे वारणा, मीठो दियो वंटाय जी ॥

हा ओ०

हा ओ, जमुना-जल रे बीच गेद तो फैक दी।

माता यशोदा कृष्ण को जगाती है--उठो ओ मेरे लाल । दूध-दही का कलेवा करो, गो-चारण मे देरी हो रही है ।

कृष्ण न उठकर मुरली बजाई, ग्वाल-बाल सभी आ गये । सभी ग्वाल-बाल एकत्रित हो कर वन मे पहुँचे ।

सभी ग्याल-बाल वन मे गये और वहां गेद का खेल रचा । कृष्ण कदम की डाली पर बैठ कर पानी मे कूद पडा ।

ग्वाल-वाल सभी एकत्रित होकर नन्द के द्वार पर आये । तेरा कान्हा जल में कूद गया—कान्हा की मा सुनो ।

रोती-पुकारती हुई मा आई और जमुना किनारे पहुँची। कहने लगी—दूध-दही का कलेवा पडा हुआ है, कृष्ण के बिना कौन खावेगा ?

कृष्ण नाग को नाथ कर बाहर आये, ग्वाल-बाल प्रसन्न हुए । माता यशोदा "वारणा" लेती है और उसने प्रसन्नता मे मीठा बँटवा दिया है।

नाग-दमण सम्बन्धी इस गीत मे कृष्ण का साहस और माता यशोदा का प्रेम प्रकट किया गया है। कृष्ण द्वारा खेलते समय गेंद पानी मे गिर जाती है तो वे ग्वाल-बालो को किनारे पर रोक कर स्वय साहस पूर्वक पानी मे जा कूदते हैं। ग्वाल बाल दु खी होकर यशोदा के पास आते हैं और यशोदा अपने पुत्र के लिये विलाप करती हुई यमुना के किनारे पहुँचती है । यशोदा अपने पुत्र को सामान्य बालक समझती है और उनके बाहर निकलने पर मीठा बँटवाती है।

राधा और कृष्ण के प्रेम-विषय को लेकर हमारे देश मे पर्याप्त साहित्य-रचना की गई है किन्तु राजस्थानी भाषा के लोकगीतो मे जैसा सरल, सरस, स्वाभाविक और अनूठा प्रेम चित्रित किया गया है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है । प्रस्तुत गीत मे राधा और कृष्ण के विनोद का अनूठा वर्णन् किया गया है—

सांझ पडी दिन आथण लाग्यो,
तो गायां रा गवाल घर आया जी ।
आय जादूराय गोखाँ बैठ्या,
तो लावो राधा राणी झारी जी ।
जाय राधा महल में तिलक सुंवार्यो,
ता बाल्-बाल् मोती पोया जी ।
जाय राधा महल मे वसन सुवार्‌या,
तो ॰ैया काजल सार्यो जी ॥
जाय महल में राधा गहणा पहर्‌या,
तो माथे बिंदली चेपी जी ।
ओढ़ पाटम्बर राधा बाहर आई,
तो या लो जादूराय झारी जी ॥
म्हें तो म्हारी राधा गायां रा गुवाल्या,
थे क्यां पर कर्‌यो सिणगारी जी ।
जाय महल मे राधा तिलक उतार्‌यो,
तो बाल्-बाल् मोती काढ्‌या जी ॥
जाय महल मे राधा काजल पूंछ्‌यो,
तो माथै री बिंदली उतारी।जी ।
ओढ़ गोदड़ी राधा बाहर आई,
तो'या लो जादूराय झारी जी ॥
म्हें तो म्हारी राधा हँसी ओ करता,
तो क्या पर रीस उतारी जी ।
इसड़ी तो हांसी प्रभु फेरुं मत करज्यो,
तो हांसी मे होय जावे राड़ी जी ॥

लिख पत्री राधा बाबल घर भेजी,
तो गाया रो गुवालयो वर हेर्यो जी।
जनम हमारो ए राधा करम तिहारो,
तो श्री ए किसन वर हेर यो जी ॥

सायंकाल हुआ और दिन अस्त होने लगा और गायो के ग्वाले घर आये। यदुराय कृष्ण भी आ कर झरोखे मे बैठे और बोले राधा-रानी ! पानी की झारी लाओ।

राधा ने महल मे जा कर तिलक ठीक किया और बालो मे मोती पिरोये। राधा ने महल मे जा कर वस्त्र ठीक किये और आखो मे काजल सारा।

राधा ने महल मे जाकर गहने पहिने और मस्तक पर बिन्दी लगाई। राधा पाटम्बर ओढ कर बाहर आई और बोली—यदुराय ! यह लीजिये, पानी की झारी।

मेरी राधा ! मै तो गायो का ग्वाल हू। तुमने किसके लिये शृंगार किया है ? राधा ने महल मे जा कर तिलक उतारा और बालो से मोती निकाल डाले।

राधा ने महल मे जाकर अपना काजल पोछ लिया और मस्तक की बिंदली भी उतार ली। राधा गोदडी ओढ़ कर बाहर आई और बोली—यदुराय ! यह लीजिये पानी की झारी।

मेरी राधा रानी ! मैं तो हँसी करता था। तुमने किस पर क्रोध किया है ? प्रभु ! ऐसी हँसी तो फिर न करना क्योकि हँसी मे झगडा हो जाता है।

राधा ने पिता के घर पत्र लिख कर भेजा—मेरे लिये पति गायो का ग्वालिया ढूढा। उत्तर दिया गया—जन्म हमने दिया किन्तु भाग्य तुम्हारा ही है। हमने तो वर श्री कृष्ण को ढूंढा है।

उपरोक्त गीत मे कृष्ण एक साधारण गृहस्थ है और गोपालन उनका व्यवसाय है। राधा इस गीत मे एक सामान्य स्त्री के रूप मे चित्रित की गई है। सायकाल कृष्ण के घर आने पर राधा का शृंगार करना स्वाभाविक है और पानी मे विलम्ब होने पर कृष्ण का रुष्ट होना भी अस्वाभाविक नही लगता। राधा का पीहर मे पत्र लिखना भी पूर्ण मनोवैज्ञानिक है।

कृष्ण का द्वारिका-गमन और राधा का विरह हमारे साहित्य का बहु-वर्णित मार्मिक प्रसङ्ग है। निम्नलिखित गीत का वर्णन सर्वथा भिन्न होते हुए भी स्वाभाविक है। वास्तव मे लोक-मान्यताओ और लोकाचारो के आधार पर रचित लोक साहित्य ही हमारी जनता का शास्त्र है। कृष्ण का द्वारिका जा कर पुन लौट आना इस प्रकार बताया गया है—

कातै ही ए राधा लाम्बा-लाम्बा तार,
अटली तो बटली ए राधा कूकड़ी।
के थारो ए राधा दुखै पेट जी,
के थारी पाकै चिटली आगली जी॥

ना म्हारो सासूजी दुखै पेट जी,
ना म्हारी पाकै चिटली आगली जी।
सासू रा जाया बाई सहोदरा रा वीर,
वे हर चाल्या दुवारका जी॥

हँस-हँस ओ राधा दीनी म्हानै सीख,
तो चित लागो दुवारका जी।
सीखड़लो तो साम्रा देई न जाय,
छाती तो फाटै हिवड़ो ऊझलै॥

हिवड़ो ए राधा हीरां से जडाय,
छाती जडावो सांचा मोतीया।
चाल्या हरजी ढलती सी रात,
दिनड़ो उगायो हरि द्वारका जी॥

म्हें तो हरजी जोवे छा थाँरी वाट,
थे नहीं आया म्हारे देश मे।
म्हे तो ए कुबजा आया परभात,
राधा ने छोडी म्हे तो झूरती॥

थानै तो हरजी प्यारी राधा नार,
थे तो उठ जावो थांरे देस मे।
थे तो ए कुबजा हिवडै रा हार,
राधा तो म्हारै मन बस रही॥

आया जी सांवरा ऊगतड़ै परभात।
सूती राधा ने आय जगाइया जी ॥

राधा लम्बे-लम्बे तार कात रही थी । किन्तु तारो की कूकडी अटली-बटली हो जाती थी । सासजी ने पूछा — राधा ! तुम्हारा पेट दुखता है अथवा तुम्हारी अंगुली दुखती है ?

सासजी ! न तो मेरा पेट दुखता है और न मेरी छोटी अगुली दुखती हैं । बात यह है कि सास के पुत्र और सहोदरा बाई के वीर श्रीकृष्ण द्वारिका चलते हैं ।

ओ राधा ! हमको हँस-हँस कर सीख दीजिये क्योकि मेरा चित्त द्वारिका मे लगा हुआ है । सांवरा ! सीख तो दी नही जाती क्योकि छाती फटती है और हृदय धडकता है ।

राधा ! हृदय तो हीरों से जडवा लो और छाती पर सच्चे मोती पहिन लो । हरजी ढलती रात मे चले और उन्होने दिन द्वारिका मे उगाया ।

हरजी ! हम तो तुम्हारी राह देख रहे थे और आप हमारे देश मे नही आये । कुबजा ! हम तो प्रात.काल ही आये है और राधा को हमने रोती हुई छोडा है ।

हरजी ! आपको तो राधा नार प्यारी है । आप तो अपने देश मे उठ जाइये । कुबजा ! तुम मेरे हृदय का हार हो तो राधा मेरे मन मे बस रही है ।

कृष्ण प्रात काल जल्दी ही लौट आये और सोती राधा को जगाया ।

उपरोक्त गीत मे कृष्ण के द्वारिका-गमन के समय राधा का विरह-वर्णन् काव्य-शास्त्र के प्रचलित ढंग से नही किन्तु लोक-प्रचलित रीति से किया गया है इसलिये पूर्णरूपेण स्वाभाविक है । फिर कुबजा से अधिक राधा का प्रेम कृष्ण को द्वारिका से पुन. गोकुल खीच लाता है ।

कृष्ण के द्वारिका-प्रवास से राधा विरह मे बहुत दु:खी होती है जिसका वर्णन् एक राजस्थानी लोक गीत मे इस प्रकार किया गया है—

नेणा परभु बिलम रह्यो ।
साझ पडी ओ दिन आथण लाग्यो,

तेली री ल्याई चोखो तेल ।
धर दे तेली री बेटी हर रे मन्दर में,
हर बिना दिवलो चासे कूण ?
हर बिना दिवलो म्हांनै इसड़ो लागै,
जाणे मेह अंधारी रात ।। नैणा०

सांझ पडी दिन आथण लाग्यो,
गूजर री ल्याई चोखो दूध ।
धर दे गूजर री बेटी मन्दर में,
हर बिना दूधो पीवे कूण ?
हर बिना दूधो म्हानै इसडो लागै,
जाणै कोई खाटी सी छाछ ।। नैणा०

सांझ पडी दिन आथण लाग्यो,
हलवाई री ल्याई चोखा लाडू ।
धर दे हलवाई री तूं हर रे मन्दर में,
हर बिना लाडू खावै कूण ?
हर बिना लाडू म्हानै इसड़ा सा लागै,
जाणै कोई करड कसार ।। नैणा०

सांझ पड़ी दिन आथण लाग्यो,
पनवाड़ी री ल्याई चोखा पान ।
धर दे पनवाडी री तूं हर रे मन्दर में,
हर बिना पान ज चावै कूण ?
हर बिना पान म्हानै इसडा सा लागै,
जाणैं कोई आक का पान ।। नैणा०

साँझ पडी दिन आथण लाग्यो,
खाती रो ल्यायो चोखो ढोलियो ।
धर दे खाती रा बेटा हर रे मन्दर में,
हर बिना ढोलिये पोढ़ै कूण ?
हर बिना ढोलियो म्हांनै इसडो सो लागै ।
जाणै कोई टूट्योड़ी खाट ।। नैणा०
साझ पडी दिन आथण लाग्यो,
पिजारे री ल्याई चोखी सोड़ ।
धर दे पिजारे री तू हर रे मन्दर में,
हर बिना सोड ओढ़े कूण ?
हर बिना सोड म्हानै इसडी सी लागै,
जाणै कोई फाट्योडी गोदडी ।। नैणा०

नयनो मे प्रभु रम रहा है ।

साझ पडी और दिन अस्त होने लगा । तेली की लडकी अच्छा तेल लाई । तेली की बेटी ! तेल हरि के मन्दिर मे रख दे । हरि के बिना दीपक ऐसा लगता है मानो मेह की अन्धेरी रात हो ।

साझ पडी और दिन अस्त होने लगा । गूजर की लडकी अच्छा दूध लाई । गूजर की बेटी ! दूध हरि के मन्दिर मे रख दे क्योकि हरि के बिना दूध कौन पीयेगा ? हरि के बिना दूध हमको ऐसा लगता है मानो खट्टी छाछ हो ।

साझ पडी और दिन अस्त होने लगा । हलवाई की लडकी अच्छे लड्डू लाई । हलवाई की लडकी ! लड्डूओ को तू हरि के मन्दिर मे रख दे क्योकि हरि के बिना इनको कौन खायेगा ? हरि के बिना लड्डू हमको ऐसे लगते हैं मानो किरकरा कसार हो ।

साझ पडी दिन अस्त होने लगा । पनवाडी की लडकी अच्छे पान लाई पनवाडी की लडकी ! पानो को हरि के मन्दिर मे रख दे क्योकि हर के बिना पान कौन चबावे ? हरि के बिना पान हमको ऐसे लगते है । मानो आक के पत्ते हो ।

साझ पडी और दिन अस्त होने लगा । खाती का वेटा अच्छा पलग लाया । खाती के वेटे ! पलग को हरि के मन्दिर मे रख क्योकि हरि के विना पलग पर कौन सोवे ? हरि के विना पलग हमको ऐसा लगता है मानो कोई टूटी हुई खाट हो ।

साझ पडी और दिन अस्त होने लगा । पिंजारे की वेटी अच्छी सोड ले कर आई । पिंजारे की वेटी ! तू सोड को हरि के मन्दिर मे रख दे क्योकि हरि के विना सौड कौन ओढे ? हरि के विना सोड हमको ऐसी लगती है मानो कोई फटी हुई गूदडी हो ।

इस प्रकार राजस्थानी जनता ने राधा, कृष्ण, गोप-ग्वाल, नन्द-यशोदा और गोकुल-मथुरा को अपनी ही भावनाओ मे रग दिया है । राजस्थानी सस्कृति का कृष्ण-लीला-सम्वन्धी लोकगीतो मे स्वाभाविक और सरस चित्रण हुआ है । कृष्ण-लीला-सम्बन्धी राजस्थानी लोकगीतो मे राजस्थानी जनता की नवीनतम भावनाएँ व्यक्त हुई है इसलिये इनका विशेष महत्त्व है ।

---

५. रामू चनणा के गीत

प्रेम मानव जीवन मे अनमोल और स्वाभाविक है । जीवन मे भक्ति, वात्सल्य, हर्ष, दया, वीरता और उदारता आदि कई भावनाये है किन्तु इनमे प्रेम सबसे बढ कर है । प्रेम के बिना जीवन सूना है, नीरस है और निष्प्राण है अथवा यो कह सकते है कि जीवन मे प्रेम है तो सर्वस्व है और प्रेम नहीं है तो कुछ नहीं । इसी प्रकार प्रेम हमारे जीवन की पवित्रतम वस्तु है । जहा प्रेम की पवित्रता होती है वहा किसी प्रकार की अपवित्रता नही ठहरती । प्रेम हमारे जीवन मे समानता स्थापित करता है । प्रेम के आगे ऊँच-नीच, और धनी-निर्धन सभी समानता का अनुभव करते हैं । प्रेम-पाश मे बंधने पर देश, जाति और कुल के बन्धनो से मुक्ति मिल जाती है । रामू-चनणा हमारे देश की एक प्रसिद्ध प्रेम-गाथा है । रामू सुनार पुत्र है और चनणा है राजकुमारी किन्तु प्रेम के आगे दोनो ही समान है ।

रामू चनणा के प्रेम के समाचार सुन कर चनणा की मा चनणा से पूछती है कि वास्तव मे बात क्या है ? चनणा इस प्रकार स्पष्टीकरण करती है—

हसली को डाडो ए अम्बा मेरो टूट गो,
गई गई रामूड़ा री हाट अम्बा मोरी ।
झूठो चुगरो ए सखिया मोरी कर रही ।।

मा ! मेरी-हंसली का डंडा टूट गया जिसको ठीक करवाने के लिए ही मैं रामूड़े की हाट गई और मेरी सखिया झूठी चुगली खा रही हैं । फिर थोडी देर मे चनणा की सखी राणी जी के पास पहुँची और कहा, 'राणीजी, चनणा तो तीज के उत्सव मे भी नही सम्मिलित हुई, पता नही वह कहा रही ?

राणी ने सोचा 'चनणा महल मे भी न थी अवश्य ही वह रामूड़े के यहाँ गई ।' राणीजी तुरन्त राजाजी के पास पहुची—

टग-टग महला जी के राणीजी चढ़ गई,
गई-गई राजाजी के पास ।
झटक दुसाला जी के कोई रात्र जगाईया जी ।
राणी तो राजा दोनू भेला हुया जी कोई,
सुणो राजाजी म्हारी बात
चनणा ने भेजो जी चनणा के सासर जी ।

राणीजी तुरन्त महल मे गई और राजाजी के पास पहुँची । दुशाला अलग कर रावजी को जगाया और राजा-रानी साथ बैठे । राणी ने कहा, "राजाजी, मेरी बात सुनो । चनणा को उसके ससुराल भेज दो ।"

यह सुनकर राजाजी ने पूछा, 'क्या मेरी चनणा चचल है अथवा क्या वह कुमार्ग मे पड गई है ?'

राणी ने उत्तर दिया, 'चनणा गली-गली के उपालम्भ लाती है ।' राजा ने यह सुन कर जमाई को पत्र लिखा, 'प्यारे पाहुने ! जल्दी ही आइये ।'

दूत पत्र लेकर आधी रात ढलते ही ऊँट पर रवाना हुआ और दिन निकलने पर रिसालू राजा के दरबार मे पहुँचा । पत्र पढने ही रिसालू राजा ने यात्रा की तैयारी की और अपनी मा से स्वीकृति प्राप्त की । रिसालू राजा रात मे रवाना होकर दूसरे दिन प्रात काल ही सुसराल मे जा पहुँचे । रिसालू राजा का सुसराल मे बहुत स्वागत हुआ—

माडा पोयाजी कवर जी लबलबाजी,
जबक परूसा थाल ।
सासू जी जीमावे जमाई जी जीमणाजी ।।
बीजापुर का जी जवाई जी बीजणा जी,
देवगढ़ी गढ थाल ।
रुच-रुच जीमोजी कुंवर प्यारा पावणा जी ।

कुंवरजी, आपके लिये घी से तर माडा-रोटी बनावें और फिर शोभित थाल परोसें । जवाई जी, सासू जी आपको भोजन परोसती है ।

जमाई जी, बीजापुर की आपको पंखी दुलावें और देवगढ की बनी हुई थाल परोसे । प्यारे पाहुने कुंवर, आप पूरी रुचि से भोजन करो ।

भोजन कर जमाई जी ने कहा, 'अब हमको सोने के लिए स्थान बताओ। हम रात के थके हुए है। आराम करेंगे।'

सासूजी ने कहा, 'कुंवर जी ऊंची मेडी है, दीपक जल रहा है और चनणा अकेली सोई हुई है। आप वही सोवे।'

कुंवर जी ने कहा, 'ऊंची मेडी पर तो मेरे सालाजी सोवेंगे, हम तो चौक में ही खाट डाल कर सो जावेंगे।'

कुंवर जी के सोने के लिए चौक मे ही पलग डाल दिया गया और कुंवर जी उस पर सो गए।

रात मे चनणा अपनी मेडी से उतरी और रामूडे के घर पर पहुँची। रामू और चनणा की बातचीत हुई। उसका वर्णन रामू-चनणा गीत मे इस प्रकार किया गया है।

झिरमिर-झिरमिर चनणा मेह पड़े जी। कोई हो रही मूसलधार।
थारो तो आवणो यक चनणा क्यूं हुयो जी ॥
म्हारे घर आया रै क रामूड़ा पावणा जी। ले जासी म्हाने साथ।
इबका तो बीछड्या रै रामूड़ा, कद मिला जी फलसों खोल दे।
ढकियो तो फलसो यक चणना ना खुले जी। ड्योढी में सूत्या बड़ा वीर ॥

सेजां में सूती नाजुक गोरडी जी ॥
ढकियो तो फलसो रै क रामूड़ा खोल दे, खोलो सजड़ किवाड।
आगल तो खोलो जीक बीजासारकी जी।
ढकिया तो भाटा ये चनणा ना खुले जी, जित आई तित जाय।
ढकिया तो भाटा ये चनणा ना खुले जी
कोयां तो काजल रै क रामूडा घुल गयो जी। कोई बिन्दली झोला खाय ॥

काजल फीको रै रामूड़ा तै कर्‌यो जी ॥
हाथां रे मेंहदी रै रामूड़ा हद रची जो लाल चुडै गल बॉय।
नेह सतावे रै भाटो खोल दे जी ॥

बालक पणा की रै रामूडा प्रीत जी, इब म्हांसू तोडी न जाय ।
छाती म्हारी फाटै रै रामूड़ा देह जले जी ॥

चनणा ! झरमर-झरमर मेह बरसता है और मूसलधार हो रहा है ऐसे समय चनणा तुम्हारा आना किस प्रकार हुआ ?

रामूडा मेरे घर पर पाहुने आये हैं और वे मुझे साथ ले जावेंगे । रामूडा अब की बार विछुडे से पता नही कब मिलेंगे बन्द फाटक खोल दो ।

चनणा, बन्द की हुई फाटक तो नही खुल सकती । छोर की ड्योढी मे बड़ा भाई सोया हुआ है और सेज पर नाजुक स्त्री सोई हुई है ।

रामूडा बन्द फाटक खोल दे और जडा हुआ किवाड भी खोल । बीजलसार की किवाड की कुन्डी भी खोल दे ।

बन्द की हुई फाटक चनणा नही खुलती । तू जिधर मे आई है, उधर से ही जा ।

रामूडा ! आखो के कोयो मे काजल लगा हुआ है । बिदली झोला खा रही हे । रामूडा ! तूने मेरा काजल फीका कर दिया । रामूडा हाथो मे मेहदी बहुत सुन्दर लगी हुई है । हाथो मे लाल चूडा है और मुझे तुम्हारा प्रेम दु खदायक हो रहा है इसलिए किवाड खोल दे ।

रामूडा बचपन की प्रीत अब मेरे से नही तोडी जाती । मेरी छाती फटती है और देह जलती है ।

चनणा ने कहा, रामूडा बचपन मे तो तैने मेरे से प्रेम किया और अब कठोर दिल का हो गया । रामूडा ! तूने अच्छा नेह निभाया !

रामूडा विवश होकर उठा और अपने घर का दरवाजा खोला । गीतकार ने दोनो के मिलन का वर्णन इस प्रकार किया ह ।

चनणा रामूडो येक दोनूं भेला हुया जी, कोई टप-टप टपके नैन ।
आसू तो पूछ्या जीक पगडी रै पेच सूं जी लीनी हिवडै लगाय ।
मनड़े की बाता जीक चनणा थे कहो जी ।
म्हारे घर आया रै राजाजी पांवणा जी, ले जासी म्हाने साथ ।
मनडे का धोखा रै रामूड़ा मन रया जी ।

रिसालू तो लागै जीक प्यारी थारो सायबो जी, प्यारी को लणिहार।
परत न भेजां जी प्यारी थाने सासरे जी ॥
ना थारी जाणू रै रामूडा दोस्ती जी, ना थारी मानूं प्रीत।
दिन तो उगायो रै क सारी रात को जी।

रामू-चनणा दोनो जब मिले तो चनणा हरियल मोर की तरह आसू टपकाने लगी। रामू ने अपनी पगडी के पेंच से उसके आसू पोछे और उसको हृदय से लगा लिया। फिर पूछा, 'तुम अपने मन की बात कहो।' चनणा बोली, 'रामूडा मेरे घर पाहुने राजाजी आये हैं और मुझे साथ ले जावेगे। मन का धोखा रामूडा मन मे ही रह गया है।

रामूडा बोला, 'चनणा रिसालू राजा तुम्हारा पति लगता है और तुमको लेने के लिए आया है किन्तु तुमको तुरन्त ही नहीं जाने दू गा।'

चनणा बोली, अब मैं तुम्हारी मित्रता पर विश्वास नही करती और न तुम्हारा प्रेम ही मानती हू। तुमने किंवाड खोलने की मनुहार मे ही रात व्यतीत कर दी।

इसी समय जोगी ने हाथ मे खप्पर ले कर रामूडे के घर के सामने अलख जगाई। जिसका वर्णन् इस प्रकार है—

रामूडे की राणी रै क भिछ्या घालज्यो जी जोगीडो ऊभ्यो द्वार।
खैर मनावै जी दोन्या के जीव की जी।

मोती मूंगाजी क चनणा ले लिया कोई। गई गई जोगीडे के पास।
भीख घलावां जी जोगी ने चात्र सू जी ॥

मोती मूगा येक चनणा घर घणा जी, कोई देदे तेरे हिवड़ै को हार।
खैर मनावां रै क रमूडै सुनार की जी ॥

हार गलै को रै जोगीड़ा जद देवा जी कोई पूछा रामूड़े ने जाय।
हार गलै को रै जोगीडा जद देवां जी ॥

मोती मूगा रै जोगीड़ो ना लेवे। मागे म्हारो गलै रो रहा।
हार हमारो रै रामूडा ना देवा जी ॥

हार गले को ये प्यारी घरा दे देवो जी,
जोगीड़ो देय आसीस।
खैर मनासी ये दोन्या का जीव की जी।
हार हमारो एक रामूड़ा जद देवा जी,
कोई दे म्हाने और घड़वाय।
राजाजी तो पूछे रे रामूड़ा के कहूं जी ?
दिन में तो घड़स्यां प्यारी जी नोगरी जी, कोई रात्यों घड़स्यां हार,
हार पहरो ऐक जड़ाव को जी।
टग-टग महलां जी चनणा ऊतरी जी
कोई, आई-आई जोगीड़े के पास।
हार गले को रे जोगी जी थें लेवो जी।
हार ज बकस्यो जी क चनणां चावसूं जी, ले म्हारे रामूडे की खैर,
खैर मनाओ रे रामूडे के जीव की जी ॥

रामूडे की रानी जोगी दरवाजे पर खड़ा है भिक्षा दो, मैं दोनो के प्राणों की खैर मनाता हूं।

चनणा ने मोती और मूंगे ले लिये और वह जोगी के पास गई, बोली, "जोगी को चाव से भिक्षा देती हू" किन्तु जोगी बोला, "चनणा ! मोती मूंगे तो मेरे घर बहुत हैं तू तो अपने हृदय का हार दे। मैं रामूडे सुनार के प्राणो की खैर मनाता हूं।"

चनणा बोली, जोगी गले का हार तो तब दूं जब मैं रामूडे को पूछ लूं।

चनणा रामूडे के पास गई और बोली, "जोगी मोती और मूगे नही लेता, वह तो मेरे गले का हार मागता है।" रामूडे मैं ! अपने गले का हार न दूंगी।"

रामूडा बोला, "चनणा ! गले का हार दे दे। जोगी हम दोनो के प्राणो की खैर मनावेगा।"

चनणा ने कहा, "रामूडे मैं हार तभी दे सकती हूं कि जब तुम मुझे दूसरा बना दो। नही तो राजा जी पूछेंगे और मैं क्या उत्तर दूंगी।"

रामूडा बोला, "प्यारी ! दिन मैं हाथो की नोगरी घडूंगा और रात में हार बनाऊंगा। तुम जड़ाव का हार पहिनना।"

यह सुन कर चनणा महलो से उतरी और जोगी के पास आई। बोली "जोगी जी मेरे गले का हार लो।"

चनणा ने प्रसन्नता से अपने गले का हार दे दिया और शृंगार कर राजाजी के पास पहुँची। चनणा बोली, "राजाजी रथ जुतवा कर चलने क तैयारी करो।" इस बात का राजा ने कोई उत्तर नही दिया। फिर चनणा बोली, राजाजी उठ कर दातुन करो, कलेवे मे देर हो रही है। राजाजी ने चनणा की ओर से मुह फेर लिया।

थोडी देर मे सास जी राजा के पास आई। राजाजी ने कहा, 'मुझे अभी ही सीख दीजिये, मैं अपने देश जाऊँगा।'

सासजी ने मनुहार की, एक दिन और रात और रुकिये, कल अवश्य ही सीख देगे। राजा ने हठ की और उसी समय चनणा को लेकर रवाना हो गया!

रामूडा चनणा को जाती हुई देख, पछाड खा कर गिर पडा और बेहोश होकर मर गया।

राजा चनणा के साथ रथ मे बैठ कर अपने देश की ओर चल दिया। रास्ते मे राजा ने चनणा से पूछा, "दूसरा गहना तो तुमने सब पहिन रखा है, किन्तु नौलखा हार कहा है?"

चनणा ने कहा, "मै अपना हार महलो मे ही भूल आई हू। नहाने के लिए गई थी तो स्नान-घर मे ही खूटी पर टका हुआ रह गया है।"

राजा ने कहा, रानीजी झूठ मत बोलो। झूठ से मुझे क्रोध है। तुम्हारा हार तो मैंने लिया है और रामूडे के प्राणो की खैर मनाई है।

यह सुनते ही चनणा पछाड खा कर गिर पडी और बेहोश होकर मर गई।

राजा ने पूछा, एक बार तो रानी मुह से बोलो। मेरी मा तुम्हारी राह देखती होगी। मै उसको क्या उत्तर दूँगा?

राजा रिसालू जब महल मे पहुचा तो मा ने पूछा, "कुवर जी चनणा कैसे मर गई?" राजा न कहा, चनणा बाग मे फूल तोडने लग गई। रास्ते मे ही काले नाग ने डस लिया और वह मर गई। इस प्रकार रामू और चनणा ने अपने प्रेम का निर्वाह करते हुए इस ससार को त्याग दिया।

---

६. राजस्थानी लोक-गीतों में श्रम-साधना

कार्य-रत रहना मानव-जीवन का प्रधान गुण माना गया है। कहना चाहिए काम ही जीवन है और निकम्मेपन का नाम है मौत ! कर्मठ व्यक्ति की सदा प्रशसा होती है और सफलता सदा ही उसके पैर चूमती है।

काम तो जानवर भी करते है किन्तु कर्मठ व्यक्तियो के कामो मे और जानवरो के कामो मे महान् अन्तर है। जानवर विवश होकर ही काम करता है, जानवर से काम लेना पडता है। साथ ही काम करने मे जानवर विवेक नही रखता और न प्रसन्नता का ही अनुभव करता है किन्तु कर्मठ स्त्री-पुरुष सदा ही प्रसन्नता और विवेक से काम करते हैं। जीवन-रक्षा के लिए काम तो करना ही पडता है। अपने काम को फिर चाहे वह कितना ही कठिन हो, नित्य प्रति का हो, उसमे कोई नवीनता न हो, प्रसन्नता और विचार से करना ही बुद्धिमानी होती है। जीवन मे सदा ही कार्य और कठिनाइयो का सामना तो होता ही है, फिर दुखी होने अथवा रोने की अपेक्षा प्रसन्नता और रुचि के साथ ही कार्य करना उत्तम है जिससे शीघ्र ही सफलता प्राप्त हो। महिलाओ के लिए चक्की-चूल्हे का और घर-गृहस्थी का कार्य आवश्यक है तो फिर प्रसन्नता के साथ गाते हुए क्यो न किया जावे ? श्रम सम्बन्धी गीतो की सृष्टि श्रम-जीवियो ने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की है।

हमारी महिलाओ को चक्की चलाने का आनन्द दैनिक जीवन मे सर्व प्रथम प्राप्त होता है। प्रात काल जल्दी ही घर की महिलाएं चक्की चलाती हुई गीत गाने लगती हैं और घर के वातावरण को आनन्दमय बना देती हैं। चक्की को राजस्थान मे "घट्टी" कहा जाता है और घट्टी के गीतो मे हमारी महिलाओ की सुख-दुख की समस्त भावनायें सुन्दर रूप मे व्यक्त हुई हैं।

स्त्री-पुरुष अपने परिश्रम से सदा ही सुखी, प्रसन्न और आत्म-निर्भर रहते हैं। परिश्रम मे ही स्वावलम्बन और स्वाधीनता की रक्षा होती है। घट्टी चलाते समय महिलाए अपना तुलना भगवान् से करती हैं और विनोद ही विनोद मे

कहती है कि वे परिश्रम करती हैं और थोड़े मे ही सदा संतोष करती हैं इसलिए सदा प्रसन्न रहती हैं :—

बनवारीहो ।लाल, कोन्या थारे सारे
गिरधारी हो लाल, कोन्या थारे सारे
ए महल मालिया थारे
थांरी बराबरी म्हें करा से कोई
टूटी टपरी म्हारे ।।बनवारी० ।।
ए कामधेनवां थारे ।
थारी बराबरी म्हें करां स कोई
भैंस गायडी म्हारे ।।बनवारी०।।
ए हाथी घोड़ा थारे
थारी बराबरी म्हें करा स कोई
ऊंट सांडणी म्हारे ।। बनवारी०।।
ए भाला बरछी थारे
थारी बराबरी करां स कोई
जेली गडासी म्हारे ।। बनवारी०।।
ऐ रतनागर सागर थारे
थारी बराबरी करां स कोई
तलाब भर्‌या है म्हारे ।।बनवारी०।।
ए गादी तकीया थारे
थारी बराबरी करां स कोई
सोड़ गोदड़ा म्हारे ।।बनवारी०।।

बनवारी हो लाल ! हम तुम्हारे भरोसे नहीं हैं ।
गिरधारी हो लाल ! हम तुम्हारे भरोसे नही हैं ।

तुम्हारे पास महल और मालिये हैं हम तुम्हारी बराबरी कैसे करें किन्तु हमारे टूटी झोपड़ी है ।

और तुम्हारे कामधेनुएँ हैं तुम्हारी बराबरी कैसे करें किन्तु हमारे भी

भैंस और गाय है ।

तुम्हारे पास हाथी घोडे हैं । तुम्हारी बराबरी हम कैसे करें किन्तु हमारे भी ऊंट और साडनिया हैं । भाला और बरछी तुम्हारे पास है । तुम्हारी बराबरी हम कैसे करें किन्तु हमारे भी जेली और गंडासे हैं ।

तुम्हारे रत्नाकर सागर है । तुम्हारी बराबरी हम कैसे करें किन्तु हमारे भी तालाब भरे हुए हैं ।

तुम्हारे गादी और तकिया लगे हुए हैं । तुम्हारी बराबरी हम कैसे करें ? हमारे भी सोड और गूदड़े हैं ।

बनवारी हो लाल ! हम तुम्हारे भरोसे नही हैं ।
गिरधारी हो लाल । हम तुम्हारे भरोसे नहीं है ।

इस प्रकार महिलाएं गीत गाती हुई घट्टी चलाने के साथ ही अपने दैनिक जीवन का आरम्भ करती हैं ।

घट्टी चलाती हुई महिलाएं अपने सुखी जीवन की कल्पना में लीन हो जाती हैं । इस अवसर पर वे अपने पीहर और सुसराल दोनो के सुख का अनुभव करती हैं । अपने घर-बार और परिवार की प्रशसा मे वे गाने लगती हैं:—

म्हारे बाबो जी री पोल सु पोल,
आगण मे ऊभो केवड़ो ।
म्हारे बाबो जी री ऊ ची सी रावटी ।
कोई ज्यांरा लाल कमाड़ । आंगण में०
म्हारा भाभी जी रसोयां में रम रह्या
म्हारा माउ जी काते सूत ।। आगण में०
म्हांरा चानण चौक सुवावणा
ज्यां में खेले रे नंदलाल ।। आंगण में०।।

मेरी बाबाजी की पोल मे पोल बनी हुई है और आंगन मे केवड़ा खड़ा हुआ है । मेरे बाबाजी का ऊंचा सा मकान है और उसके लाल किवाड़ हैं । मेरी भाभीजी रसोई करने में लीन हैं और मेरे माऊजी सूत कातते हैं । मेरा सुहाना चांदण चौक है और जिसमें नंदलाल खेल खेलता है ।

घट्टी चलाने के अतिरिक्त चूल्हे का कार्य भी हमारे जीवन मे महत्वपूर्ण होता है। मक्की अथवा बाजरे की घाट हमारे गाँवो का दैनिक खाद्य होता है। प्रात काल का नाश्ता अर्थात् ब्यालू प्राय. घाट छाछ का ही किया जाता है। घाट की प्रशसा मे गाया जाता है—

घाटो हद बण्यो
कोठला रो खोल्यो सायणु
भर टोपली लाई जी
छाले घालर चुगवा लागी नानी काकरडी।

घाटो हद बण्यो॥

ऊखल घालर ओखण्या,
छाले में घालर छलक्या जी।
गैर खटोले खेसलो तात्रडिया दीना जी

घाटो हद बण्यो॥

जद म्हारी सूखी घाटड़ी
म्हें आबलिया मे नाखीजी,
भर हांडी मै चूल्हे चाढी॥

घाटो हद बण्यो॥

घाट स्वादिष्ट बनी है।

मैंने कोठले का मुह खोला और टोकरी भर कर ले आई। सूप मे डालकर मै छोटी ककरिया चुनने लगी।

ऊखल मे डालकर मैंने उसको कूटा और फिर सूप मे डालकर उसको साफ किया। फिर मैंने खटोले पर कपड़ा बिछा कर उसको धूप मे दे दिया।

जब मेरी घाट सूख गई तब मैंने उसको सावन मे डाली और फिर चूल्हे पर हाडी चढा दी।

घाट बहुत स्वादिष्ट बनी है।

प्रतिदिन का कार्य तो घाट, राबडी और रोटी से ही चलता है किन्तु

तीज-त्यौहार पर तो विशेष भोजन आवश्यक होता है। तीज-त्यौहारो पर हमारे महिलाएं श्रम पूर्वक कई प्रकार के स्वादिष्ट भोजन तैयार करती हैं जिनमे चूरमा बाटी और दाल मुख्य होते हैं। कार्य के साथ गाते हुए चूरमे और दाल का लेखा इस प्रकार किया गया है।

म्हारे करयो चूरमो दाल,
आज धोका तीजडली ॥
मण भर तो म्हें गेहूंडा पीस्या,
घड़ी दोय दली ए दाल।
सासू जी म्हांरा चोको दीनो
नणदल चूल्हो ए जलाव ॥ आज धोका०
एक नाके तो चूल्हो ए जलायो,
कोई दीनी ए दाल चढाय।
नणदी बाई मांड़ा पोवे,
म्हे ली ऊखली मंगाय ॥ आज धोका० ॥
घर घर ऊँखल कूटण लागी,
यूं गयो चूरमो कुटाय
नानो नानो चूरमो चूरयो
कोई दीनी खांड मिलाय ॥ आज धोका० ॥
भर भर पलिया घीरा घाल्या,
कोई वीणयो विसवा वीस
म्हांरो कुणबो बैठ्यो जीमवा
म्हारी सास जी पुरस्या थाल ॥ आज धोकां० ॥

हमारे यहा दाल चूरमा बना है। आज तीज पूजेंगे।
मैंने मन भर गेहू पीसे और २० सेर दाल तैयार की।
मेरी सास जी ने चौका दिया और ननद बाई ने चूल्हा जलाया।

एक किनारे पर चूल्हा जलाया और उस पर दाल चढा दी। ननद मांडे बनाने लगी और मैं ओखली गररमरर कूटने लगी। इस प्रकार चूरमा

गया। मैंने चूरमा बारीक कूटा और उसमे शक्कर मिला दी।

चमच भर भर उसमें घी डाला और चूरमा बहुत स्वादिष्ट बन गया। मैं और मेरा परिवार जीमने बैठा मेरे सासू जी ने थाल परोसे।

मेरे दाल-चूरमा बना है। आज तीज पूजेंगे।

खाते रहो चूरमा-दाल और गाते रहो परिश्रम के गीत! परिश्रम से ही सभी कार्य सफल होते हैं और हमारे समाज मे नव-जीवन का संचार होता है। प्रसन्नता पूर्वक परिश्रम करना ही सफलता का मूल मन्त्र है।

७–राजस्थानी पारिवारिक लोक-गीत

लडकी विवाह कर सुसराल मे जाती है तो उसे माता, पिता, भाई, बहिन और परिवार के दूसरे लोगो के साथ ही अपनी सहेलियो को छोडने का बडा दु ख होता है। साथ ही सुसराल मे लोग कैसे होगे, कैसा व्यवहार करेंगे ? यह शका भी बनी रहती है। सुसराल मे माँ-बाप के स्थान पर मिलते हैं सास और ससुर और भाई बहिन की जगह देवर, जेठ तथा देरानी-जेठानी होती है। सुसराल मे इनका व्यवहार अच्छा होता है तो बहू को बडी प्रसन्नता होती है। सास की प्रशसा करती हुई बहू कहती है कि मेरी सास कितनी अच्छी है कि मुझे घर मे अन्य लोगो की अपेक्षा अच्छा खाना मिलता है और सास मुझे बहुत प्यार करती है:—

म्हारी सास सुलखणी
कोई करै घणैरा लाड़
म्हारी सास सुलखणी।
घर कां ने घाले खीचड़ो
कोई म्हांने बूरो भात।
औरां ने पलियो एकलो
कोई म्हाने दोय र चार।
औरा ने चाटू लापसी
कोई म्हांने दोय र च्यार।
औरा ने दही री सबड़को
कोई म्हाने दोय र च्यार
औरा ने छाछ री टोकसी
कोई म्हाने टोकस च्यार।
औरा ने घी री मिरकली
कोई म्हांने मिरकली च्यार।

ओरा ने चमचो खीर रो
कोई, म्हाने चमचा च्यार।
सासू ने प्यारी कुल बहू
कोई की चौगणी सार।
म्हारी सासु सुलखणी
कोई करै घणेरा लाड़।
म्हांरी सासु सुलखणी ॥

मेरी सास सुलक्षणा है, वह मुझे बहुत प्यार करती है।

मेरी सास सुलक्षणा है। वह घर के लोगो को खीचडा परोसती है और मुझे बूरा-भात देती है। दूसरो को केवल एक चम्मच देती है तो मुझे दो-चार परोसती है। दूसरो को केवल एक चम्मच लापसी रखती है तो मुझे दो चार चम्मच परोसती है। दूसरो को थोडा सा दही देती है तो मुझे दो चार चम्मच देती है। दूसरो को थोडी सी छाछ देती है तो मुझे दो चार बार देती है। दूसरो को घी का केवल एक चम्मच देती है तो मुझे चार चम्मच देती है। दूसरो को एक चम्मच खीर का देती है तो मुझे चार चम्मच देती है।

सासू को कुल-बहू प्यारी है इसलिए वह उसकी चौगुणी सम्भाल करती है। मेरी सास सुलक्षणा है, वह मुझे बहुत प्यार करती है।

किन्तु यदि सास का व्यवहार बहू के प्रति अच्छा नही होता है तो बहू के दु ख का पारावार नही रहता। वह बडे परिश्रम के साथ भरसक अच्छा काम करने का प्रयत्न करती है किन्तु सुसराल वाले उसमे सदा कमी ही देखते हैं—

सासू सूघली लडै
फोग आलडो बलै

च्यार घड़ी के तड़के मै उठी जै, पीस्यो घड़ी दोय चूण
सासड आय विसराईयो, बहू-बड़, ओ काई पीस्यो चूण

ऊठ सवारी दलियो दलै
सासू सूघली लडै

आड़ा वार गवाड़ा बार्या, बार्या चानण चौक
सासड़ आय विसराईयो, बहुबड़ ओ काई बार्यो चानण चौक
ठाणां में गोबर सड़ै
सासू सूघली लड़ै
न्हाय धोय कर करी रसोई, खूब करी चतराई
सासड़ आय विसराईयो, बहूबड़ आ कांई करी रसोई
दाल में हींग सड़ै
सासू सूघली लड़ै
लैय दोय घड़ा पाणी ने चाली पूगी पणघट घाट
भर घडलो वेगी सी आयी, कठै ए लगायी अ वार
सास मोरी खडी ए लडै
फोग आलडो बलै
सासू सूघली लड़ै

गंदी सास लडती है और गीला इंधन जलता है।

मैं प्रात काल से ४ घडी पूर्व उठी और दो घडी (१ घडी का १० सेर) आटा पीसा। सासू ने आकर उलाहना दिया, बहूडी यह कैसा आटा पीसा? सवेरे ही उठ कर दलिया बना दिया।

गदी सास लडती हैं।

द्वार, गवाड़ी और चादण चौक बुहारे

सासू ने आकर उलाहना दिया बहूडी यह क्या चौक बुहारा? पशुओ के स्थान पर गोबर सड रहा है।

गदी सास लड़ती है।

मैंने नहा धोकर रसोई तैयार की और बहुत चतुराई की।

सास ने आकर उलाहना दिया। बहुडी यह क्या रसोई बनाई? दाल मे बहुत बू देती है!

गदी सास लड़ती है।

मै दो घडे पानी के लेकर पनघट पर पहुँची। तुरन्त ही घडे भर कर ले आई। मेरी सास खडी-खडी लडती है कि इतनी देर कहा लगा दी ?

गदी सास लडती है। गीला ईधन जलता है।

अत्यन्त दुखी हो कर बहू पीहर और ससुराल की तुलना करती हुई कहती है कि ससुराल मे बहुत दु ख है। पीहर मे जैसा आदर-प्रेम था वैसा सुसराल मे नही मिलता। यहा तो बार-बार उपेक्षा सहनी पडती है।

बडो ए दुहेलो, मां मोरी, सासरो जै
पीवरिया में, मा मोरी, लाडलीं जै
हीरा विचली लाल
सासरिया मे, मां मोरी, अणखावणी जै
पगां तल`ली लाव
पीवरिया में खेली, मां मौसी, खैलणा जै
सासरिया में काम
पीवरिया में खीर खाटी लागती जै
सासरिया मे मीठी लागे दाल
बडौ ए दुहैलो, मा मोरी सासरो जै

मा ! ससुराल मे रहना बहुत कठिन है।

मेरी मा ! पीहर मे मैं बहुत प्यारी थी। हीरे जैसे भाईयो मे लाल थी।

मेरी मां ! सुसराल मे मैं किसी को अच्छी नही लगती और पैरो के नीचे पडी रहने वाली कुए की रस्सी हू।

मेरी मा ! पीहर में मैं खूब खेल खेलती रही किन्तु सुसराल में बहुत काम है।

पीहर मे खीर भी खट्टी लगती थी और सुसराल मे दाल भी मीठी माननी पडती है।

सुसराल मे रहना मेरी मां ! बहुत कठिन है।

सुसराल में जब बहू बहुत अधिक परिश्रम और लोगो के बुरे व्यवहार से

दु:खी हो जाती है तो उसे पीहर की याद आती है। वह कहती है कि जैसा सुख मैंने पीहर मे प्राप्त किया वैसा नही मिलने वाला है। बचपन की मधुर स्मृतिया वह नही भूल सकती हैं और उनका इस प्रकार बखान करती है—

जिसडो सुख पीवर में पायो, जिसडो जुग में नांय
सूरज चढ़ता माय जगाती, उठ मेरी लाड़ कवार
आंख खुल्या धोय मुखडो धोती लेती गले रे लगाय
वाटकडी मे चूरती दही माडियों माय
बैठी बैठी गासा देती म्हारे मुखडा माय
एक गुडो एक गुडिया म्हने सीवा देती माय
सात सहेल्यां खेलण आती म्हारे आंगण माय
भर दोपारां बाबो सा आता, आता खेत कमाय
बाबो सा जीमण ने जाता मायड़ थाल लगाय
जद बाबो सा जीमण बैठता जद म्हे आती याद
बाबो सा म्हाने हेलो देता आवो जीमां लाड कवार
जद म्हे रूस जीमण नहीं जाती लुकती कूला लार
सौ सौ म्हारा न्होरा खाता। हाथ पकड़ ले जाय

जैसा सुख मैंने पीहर मे प्राप्त किया वैसा इस युग मे नही है।

मेरी मा सूरज चढने पर जगाती और कहती मेरी प्यारी लडकी उठ। आख खोलने पर मेरा मुह धोती और मुझे गले से लगाती।

मेरी मा कटोरी मे दही-माडा चूरती और बैठी-बैठी मेरे मुह मे गासे देती।

मेरी मा एक गुडिया और एक गुडा सी देती। सात सहेलियां मेरे आगन मे खेलने के लिये आती।

दोपहर मे मेरे बाबा खेत कमा कर आते। बाबा जीमने जाते तो मेरी मा थाल परोसती। जब बाबा जीमने बैठते तब मैं याद आती।

बाबा मुझे पुकारते, "आओ, जीमो मेरी प्यारी लड़की।"

जब मैं रूस कर जीमने नही आती और इधर-उधर जा छिपती तो मेरी सौ-सौ मनुहारें होती और मुझे हाथ पकड कर ले जाते ।

बहू के इन गीतो मे उसके हृदयोद्‌गार बडी ही स्वाभाविकता और सरसता से व्यक्त हुए हैं । सुसराल के सुख-दुख इन गीतो मे सजीव हो उठे है। वास्तव मे नई बहू के सुसराल के गीत हमारे गृहस्थ-जीवन के यथार्थ चित्र है ।

८–राजस्थानी लोक-गीतों मे पनघट

पनघट का नाम सुनते ही स्त्री-पुरुषो मे अनूठे प्रेम-भाव का सचार हो जाता है क्योकि पनघट पर ही गाव की नवेलिणियाँ' शृ गार सजा कर अपनी सहेलियो के साथ गीतो की रस-धारा बहाती हुई पानी भरने के लिए एकत्रित होती हैं। पुन पनघट पर ही घर बाहर की चर्चा होती है और कभी लोक-नृत्य 'फू दी' अथवा घूमर' का आयोजन हो जाता है तो मानो स्वर्ग ही धरती पर उतर आता है। स्वच्छ जल से पूरित लहरीले सरोवर का अथवा कुए-बावडी का किनारा, पानी मे झुक झूमने वाले हरे-भरे वृक्ष, सरोवर के दूसरे किनारे एक दूसरे से गले मिलते हुए पहाडो और पहाडियो की परछाई, आकाश से अठखेलिया करने वाले धवल सगमर्मरी भवनो का कौशल-रगीन वेप-भूपाओ से सुसज्जित नर, नारियो का मेला और फिर मोहक नृत्य के साथ रसीले गीतो की झकार ! ऐसे सुरम्य वातावरण मे मानव-हृदय ही नही समस्त प्रकृति भी आनन्दोलित हो उठती है।

पनघट के गीतो मे 'पणिहारी' प्रसिद्ध है । इस गीत की विशेषता मुख्यत नाटकीय दृश्य और मोहक सगीत-तत्व है।

राजस्थानी लोक गीतो मे पनघट का एक दूसरा दृश्य भी अ किन किया गया है। वर्षा के अभाव मे खेती सूखने लगती है और जनता मे निराशा फैलने लगती है। ऐसी अवस्था मे हमारी पणिहारियाँ 'विजु' रानी से इन्द्रजी को भेजने का आग्रह करती है।

इन्दरजी ने मोकल ए म्हारी बीजू राणी देस मे।
चौखा रूघाडू ओ इन्दर राजा उजला,
हरिया ढोलाउ ली मूग।

दुनियां तो जोवे राजा री वाट,
गऊत्रां जी करे पुकार ।
इन्दरजी ने मोकल ए म्हारी वीजू राणी देस मे ।

इन्दर जी तो गया गुजरात,
आवे जदी मेलूं ए म्हारी दुनियां थारा देस में ॥
लापी रन्धाडू ओ म्हारा इन्दर राजा सोलमी,
माये रेई लीलरिया नारेल ।

इन्दरजी ने०

लाडू सन्धाडू ओ म्हारा इन्दर राजा बाजणा,
मांये रेई ओ पिसता रो भेल ।

इन्दर जी ने०

गाय दुवाडू ओ म्हारा इन्दर राजा चाल री,
दूधा पकाडूली खीर ।

इन्दर जी ने०

भैंस दुवाडू ओ म्हारा इन्दर राजा बाखड़ी,
गडली रघाडूंली खीर ।

इन्दर जी ने०

ऊंचा रलाऊंली बैठणा ओ म्हारा इन्दर राजा,
झारी तो मेलूं इन्दर राजा जल भरी.

इन्दर जी ने०

पापड़ तलू जी पचास ओ म्हारा राजा,
अधर परूसूंली थाल ।

इन्दर जी ने०

लौंग सोपारी डोड़ा एलची ओ म्हारा इन्दर राजे
पाका तो पान पचास।

इन्दरजी ने०

जीमी चूठी नै चलू भर्‌या
काँई करूं मनवार ? म्हारा इन्दर राजा।

इन्दरजी ने०

मेरी बिजली रानी ! इन्द्र जी को देश मे भेजो।

इन्द्र राजा ! मैं उबले चांवल पकाऊं और हरे मूंग तैयार करवाऊं। इन्द्र राजा ! आपकी लोग राह देखते हैं और आपके लिए नारियें पुकार करती हैं। मेरी बिजली रानी ! इन्द्र जी को देश मे भेजो।

बिजली रानी उत्तर देती है, "इन्द्र जी तो गुजरात गये हैं।" मेरे लोगों, आने पर उनको तुम्हारे देश मे भेजूंगी।"

मेरे इन्द्र राजा ! आपके लिए घी की अच्छी लप्सी पकाऊं और अच्छे हरे ताजा नारियल डालूं।

इन्द्र राजा ! आपके लिए मैं अच्छे लड्डू तैयार करवाऊं और भीतर पिस्ते का मेल करवाऊं।

मेरे इन्द्र राजा ! आपके लिए मैं अच्छी गाय का दूध निकालूं और उस दूध से खीर पकाऊं।

इन्द्र राजा ! मैं आपके लिए अच्छी भैंस का दूध निकालूं और खूब उबली हुई खीर तैयार करवाऊं।

इन्द्र राजा ! ऊंचे स्थान पर मैं आपका आसन लगवा कर आपके लिए पानी की भरी हुई झारी रखूं। मेरे इन्द्र राजा ! मैं आपके लिए पचास पापड़ तैयार करूं और पाटिये पर थाल परोसूं।

ओ मेरे इन्द्र राजा ! मैं आपके लिए लौंग, सुपारी और इलायची प्रस्तुत करूं अथवा ५० पके हुए पान तैयार करूं।

मेरे इन्द्र राजा ! आपने भोजन कर हाथ मुह धोया, अब मै आपकी क्या मनुहार करूं ? और ऐसा ज्ञात होता है कि इन्द्र जी हमारी महिलाओ की पुकार सुन लेते है। वर्षा का भारी मडान होता है। कुए, बावडिया और तालाब भर जाते हैं। पणिहारियाँ उदयपुर में पिछोले का पानी भरते समय गाने लगती हैं—

भर लावो पाणी पीछौला रो।
सामजी री बावड़ी रो खारो खारो पाणी।
हाँ रै म्हारे पीछौला रो अमृत पाणी।
भर लावो पाणी पीछौला रो,
भर लावो पाणी सागर रो।
घी ढुलै तो म्हारो कई य न बिगड़े,
हाँ रै म्हारो पाणी ढुलै तो जीव जाय।
भर लावो०

आप पीवो नै आप रा गोठीड़ा ने पावो,
हाँ रै वनां वचार्यां मती ढोलो।
भर लावो०

पाणी जाऊं तो म्हारै कांकर भागै,
म्हारै आंगण होद खुदावो।
भर लावो०

हीरालाल रोवै म्हारो पन्नालाल रोवै,
हाँ ओ म्हारो मुन्नालाल हठ लागो।
भर लावो०

भर लाओ, पिछौले का पानी।

श्याम जी की बावडी का खारा—खारा पानी है, किन्तु मेरे पिछोले का पानी अमृत जैसा है। भर लाओ पिछौले का पानी। भर लाओ सागर का पानी।

घी गिरता है तो मेरा कुछ नही बिगडता, किन्तु पानी गिरता है तो मेरा जीव जाता है। भर लाओ पिछौला का पानी।

आप पीओ और अपने मित्रो को पिलाओ, किन्तु विना विचारे पानी मत गिराओ।

भर लाम्रो पिछौले का पानी।

पानी भरने जाती हूँ तो मेरे पैरो मे ककर लगते हैं। मेरे आंगन में हौज खुदवाम्रो।

भर लाम्रो पिछौले का पानी।

हीरालाल रोता है, मेरा पन्नालाल रोता है। हां जी मेरा मुन्नालाल हठ करता हैं। भर लाम्रो पिछौले का पानी।

पनघट पर कभी-कभी हमारी पणिहारियां उमंगित हो उठती हैं तो "घूमर" और "फूदी" नृत्य का सामूहिक आयोजन होता है और साथ ही गीत भी चलने लगता है—

सागर पाणी लेवा जाऊं सा नजर लग जाय,
म्हारी हींगलू री टीकी रो रग उड़-उड़ जाय।।
सागर पाणी०
म्हारी सौसनियां साड़ी रो रग उड़-उड़ जाय।
सागर पाणी०
यो सामली हवेली वालो लारां लागो आय।
सागर पाणी०
म्हारी पतली कमर राजा सौ सौ बल खाय।
सागर पाणी०

सागर पानी लेने कैसे जाऊ ? मुझे नजर लग जावे। मेरी हिंगलू की टीकी का रंग उड जावे।

मेरी सोसनिया साडी का रंग उड-उड जावे। सागर पानी लेने कैसे जाऊं ? मुझे नजर लग जावे। यह सामने की हवेली वाला मेरे साथ हो जावे। सागर पानी लेने कैसे जाऊं ? मुझे नजर लग जावे। मेरी पतली कमर सौ-सौ बल खाये।

वर्षा ऋतु मे राजस्थान के सभी गांव और नगर पनघट के राजस्थानी लोकगीतो से गुंजायमान हो जाते हैं। उदयपुर जैसे शहरो मे जहाँ तालाबो, बावडियो और कुम्रो की अधिकता है, वर्ष भर ही पनघट की रमणीय छटा का आनन्द लिया जा सकता है। वास्तव में पनघट पर पहुँचते ही राजस्थानी लोकगीतो की सरस वाणी से हमारी जनता का मन-मयूर नाच उठता है।

---

९. विवाह-गीतों में "विनायक"

प्रत्येक कार्य के प्रारभ मे "श्रीगणेशाय नम." का स्थान निश्चित रहता है और इसीलिए "श्रीगणेशाय नम." शुभारम्भ का प्रतीक हो गया है। किसी पुस्तक के प्रारम्भ मे गणेश-वन्दना आवश्यक मानी जाती है। द्वार के शीर्ष भाग पर और ड्योढी (प्रवेश द्वार का आन्तरिक भाग) मे गणेशमूर्ति की स्थापना होती है, जिससे उनके नाम गणेश ड्योढी, गणेश पोल, गणेश दरवाजा आदि प्रचलित हो जाते हैं। विवाह आदि कार्यों के प्रारम्भ मे गणेश-स्थापना और पूजा, गणेश महोत्सव, गणेश चतुर्थी का व्रत और गणेशजी की धार्मिक लोककथाओं का श्रवण भी हमारे यहाँ बहुत प्रचलित है। ऐसी सास्कृतिक महत्ता के कारण राजस्थानी लोक-गीतो मे श्री गणेशजी का महत्वपूर्ण स्थान है। विवाह के प्रारम्भ मे गणेशजी के गीत गाये जाते हैं और गणेशजी को विशेष सहयोगी के रूप में अङ्कित किया जाता है—

चालो ओ गजानन्द जोसी रै चालां,
तो लगन लिखाई वेगा आवां ओ गजानन्द
कोटा री गादी पै नौबत बाजै
नौबत बाजे इ दरगढ़ गाजै
तो जरण जरण झालर बाजे ओ गजानन्द
कोटा री गादी पै नौबत बाजै।
चालो ओ गजानन्द सोनी रै चाला
तो आछा आछा गैणला गढ़ाई वेगा आओ ओ गजानन्द
कोटा री गादी पै नौबत बाजै।
चालो ओ गजानन्द माली रै चालां
आछा आछा सैवरा मौलावां ओ गजानन्द
कोटा री गादी पै नौबत बाजै।
चालो ओ गजानन्द मोची रै चालां

आछी आछी पनियां मौलावां ओ गजानन्द
कोटा री गादी पे नौबत बाजै।
चालो ओ गजानन्द सजनां रै चालां
तो लाडली परणाई वेगा आवां ओ गजानन्द
कोटा री गादी पै नौबत बाजै।

राजस्थान के प्रत्येक भाग मे गणेशजी के मन्दिर हैं। रणथम्भोर, (सवाई माधोपुर), मोती डूगरी (जयपुर), उदयपुर और गोगुन्दा (मेवाड) तथा इन्द्रगढ (कोटा) के गणेशजी बहुत विख्यात हैं। रणथम्भोर के गणेशजी के गीत प्रायः सारे राजस्थान में गाये जाते हैं जिनसे इनकी महत्ता सर्वोपरि ज्ञात होती है—

गढ़ रणतभंवर सूं आवो ओ विनायक
करो न अण चिंती बरदड़ी
एक पूछत पूछत नगर ढिंढोरो घर
किशनजी रो वर किस्यो जी
एक ऊंची सी मैड़ी लाल किंवाड़ी
कैलू झबूके बांरे बारणे
एक पैलो तो बासो बसजै ओ कांकड
कांकड़ करवा झुकावसी जी
एक दूजो तो बासो बसजै ओ बागां
बागां से हरियो बधावसी जी
एक अगलो तो बासो बसजै ओ पणघट
पणघट कलस बंधावसी जी
एक चौथो तो बासो बसजै ओ चौहटे
चौहटे चवर ढुलावसी जी
एक पांचमो तो बासो बसजै ओ तोरण
तोरण तुरी ए बजावसी जी

पीताम्बर पहरावस्यां जी
गणपत विनायक भूखा न रैवो जी
लच पच लापसी जिमावस्यां जी
गणपत विनायक तिसाया न रैवो
गंगाजल नीर पिवावस्यां जी
मांड्यो तो चूंड्यो आवो ओ विनायक
कुमारी का कलश जूं ।

इस प्रकार राजस्थानी लोक गीतो मे विनायकजी को आमंत्रित कर उनसे घर की सुख-शान्ति और ऐश्वर्य-वृद्धि के लिए निवेदन किया जाता है। विनायक-विषयक परम्परागत लोकगीत लोक-जीवन मे धार्मिक भावनाओ का प्रतिनिधित्व करते हैं।

एक छठो तो बासो बसजै ओ मायां
मायां मैं मंगल गावसी जी
एक सातमों तो बासो बसजै ओ फेरां
बामण वेद सुणावसी जी

गणेशजी से विवाह के अवसर पर खाली हाथ आने की आशा नहीं की जाती। जिस प्रकार घर का प्रमुख व्यक्ति बाहर से विवाह का आवश्यक सामान साथ लेकर आता है उसी प्रकार गणेशजी से भी कहा जाता है—

भर्‌यो भतूल्यो आइयो गणपत
बिणजारा री बालद जूं
एक गुड़ की गूंण भराइयो
विनायक शक्कर बदजो कोतला जी
एक चांवल चगेड्या बदाइयो विनायक
हरिया जी मूंग मडोर का जी
एक घीरत घीलोड्या बधाइयो विनायक
तेल बधजो सीधडा जी

इस प्रकार रणतभवर से गणेशजी विवाह के अवसर पर मानो पाहुने के रूप मे पधारते हैं और इनका भी अन्य पाहुनो की भाँति आदर-सत्कार होता है—

गणपत विन्दायक धरती न बैठो
घाल सिंहासण बैठो जी
गणपत विनायक बासी न रैवै
दूधा सूं स्नान करावस्यां जी
गणपत विनायक सूना न रैवो
रोली सूं तिलक कढावस्यां जी
गणपत विनायक उगाड़ा न रैवो

१०. राजस्थानी लोकगीतों में शौर्य-भावना

शौर्य और स्वाधीनता सुसंस्कृत तथा स्वाभिमानी जन-समाज की स्वाभाविक भावना होती है, इसलिए हमारा समाज सभ्यता के क्षेत्र में अग्रसर होने के साथ ही स्वाधीनता-प्रेमी होता गया है। पराधीनता मानव-समाज को अशिक्षा, अन्धविश्वास, दुःख, दरिद्रता और घोर पतन की ओर ले जाती है। स्वाधीनता सुख, स्वावलम्बन, समृद्धि और सभ्यता के चरम उत्कर्ष की ओर अग्रसर करती है। इसलिए हमारे साहित्य में स्वाधीनता की रक्षा हेतु शौर्य-भावना अनेक रूपों में उपलब्ध होती है।

राजस्थानी लोकगीत राजस्थानी जन-समाज के सरल, सरस और स्वाभाविक संगीत-सम्बन्धी उद्गार हैं इसलिए इनमें स्वाधीनता की भावना भी मिलती है। स्वाधीनता की भावना का मूल आधार देश-प्रेम होता है, क्योंकि देश-प्रेम के अभाव में हम अपनी अथवा अपने देश की स्वाधीनता की रक्षा नहीं कर सकते। हमारे शास्त्रकारों ने भूमि को माता मानते हुए लिखा है—"माता भूमिः पुत्रोऽहम्॥" राजस्थानी जन-समाज ने स्वाधीनता की भावना से प्रेरित होते हुए देश-प्रेम का चित्रण इस प्रकार किया है—

म्हारो देसड़ो

वाल्हो लागे छै म्हारो देसड़ो
किस कर जावूं परदेस वाल्हा जो ?
ऊँचा ऊँचा राणाजी रा गोखड़ा,
नीचे म्हारे पीछोला री पाळ . वाल्हा जो।
बादळ छाया देस में
नदियां नीर हिलोर,
बादळ चमके बीजळी
चमक चमक झड़ लाय।

सरवर पीणीडै मैं गई,
भींजै म्हारे सालूड़े री कोर ।
वाल्हो लागै छै म्हारो देसड़ो,
किमकर जाऊँ परदेस वाल्हा जो ?

अर्थात्—

मेरा देश प्यारा लगता है । प्यारे ! मैं परदेश कैसे जाऊँ ?

ऊँचे ऊँचे राणाजी के झरोखे हैं और नीचे पिछौला सरोवर का बाघ है ।

देश मे बादल छाये हुए है और नदियो मे पानी लहरा रहा है ।

बादलो मे बिजली चमकती है और चमक-चमक कर पानी बरसाती है ।

मैं पानी भरने सरोवर गई ।
मेरे सालू की कोर भीजने लगी ।
मेरा देश मुझे प्यारा लगता है ।
प्यारे, मैं परदेश कैसे जाऊँ ?

राजस्थान के राजाओ ने देश की राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियो से विवश होकर सन् १८१८ ई० के लगभग अग्रेजो से सन्धिया करते हुए अपनी स्वाधीनता खो दी, किन्तु राजस्थान के अनेक शूरवीरो ने स्वाधीनता के लिए सघर्ष किया । ऐसे शूरवीरो मे शेखावाटी के डूगजी, जवाहरजी, लोटियो जाट, करणियो मीणो, राणा रतनसिंह, नाथूसिंह देवडा, चैनसिंह, कुशलसिंह आदि प्रमुख थे, जिनके विषय मे अनेक लोक-गीत प्रचलित हैं । डूगजी और जवाहरजी सीकर के बठोठ ठिकाने के राजपूत थे । इन्होने लोटिया जाट और करणिया मीणा की सहायता से सन् १८३३ ई० मे अग्रेज सरकार के विरुद्ध स्वाधीनता का सघर्ष किया । इन्होने वीरतापूर्वक मेजर फारेस्टर की सेना के ऊट और घोडे छीन लिये । अग्रेज सैनिको ने बडी कठिनाई से डूगजी को पकड कर आगरे के दुर्ग मे बन्द कर दिया, किन्तु इनके साथियो ने आगरे का दुर्ग तोड कर इनको छुडवा लिया । तदुपरान्त इन वीरो ने सन् १८४७ ई० मे नसीराबाद छावनी का माल लूट कर निर्धन प्रजा मे बाट दिया । अग्रेज शासको ने इन

वीरो को पकडने मे अपनी पूरी शक्ति लगा दी। अन्त मे बीकानेर के महाराजा रतनसिहजी ने जवाहरजी को और जोधपुर के महाराजा तख्तसिहजी ने डूगजी को बन्दी बना लिया। राजस्थान की जनता इन शूरवीरो के गीत इस प्रकार गाती है—

सात सवारां नीसर्‌या, वे हुया कतारां लार,
चलती बोरी काट दी, वां मूगा दिया खिड़ाय।
चुग चुग हार्‌या बालदी, चुग चुग छक्या गवाल,
चुग चुग दुनिया धापगी, वा जै बोलती जाय,
सात ऊट दरबां का भरिया, पोकरजी ने जाय,
पोकरजी रे घाट पर वां, जाजम दिवी बिछाय,
गरीब गुरबां बामणां ने, हेलो दियौ भराय,
रुपियो रुपियो दियो बामणां, मोरां चारण भाट।
असी मोर दी नानगसाही, साको दियो जुड़ाय।

अर्थात्—

वे सात सवारो के साथ निकले और कतारो के साथ हो गये। उन्होने चलती हुई बोरी काट दी और मूंगो को गिरा दिया। चुन चुन कर बालदी और ग्वाल थक गए। चुन चुन कर दुनिया तृप्त हो गई और वह जय बोलती हुई जाती है। द्रव्य के सात ऊँट भर कर वे पुष्कर पहुँचे और वहा के घाट पर उन्होने जाजम बिछवा दी। उन्होने गरीबो और ब्राह्मणो की आवाज लगवा दी। रुपया रुपया ब्राह्मणो को दिया और मुहरें चारण-भाटो को दी। अस्सी नानगसाही मुहरें देकर उन्होने अपने नाम का साका जुडवा दिया।

भरतपुर के महाराजा रणजीतसिह ने मराठा वीर जसवन्तराव होल्कर को भरतपुर मे शरण दी तो अग्रेजो ने पूरी शक्ति से भरतपुर पर आक्रमण कर दिया। अंग्रेजो ने होल्कर के साथी अमीर खा को अपनी ओर लालच देकर मिला लिया, किन्तु रणजीतसिंह ने भरतपुर और होल्कर की रक्षा करते हुए वीरतापूर्वक सघर्ष किया। भरतपुर के इस स्वाधीनता-सग्राम के विषय मे राजस्थानी भाषा का यह लोकगीत गाया जाता है—

गोरा हट जा

आछो गोरा हट जा, राज भरतपुर रो,
भरतपुर गढ़ बांको, किलो रे बांको,
गोरा हट जा ।
यूं मत जाणो गोरा, लड़े रे बेटा जाट रा
ए कुंवर लड़े रे राजा दशरथ रा ।
गोरा हट जा ।
गढ रे उभा रे म्हारा बावन भैरूं
कांगरा ऊभी रै चौसठ जोगणियां
गोरा हट जा ।
चक्कर चलावेला म्हारा बावन भैरूं,
खप्पर भरेली म्हारी चौंसठ जोगणियां ।
गोरा हट जा ।

अर्थात्—

गोरे लोगो हट जाओ, यह भरतपुर का राज है ।
भरतपुर का किला बाँका है,
गोरे लोगो हट जाओ ।
ऐसा मत समझना कि जाट के लड़के ही लडते हैं,
वास्तव मे राजा दशरथ के कुंवर लड रहे हैं,
गोरे लोगो हट जाओ ।
गढ पर हमारे बावन भैरव खडे हैं,
कगूरो पर चौंसठ जोगनिया खडी हैं,
गोरे लोगो हट जाओ ।
मेरे बावन भैरव चक्कर चलावेंगे,
मेरी चौसठ जोगनिया खप्पर भरेंगी,
गोरे लोगो हट जाओ ।

सन् १८५७ ई० के भारतीय स्वाधीनता-सग्राम मे राजस्थान का पूर्ण । रहा । नीमच, नसीराबाद, कोटा और आऊवा इस स्वाधीनता सग्राम के

विशेष केन्द्र बन गये। अ ग्रेज सेनाओ को राजस्थान मे अनेक बार परास्त होना पडा। आऊवा के शूरवीर ठाकुर कुशलसिहजी इस सग्राम मे अग्रणी थे। मारवाड मे आसोप, गुलर, आलणियावास, लाम्बिया आदि के और मेवाड के सलूम्बर, रूपनगर, लसाणी, आसीद आदि के शूरवीर नेता अपने सैनिको सहित आऊवा के दुर्ग मे एकत्रित हो गये। एरनपुरा के और डीसा के क्रान्तिकारी सैनिक भी आऊवा मे डट गये। पहली ही लडाई मे केप्टिन मेसन मारा गया और जोधपुर के मुसाहिब कुशलराज सिघवी तथा दीवान विजयमल मेहता जो अ ग्रेजो के सहायक थे, भाग खडे हुए। अ ग्रेज शासको ने अपनी इस पराजय से लज्जित होकर चारो ओर मे शक्ति एकत्रित की तथा भारी तोपखाने के माथ आऊवा को घेर लिया। इस सघर्ष मे आऊवा के वीरो ने अन्त तक सघर्ष किया। इन शूरवीरो के गीत इम प्रकार हैं—

झल्ले आऊवो

वांणिया वाली गोचर मांय काला लोग पडिया ओ।
राजाजी रे भेलै तो फिरगी लडिया, ओ काली टोपी रा।
हे ओ, काली टोपी रा फिरंगी फेलाव कीधो ओ, काली टोपी रा।
बारली तोपा रा गोला, धूलगढ़ में लागे ओ,
मांयली तोपां रा गोला तम्बू तोड़े ओ, झल्ले आऊवो।
है ओ, झल्ले आऊवो, आऊवो धरती रो थंबो ओ, झल्ले आऊवो।
मांयली तोपां तो छूटे आड़ावलो धूजे ओ,
आऊवा रा नाथ तो सुगाली पूजे ओ, झगड़ो आदरियो,
है ओ झगड़ो आदरियो, आऊवो झगड़ा ने बाको ओ,
झगड़ो आदरियो।

राजाजी रा घोड़लिया काला रे लारे दौड़े ओ।
आऊवे रा घोड़ा तो पछाड़ी दौड़ै ओ, झगड़ो आदरियो।
आऊवा री सूरजपोल मुकनो हाथी घूमे ओ,
जोधाणा रा किला में कामेती धूजे ओ, झगड़ो आदरियो।

हे ओ झगड़ो व्हेण दो झगडा सें थांरी जीत व्हेला ओ,
झगड़ो होवा दो।

अर्थात्—

बनिये वाली गोचर जमीन मे काली टोपी वाले सिपाही पडे है।
राजाजी के साथ काली टोपी वाले फिरगी लडते हैं।
काली टोपी वाले फिरगी ने फैलाव किया है।
बाहर की तोपो के गोले धूलकोट मे लगते हैं।
भीतर की तोपो के गोले तम्बू तोडते हैं।
आऊवा युद्ध करता है।
आऊवा युद्ध करता है, आऊवा धरती का सूरज है।
भीतर की तोपें छूटती हैं तो अरावली पर्वत हिलने लगता है।
आऊवा के स्वामी सुगाली माता को पूजते है।
उन्होने युद्ध ठान लिया है,
आऊवा युद्ध मे तेज है,
उसने युद्ध ठान लिया है।
जोधपुर राजाजी के घोडे क्रान्तिकारियो के पीछे दौडते हैं।
आऊवा के घोडे युद्ध करने को आतुर हो रहे हैं।
युद्ध ठन गया है।
आऊवे की सूरजपोल मे मुकना हाथी घूम रहा है।
जोधपुर के किले मे कामदार कापने लगे हैं।
आऊवा युद्ध करता है।
युद्ध होने दो।
आऊवा वालो! युद्ध होने दो। युद्ध मे तुम्हारी विजय होगी।
इसी प्रकार का एक गीत यह है—

मुजरो ले ले

मुजरो ले ले नी बावलिया, होली रंग राची,
के मुजरो ले ले नी।

भायां री सिकार माथै थारा हाकम चढ़िया ओ,
गोली रा लागोड़ा भाई भाखर भिलिया ओ
के मुजरो ले ले नी।
झाड़ी जंगां मे, हां के झाड़ी जगां मे,
गोलियां चांदी री चाले ओ
के झाड़ी जंगा मे।
टोली रा टीकायत वाने गोरा ले ले ने आया है
कोट री बुरजां रे उपर भाटी लड़िया ओ,
के मुजरो ले ले नी।
भालां रे भलकां में
भाटी नै ऊदावत भिडग्या ओ
के मुजरो ले ले नी।
वा वा मुजरो ले ले नी, मेलां री जगा गायां चरती ओ,
के मुजरो ले ले नी।

अर्थात्—

मुजरा ले लो, बावलिया होली रंग राची है।
मुजरा ले लो।
भाइयो की शिकार के लिये ही तुम्हारे हाकिमो ने चढाई की है।
गोली मारे हुए भाई पहाडो मे मिल गये हैं।
मुजरा ले लो।
हा ओ झाड़ झखाडो के युद्ध मे,
चादी की गोलिया चलाई गई।
झाडी झंखाडो के युद्ध मे रिश्वत दी गई,
टोली के नायक पर तुमने गोरो के साथ चढाई की,
कोट की बुर्जों पर भाटी लडे हैं।
मुजरा ले लो।

भालो की चमक मे साथियो ने तलवारें चलाई ।
चलती हुई गोलियो के सामने भाटी और उदावत भिड गये ।
वाह वाह मुजरा ले लो,
महलो की जगह उजाड हो गया और गायें चरने लगी
मुजरा ले लो ।

इस प्रकार के गीतो मे राजस्थानी जनता द्वारा स्वाधीनता-प्रेमी वं क्रान्तिकारियो की भरपूर सराहना करते हुए अंग्रेज शासको और उनके सहाय का विरोध प्रकट किया गया है। स्वाधीनता, शौर्य और बलिदान की भावन से पूर्ण ऐसे वीर गीत जब तक हमारे देश मे गूंजते रहेगे, जन-जन मे वीरता भावना प्रेरित करते रहेगे ।

११. निहालदे

"निहालदे" नामक कथागीत राजस्थान मे बहुत प्रसिद्ध है। यह कथा गीत एक विशाल पवाडे के रूप मे मुख्यत: शेखावाटी मे बडे चाव से गाया और सुना जाता है। निहालदे के गाने वाले मुख्यत जोगी हैं और लोगो का अनुमान है कि जोगियो ने ही समय-समय पर इस महागीत का निर्माण किया है। इस पवाडे मे ५३ खड है और इससे बडा पवाडा सभवत राजस्थानी भाषा को छोड कर अन्य किसी भाषा मे नही है।

"निहालदे" नामक लोकगीत मे शात, शृगार, हास्य, वीर और करुण रस की अनूठी छटा है। विरह-वर्णन तो जैसा उत्कृष्ट इस गीत मे हुआ है, वैसा रामायण को छोड कर अन्य किसी काव्य मे नही दिखाई देता। इसलिए "निहालदे" का राजस्थानी साहित्य मे विशेष महत्व है।

इस गीत की नायिका निहालदे है और नायक का नाम सुलतान है। इसलिए इसका नाम "निहालदे सुलतान" जनता मे प्रसिद्ध हो गया है। निहालदे सुलतान की कहानी पर आधारित नाटक भी राजस्थान के ग्रामीण लोगो मे बडे चाव से खेले और देखे जाते हैं।

निहालदे इन्द्रगढ के राजा मगपारि की राजकुमारी थी। निहालदे विवाह योग्य हुई तो राजा ने स्वयवर के निमन्त्रण चारो ओर के राजकुमारो को भेजे। स्वयवर के लिए वसन्त पचमी की तिथि निश्चित की गई। चारो ओर के सैकडो ही राजा अपने राजकुमारो सहित एकत्रित हुए।

राजकुमारी निहालदे की ओर से घोषणा की गई कि जो राजकुमार ऊपर बँधी हुई मछली की परछाई को नीचे तेल मे देखते हुए तीर से मछली को बेंध देगा वही वरमाला का अधिकारी होगा।

इसी अवसर पर कचीलगढ का राजा भी अपने राजकुमार फूल कुँवर और पाहुने सुलतान के साथ पहुँचा। सुलतान ईडर का राजकुमार था और प्रसिद्ध चकवे

वेण के वंशज मेनपाल का पुत्र। एक बार सुलतान बाग मे तीर से निशाना साध रहा था। अचानक ही तीर एक ब्राह्मण-कन्या के पानी से भरे हुए कलश के जा लगा जिससे कलश फूट गया और कन्या के कपडे पानी से भीग गये।

इस घटना से ब्राह्मण ने उग्र रूप धारण किया और राजा के दरबार मे पहुँच कर राजकुमार सुलतान की शिकायत कर दी। राजा ने सोचा—सुलतान बचपन मे ही प्रजा को सताने लगा है तो बडा होने पर तो प्रजा का जीवन ही दूभर कर देगा। राजा ने कुँवर को बारह वर्ष का देश-निकाला दे दिया।

राजकुमार सुलतान दूसरे देशो मे घूमता हुआ भीख माँगने लगा। समय का फेर कि एक राजकुमार को घर-घर का भिखारी होना पडा। इस प्रसग मे 'निहालदे सुलतान' मे गाया जाता है—

समै भी चिणवा दे रे भाई कूवा बावड़ी,
समै मंगा दे घर-घर भीख,
समै बली है रे मोटो, नर को कै बली जी,
समै भी हिंडा दे रे एक छन माँ कै पालणें।
समै भी बँधा दे सिर के मोड़,
समै भी चढा दे चार जणा के घोड़ले,
ईडर की नगरी में यो धनी एक पल ओपतो,
करता गादीपत राज जुहार।
पिरजा भी लेती बा राजकुमार का बारणा,
घर-घर डोले रे यो एक पल फलसा झांकतो॥

भीख माँगते हुए सुलतान कचीलगढ जा निकला। राजमार्ग से कमध्वज राव की सवारी जा रही थी। इतने मे एक बैल ने सुलतान के टक्कर मारी सो सुलतान औंधे मुह जा गिरा। सुलतान की झोली मे से दाने बिखर गये और वह पुन उन्हे भरने लगा। राजा घोड़े से उतर कर सुलतान के पास पहुँचा और कहने लगा, "दीखते तो राजकुमार जैसे हो, फिर यह वेप क्यो धारण कर रखा है ?"

सुलतान राजा की बात सुन कर रोने लगा। तब राजा ने सुलतान को अपने महल मे ठहरा दिया। रानी ने उसके बडे-बडे बाल कटवा दिये और अच्छे

कपडे पहिना कर उसका पूरा आदर-सत्कार किया, फिर सुलतान भी इन्द्रगढ के स्वयंवर मे पहुचा।

स्वयवर में कोई अन्य राजकुमार मछली वेधने में सफल नही हो सका। राजकुमार फूलंकुँवर भी असफल रहा। सुलतान ने तुरन्त ही तेल मे परछाई देखते हुए मछली को वेध दिया और इन्द्रगढ की राजकुमारी निहालदे से विवाह कर लिया।

सुलतान विवाह कर लौटा और फूलकुँवर असफल हो गया तो फूलकुँवर की माँ को बहुत बुरा लगा। उसने कह ही दिया "तू कल तो भीख माँगता था और आज गढ़पति की लडकी से विवाह कर आया है।"

यह सुनते ही निहालदे को छोड कर सुलतान वहाँ से जाने लगा। निहालदे ने कहा, "मुझे भी साथ ले लीजिये—जो आपकी गति सो मेरी गति।"

सुलतान ने कहा, "मेरा क्या ठिकाना? मैं कही जाकर ठिकाना कर आऊँ। अगली तीज को आकर ले जाऊँगा। रावजी तुम्हे अपनी पुत्री की तरह ही प्रेम से रखेंगे।"

इस घटना के पश्चात् निहालदे के दिन दु ख मे बीतने लगे। यो तो राजा ने अलग बाग मे निहालदे को ठहराया, किन्तु फूलकुँवर उसको कई तरह के लोभ दिखाने लगा। निहालदे को न सोते चैन, न जागते चैन। फिर थोडे ही दिनो मे कमधज राव की मृत्यु हो गई तो निहालदे का जीवन कठिन हो गया।

सुलतान नरवरगढ पहुचा और राजा ढोला के दरबार मे लाख टका वेतन पर काम करने लगा। इधर फूलकुँवर ने सुलतान को झूठा समाचार पहुँचा दिया कि निहालदे की मृत्यु हो गई। इस समाचार को पाकर सुलतान बहुत दुखी हुआ।

इधर एक नही, कई श्रावणी तीजें निकल गई तो निहालदे बहुत दुखी हुई। उसने मारु राणी को तीज पर सुलतान को भेजने का परवाना लिखा और सूचना भेजी कि अगर अगली तीज पर सुलतान न आवेगे तो वह जल कर प्राण त्याग देगी। फूलकुँवर से छिपा कर किसी प्रकार पत्र पहुँचा दिया गया, किन्तु सुलतान को पहुँचने मे थोडा विलम्ब हो गया और निहालदे ने अपने प्राण त्याग दिये।

निहालदे ने सुलतान की अन्तिम प्रतीक्षा करते हुए गाया—

उड़ जा रे काग सांझ पड़ी,
चार पहर बाटड़ली जोई, मेड़्यां खड़ी रे खड़ी,
रिमझिम बरसै नैण दीरघड़ा,
लग रही झड़ी रे झड़ी।
पल पल बीतै बरस बरोबर,
बीती जाय रे घड़ी।
उड़ जा रे काग सांझ पड़ी ॥

इस प्रकार निहालदे का चरित्र बहुत उज्ज्वल है। निहालदे का विरह-दुःख उर्मिला से बढकर है क्योंकि उर्मिला को विश्वास है कि १४ वर्ष पश्चात् लक्ष्मण अवश्य लौट आवेंगे। किन्तु निहालदे के विरह की सीमा उत्तरोत्तर बढ़ती हुई और असीम है। अन्त मे निहालदे द्वारा किया गया त्याग तो उर्मिला से विशेष है ही। फिर उर्मिला तो अपने घर मे ही है किन्तु निहालदे को अपने शत्रु फूलकुँवर के बाग मे ही बारह वर्ष पूरी तपस्या से व्यतीत करने पडते हैं।

वास्तव मे राजस्थानी इतिहास मे वर्णित त्याग और बलिदान के अनुरूप ही निहालदे का चरित्र सम्बन्धित गीत मे प्राप्त होता है। ऐसे उज्ज्वल चरित्रो से हमे आज भी कर्तव्यपरायणता, त्याग और साहस की प्रेरणा प्राप्त होती है।

१२. पाबूजी

पाबूजी के अलौकिक चरित्र से प्रभावित होकर राजस्थान की जनता इनकी देवता के रूप मे पूजा करती है। पाबूजी के स्थानक राजस्थान के कई गावो मे मिलते हैं और पाबूजी का मन्दिर फलोदी से १८ मील दूर 'कोलू' गांव मे बना हुआ है।

राठोड़ो के मूल पुरुष आसथानजी के पुत्रो में धांधलजी बड़े प्रतापी थे। पाबूजी इन्ही वीर धांधलजी के पुत्र थे। पाबूजी एक दृढ़प्रतिज्ञ, शूरवीर, शरणागत-रक्षक और देवतुल्य पुरुष थे। इन्होने आना बाघेला के चादोजी-डाभोजी आदि सात वीर थोरी नायको को आश्रय देकर बडे ही साहस का कार्य किया और इन नायको ने भी मरते दम तक पाबूजी का साथ देकर अपने कर्तव्य का पालन किया। इन नायको के वशज आज भी पाबूजी री पड अर्थात् चित्रपट प्रदर्शित करते हुए "पाबूजी रा पवाडा" गाकर इस वीर-चरित्र का सदेश राजस्थान के घर-घर मे पहुँचाते हैं। इन पवाडो की सख्या ५२ है और इनमे राजस्थानी सस्कृति का सजीव चित्रण हुआ है।

एक समय उमरकोट की सोढी राजकुमारी रंगमहलो मे बैठ कर नौसर हार के मोती पिरो रही थी। बाये-दाये भोजाइयो की 'बाड' लगी हुई थी और चारो ओर सात सहेलिया बैठी हुई थी। इसी समय पाबूजी आना बाघेला को मारते हुए और अपनी भतीजी को देने के लिए देवडा राव के ऊट लेकर महल के नीचे होकर निकले। घोडो की घमामान मच गई और उनकी टापो से धरती कांपने लगी। सोढी राजकुमारी का कोट गु जायमान हो गया और खिडकियो तथा दरवाजो के किवाड खडकने लगे। थाल के मोती भी हिलने लगे और यह देख कर—

चमक्यो चमक्यो सहेल्यां रो साथ
कोई भावज्यां रो चमक्यो जाझो झूमको,
हाली हाली चुड़लां केरी लूम
कोई बाजूबन्द रा हाल्या पोया झूमका

खुलगी खुलगी नकवेसर री गूंज
कोई चूनड़ तो सालूड़ा भीणी सल भर्‌यो
हाली हाली मोत्यां बिचली लाल
कोई काना केरा हाल्या वाली भूटणा
हाल्या हाल्या छाती परला हार
कोई पायलड़ी तो खुड़की बिछिया बाजिया।

सभी सहेलिया उठ कर बाहर देखने लगी और कहने लगी कि यह तो शूरवीर पाबूजी हैं और कोमलगढ जा रहे हैं। साथ मे फौजो का सरदार भूरभाला और चादोजी-डामोजी जैसे शूरवीर हैं। फिर सहेलियां कहती हैं—

देखोजी बाईजी ! पाबूजी राठौड़
कोई धरती तो राचै वांरी चाल सूं
पाबूजी सरीसा होगा बिरला जुग में भूप
कोई जसड़े पाबूजी जुग में ऊजला।
पाबूजी बाईसा लिछमा रो अवतार
कोई राठौड़ी धरती में मुड़कै आविया
थारे ओ बाईजी ! भाई भतीजा बोत
कोई पाबूजी सरीसो जिणमे को नहीं
थारे ओ बाईजी राव घणा उमराव
कोई पाबूजी रे उंणियारे कुल में को नहीं।
देखी म्हें बाईजी थारी सगली फौज
कोई फौजां में पाबू रे जोड़े को नहीं
एकर बाईसां छाजे ओ चढ़ देख
कोई किसी अक पाबूजी री सूरत मनोकरी ॥

और फिर सहेलिया पाबूजी और सोढीजी की तुलना करती हुई कहती हैं कि सोढी राजकुमारी फूल हैं तो पाबूजी इस युग के देदीप्यमान सूरज हैं। सोढी चतुर चकोर हैं तो पाबूजी अपने कुल मे देदीप्यमान चांद हैं। सोढी बादल मे

चमकने वाली बिजली है तो पाबूजी श्रावण के गाजते आसमान हैं। सोढी मछली है तो पाबूजी सरोवर हैं और सोढी दीपक की लौ है तो पाबूजी उसके प्रकाश हैं।

पाबूजी और सोढी राजकुमारी का विवाह निश्चित हो गया। पुरोहित पाँच मोहरें और एक सोने का नारियल लेकर कोमलगढ पहुँचा। वहाँ पनघट पर पहुँच कर पनिहारियो से पाबूजी का ठिकाना पूछा। पनिहारियो ने कहा—

अगूणी कहीजै ओ जोसी पाबूजी री पोल
कोई केल तो भबरखै रै वां पाबूजी री पोल।
धोला तो कहीजै रे वा पाबूजी का म्हेल
कोई लाल तो किंवाड़ी रे के पोल भंवर के पालिया
पोल्यां रे कहीजै रे वां चन्नण का किंवाड़
कोई आमा सामां कहिये पाबूजी रा गोखड़ा।

विवाह की तैयारी हुई। पीले चावल निमत्रण के रूप मे चारो ओर भेजे गये। प्रधान चादोजी ने सभी देवी-देवताओ और राव-उमरावो को निमन्त्रण भेजा। बरात के रवाना होने का समय समीप आया। ढोल बजने लगे और बराती एकत्रित होने लगे। पाबूजी की सवारी के लिए देवल चारणी की कालमी घोडी, जिसकी नामवरी चारो ओर फैली हुई थी, मागी गई। देवल देवी इस शर्त पर घोडी देती है कि उसकी गायो की रक्षा का भार पाबूजी पर होगा। पाबूजी ने कहा—किसी भी तरह होगा तुम्हारी गायो की रक्षा करूंगा। केसर कालमी पर सवार हो पाबूजी बरात के साथ उमरकोट पहुँचे। मडप मे प्रधान चादोजी और डाभोजी, भाई-बन्धु और सगे-सम्बन्धी बैठे हुए थे। मगल गीत गाये जा रहे थे। सोढो के घर आज रग बरस रहा था। फेरे होने लगे। सोढीजी पाबूजी के साथ धीरे-धीरे पैर रख रही थी। दूसरे फेरे मे दोनो के प्राण एक होकर दूध-पानी की तरह मिल गये। इतने मे घोडी हिनहिनाने लगी, पैर पटकने लगी और देवल की आवाज सुनाई दी कि "जायल खीची ने मेरी गायो को घेर लिया है।" इतना सुनते ही पाबूजी ने हथलेवा छुडा लिया और जाने लगे। सोढीजी ने पाबूजी का पल्ला पकड कर पूछा—

कोई तो गुन्नो ओ पाबू करियो म्हारो बाप,
कोई कांई तो गुन्नो ओ पाबू करियो माता जलम की,

कोई तो गुन्न करियो ओ पाबू म्हारे परवार,
कोई तो गुन्नो ओ पाबू म्हारे थे ओलख्यो ॥

इस पर पाबूजी ने उत्तर दिया कि सोढीजी आपके माता-पिता ने और परिवार ने कोई अपराध नही किया । तुमने भी कोई अपराध नहीं किया । अपराध तो मैं करता हूं कि वचनो से बँध कर तीसरे फेरे मे ही तुमको छोडे जा रहा हूँ—

वचन बाप मरदां कै सोढ़ी कहीजै एक ।
कोई धरम तो कहीजै सोढ़ीजी फेरां आगलो ॥
वचनां का बांध्या जी सोढ़ी धरती अर असमान ।
कोई वचनां का बांध्योड़ा जी सोढी पवन पांणीं आगला ।
वचना का बांध्योड़ा जी सोढ़ी युग में सूरज चंद ।
कोई बंचनां हूं बडेरा जी सोढ़ी जी जुग में को नहीं ।

सोढीजी ने कहा कि आप अवश्य गायो की रक्षा कीजिये । पाबूजी जाते जाते कह गये—

जीवांगा तो फेर मिलांगा, सोढी थां सूं आय ।
कोई मर ज्यावां तो ल्या देगो, ओठी म्हारा महंमद मोलिया ॥

शूरवीर पाबूजी और उनके नायक वीरो ने खीची जिनराज को जा घेरा । घमासान युद्ध हुआ । पाबूजी ने गायो को छुडा लिया । इनमे से एक बछडा नहीं मिला इसलिए पाबूजी को पुन खीची पर चढाई करनी पडी । इस युद्ध मे शूरवीर पाबूजी, सातो नायक वीर और उनके कई सम्बन्धी काम आये । युद्ध के समाचार और पाबूजी के शिरोभूषण लेकर सवार उमरकोट पहुचा ।

सोढीजी अपनी सहेलियो के बीच उदास बैठी हुई थी । उसके हाथो मे कागण डोरडा बधा था । वह विवाह का वेश पहने हुई थी और उसके हाथ-पैरो मे सुरगी मेहदी रची हुई थी । सवार सोढी जी के सामने कुछ बोल नही सका । उसने जाकर पाबूजी के शिरोभूषण और कागण डोरडे सोढीजी के सामने रख दिये । इनको देख कर सोढीजी की जैसी स्थिति हुई उसका चित्रण इस प्रकार किया गया है—

नैणा तो देखी छै जद बा पाल भवर की पाग।
कोई किलंगी तो पिछाणी छै बा भुरजाले के सीस की।
माथा कै लगा दी छै सायब कीं किलगी पाग।
कोई छाती के लगायां छै पाबू का कांगण डोरडा।
छाती जो फाटी छै जी उजल्यो छै दिल दरियाव।
कोई खाय तो तिंवालो धरती-पर सोढ़ी छै पड़ी।

एक पहर के प्रयत्न के बाद जब सोढी राजकुमारी की मूर्च्छा दूर हुई तो वह वन के कायर मोर की तरह रोने लगी। रोते-रोते हिचकियाँ बँध गई और आँखो से सावन-भादो की झडी बरसने लगी। फिर उठ कर वह अपने माता-पिता, भाई और सहेलियो के पास पहुची। हाथ पसार कर मा से विदाई का नारियल लिया। फिर पिता, भाई, भौजाई और सहेलियो से विदा ली। सोढी राजकुमारी बोली—आप लोगो ने मुझे इतने प्यार से बडा किया और अब मैं ऐसे घर मे जा रही हूँ जहाँ से मैं नही लौटूँगी। तीज-त्योहार आवेगे, सभी सम्बन्धी मिलेगे, किंतु यह लाडली बेटी फिर नही मिलेगी।

सोढी राजकुमारी रथ मे बैठ कर अपनी ससुराल पहुँची। प्रियतम के बाग-बगीचो को, महल-मालियो को, मेडी ओबरो को और झाड झरोखो को आँसू भरी आँखो से पहली और अन्तिम बार देखा। प्रियतम के साज-सामान और वस्त्राभूषण देखे और फिर ससुराल वालो से कहा कि हम ऐसी घडी मे मिले हैं कि सदा के लिए अलग होना पड रहा है।

फिर रानी सोढीजी अपने हाथो से सूरजपोल के तेल सिन्दूर का छापा लगा कर अपने प्रियतम पाबूजी से मिलने के लिए रवाना हो गई।

भारतीय नव-निर्माण की इस वेला मे कर्तव्यपरायण, शूरवीर पाबूजी और सती रानी सोढी नही है किंतु उनके पावन चरित्र एक अमिट प्रकाश के रूप मे हमारा मार्ग-प्रदर्शन कर रहे हैं।

---

१३. बगड़ावत

बगडावत नामक कथा-गीत राजस्थान में मुख्यत' गुर्जर लोगो मे प्रचलित है। ऐसी मान्यता है कि यह गीत प्रति रात्रि तीन पहर गाये जाने पर छः माह में पूरा होता है। बगडावत की कथा इस प्रकार है:—

अजमेर मे वीसलदेव चौहान राज्य करता है। उसके दरबार मे हरराज चौहान रहता है। वह शब्दवेधी शिकारी है और नित्य शिकार करता है। अजमेर मे कोका शाह रहता है। उसकी पुत्री लीला बाल-विधवा है और पुष्कर के पहाडो मे तपस्या करती है। एक रात मे पिछले पहर लीला स्नान करने निकली, तब हर-राज चौहान शिकार किये हुए सिंह का मस्तक लेकर सामने आया। लीला ने हर-राज की ओर देखा तो उसके गर्भ रह गया।

राजा ने लीला का विवाह हरराज से करवा दिया। लीला के पुत्र हुआ जिसका मुँह सिह-जैसा था। इस पुत्र का नाम बाघा रक्खा गया। बाघा बडा हुआ तब एक दिन बाग मे गया। श्रावणी तीज का त्यौहार था। लडकियाँ झूलने के लिये आयी तो बाघा ने कहा, मेरे चारो ओर फेरे लो तो झूलने दूँ। अनेक लड़-कियो ने खेल ही खेल मे बाघा के चारो ओर फेरे लिये।

लडकियाँ बडी हुई तब इनके घर वालो ने ब्राह्मणो से योग्य वरो के विषय मे-बातचीत की। ब्राह्मणो ने जांच कर कहा, "इनका विवाह तो हो चुका है।" लोगो ने जाँच-पडताल कर बाघा के यहाँ अपनी लडकियो को पहुँचाया। बाघा के २४ पुत्र हुए। उनका विवाह करने के लिये कोई तैयार नही हुआ। राजा ने गुर्जर मुखियो को दबा कर उनकी लडकियो से बाघा के २४ पुत्र बगडावतो का विवाह करवाया। इनके अनेक पुत्र हुए।

बगडावतो मे मुख्य भोजराज हुआ। भोजराज एक तपस्वी साधु की सेवा करने लगा। साधु ने एक दिन कहा, "कल मैं जाऊँगा। तुम सुबह जल्दी आना। मैं तुमको विद्या दूँगा।" दूसरे दिन भोजराज साधु के पास पहुँचा। उस समय एक बडे कडाह मे तेल उबल रहा था। साधु ने कहा, "कडाह के तीन फेरे लो तो मैं विद्या दूँ।" भोजराज साधु की चालाकी समझ गया और बोला, "आप फेरे

लेकर बतावें। फिर मैं फेरे लूँगा।" साधु फेरे लेने लगा तब भोजराज ने उसको उठा कर उबलते हुए तेल के कड़ाह मे डाल दिया। साधु पारस पत्थर हो गया।

बगडावत अब बडे आनन्द मे अपने दिन व्यतीत करने लगे। धन का इच्छानुसार खर्च करने लगे और अन्याय पर उतर आये। तब ईश्वर के आगे पुकार हुई, "ससार मे बगडावत बुरी चाल चलते हैं।" माताजी ने ईहड सोलकी की पुत्री जेलू के रूप मे अवतार लिया। सोलंकी ने अपनी पुत्री का विवाह भिनाय के राणा से निश्चित किया।

भिनाय के राणा ने बरात मे भोजराज और उसके भाइयो को भी साथ लिया। बगडावत सज कर और अपने घोडो पर सवार होकर चले।

बरात जनवासे पहुँची तो जेलू ने कहा, "मैं तो भोजराज से ही विवाह करूंगी।" तब भोजराज ने जेलू को सूचना भिजवाई, "अभी भिनाय के राजा से विवाह कर लो। बाद मे मैं तुम्हे ले जाऊँगा।" जेलू विवाह कर भिनाय पहुँची। तब भोजराज ने अपने भाइयो से सलाह ली। भाइयो ने कहा, "जेलू आती है तो आने दो।" जेलू भोजराज के साथ हो गई।

भिनाय के राणा ने बगडावतो से युद्ध किया। २४ बगडावतो मे से २३ मारे गये। जेलू भोजराज का मस्तक लेकर उड गई। भोजराज की स्त्री सेढू सती होने लगी। तब जेलू ने आकर कहा, "तुम सती मत होओ। तुम्हारे गर्भ से प्रतापी पुत्र होगा।"

सेढू के गर्भ से देवनारायण ने अवतार लिया। देवनारायण ने बडे होकर भिनाय के राजा से युद्ध किया और बदला लिया। देवनारायण की घर-घर पूजा होने लगी। विशेष विवरण "राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग २, सं. पुरुषोत्तम-लाल मेनारिया, प्रका० राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर" में दिया गया है।

बगडावत, महाभारत के रूप मे है और उसकी अनेक अन्तर्कथाएं हैं। बगडावत मे अनेक प्रसगो मे साहित्यिक सौन्दर्य के दर्शन होते हैं। सम्पूर्ण बगडावत का सकलन, सम्पादन और प्रकाशन सम्बन्धी कार्य अब तक नही हो सका है। बगड़ावत के गाने वाले अब थोड़े ही वृद्ध गायक रह गये हैं। बगड़ावतो का मुख्य स्थान मेवाड़ मे आसीन्द है।

बगडावत का सम्वन्ध सामान्य जनता से होने के कारण यह अब तक उपेक्षित रहा हैं। बगडावत मे काव्य और सगीत की स्वाभाविक रमणीयता के दर्शन होते हैं। बगडावत के कतिपय अ श इस प्रकार हैं—

मङ्गलाचरण

पैलां ही कुणी देवने सिवरजै और कुणीरा लीजै नाम।
पैली अणगड़ देवने सिंवरो और गणपतरा लीजै नाम।

० ० ०

सारदा ब्रह्मारी डीकरी, हंस बैठी बजावै वीणा।
खाती संवरे खतोड़ मे, एरण धमता लवार।
बेटो राजपूतरो आपने संवरे,
उगतड़े परभात नीली पर पर माण्डे भूल।

० ० ०

समरूं देवी सारदा, नमण करूं गणेस।
पांच देव रच्छा करे, ब्रह्मा विस्नू महेस।

रावत भोजा-वर्णन

लेणा हररा जी नाम, परभाते भोजने गावणा।
लेणा भोजरा नाम, भोज दातारारो सेवरो।
मतवालांरो मोड, भोज दातारांरो सेवरो।
ऊंचा बंधावे देवरा, सोनारा कलस चढ़ाय।
सोनाने कांटी तोलणा. रूपाने लेणो ताय।
रूप उधारो-नी मले, मर्‌या न जीवे कोय।
मर जाणो संसार में, कई यन आवे लार।
खावो ने खूंर्यां करो, करो जीवरा लाड़।
जीवड़ा सरीखा पांवणा मले न दूजी बार।
चुणियोड़ा देवल ढस पड़े, जनमियोड़ा नर मर जाय।

काचा घड़ा नरजन पूतला, काची मरदांरी देही।
असी चूड़ी काच री, फूटे न फटीको होय।
उगियोड़ो सूरज आँथसी, फूलियोड़ा कुमलाय।

सूम वर्णन

कई न आवे लार, सूमरे गाड़ी भरिया लाकड़ा।
खांडी हाडी लार, सूमने जाय खेतरां उतार दो।
गुरुदेवरी आण, सूमसूँ धरती मेलो बुआर जी।
गुरुदेवरी आण, सूमरा धूआं धूंधला नीकले।
गुरुदेवरी आण, पाछो मेलोजी भोला रामजी।
म्रतलोकरे मांय, पाछो मेलोजी भोला रामजी।
कोठा में रह गयो धान, म्हारे गड़िया रह गया टूकड़ा।
धूल व्हियो धनमाल, सगो कोई नी रे बेटो बापरो।
पूत न परवार, सगी न कोई न जो घररी गोरज्या।
सगी है न ससार, सगो कीजै रे अगनि देवता।
वा लेली सुधार, सगी कीजो री बनरी लाकड़ी।
उठ जलेली लार, सगी कीजो जी बनरी लाकड़ी।

बगडावत भोजा की दानशीलता और ऐश्वर्य

गुरुदेव री आण, ऊंचा बंधाऊं जी हररा देवरा।
गज गरियांरी नींव, म्हूँ तो कूड़ा खुदाऊं रे बावड़ी।

❀ ❀ ❀

माया ने किण विध खाय रे, माया ने ऊंडी गाड़ दो।
दो नी शीशो ढलाय, मरदां काल दुकालां काढ़सी।
गुरुदेवरी आण, ताला जड़ दो वीजलसाररा।
वगड़ जड़ो कुमाड़, मरदां काल दुकालां काढ़सी।
गुरुदेवरी आण, आपा मांडल ढावां मालवो।
आपां बलती ढावां मेवाड़, रे जातोड़ी परजा ढ़ावलां।

पिण्ड बेलण होय, भाभी एड़ी तो सुपारी बणी।
नाक बणी तलवार, देवी मुख गंगा खलक रही।
गुरुदेवरी आण, राणीरे गोड़ां मे गुणेश जी।
गोड़ां में गुणेश जी, देवीरी कमर केलीरी कामड़ी।
पेट पीपल रो पान, देवीरे दाँत दाड़म का बीजड़ा।
गुरुदेवरी आण, देवीरे नेतां सुरमो सारणो।
कोयां काली रेख देवीरे नेतांजी सुरमो सारणो।
गुरुदेवरी आण देवीरी जीभ कमलरो पानड़ो।
होठ फेफरा फूल, राणीरे जीभ कमलरो पानड़ो।
कोयां काली रेख, देवीरी चोटी गयी पाताल।
गुरुदेवरी आण, अग्गमरो झोलो आवसी।
अगमरो झोलो आवसी, पच्छमने लुल जाय।
पच्छमरो झोलो आवसी, अग्गमने लुल जाय।
चोफेरां वाजे वायरा, टूक-टूक हो जाय।
थने सूवो झपट ले जाय, हँसती बोले बेण जी।
गुरुदेवरी आण, राणी सीप भर पाणी पिवे।
गुरुदेवरी आण, राणी बोज़या-पान में जीमसी।
गुरुदेवरी आण, धणांरी खोपड़ी मे खाय।
चोथो दाणो चांवल तो राणी पेट फाट मर जाय।

युद्ध-सज्जा और युद्ध

गुरुदेवरी आण भाटी नूतांजी जैसलमेररा।
भीलवाड़रा भील, मरदां गढ़ देवलरा देवड़ा।
भीलवाड़रा भील, मरदां गढ़ चित्तोड़रा चीतला।
गुरुदेवरी आण, कालू मीयों सनवाड़।
कालू मीयों सनवाड़, चढ़ ने वेगो आवजे।
महाभारतरे मांय, कालू चढने वेगो आवजे।

मातासरी ओ थांरी आरती, बदनोरी चांवडा थांरी आरती।
खुमाणा स्याम थांरी आरती, काली कालका थांरी आरती।
जोगड़ारा धणी थांरी आरती, भूल्या सूक्या थांरी आरती।
तेतीस करोड़ देवता, थांरी बोलां आरती।
कासीरा वासी ने बारा हं पुजारा बोलां आरती॥

[निजी सग्रह से]

[प्रार्थना]

नमण करूं पृथी का नाथ ने, नमण करूं तैतीस करोड देव।
नमण करूं एक माता धरतरी, जो मंगल गहरी माय॥
जीवतां नरां का ख में खूंदणा, मरियां ने लेवे छाती लपाय।
धन धन ओ माता धरतरी, थामें गया नर तो घणा खपाय॥
भड़ निया ने गावज्यो, भोज्या का लीज्यो नाम।
भारत मांड्यो बाग का मूरमा, तो धरा रगतां सू गई धाप॥

[चुपके चुपके सवाई भोज ब्राह्मणी की गाय के पीछे रूपनाथ की धूणी पर जाता है तो गाय व संत की वार्ता सुनता है।]

वाण्टा की कूण्डी हाथ मोड़ी आई ऐ माता गवतरी।
सवाई भोज मारी लार, धीरे बोलो रे चेला नाथ का॥
रावत भोज मारे लार, जोगड़ा डूंगर डूंगर मूंफरी।
झबलक उठे झाल जोगड़ा, हिवड़ा में होल्यां वले॥

दूणी लागी लाय बावजी, ले लोठ्यो ठण्डी करी।
भोज चरावे गाय मरदां नियों चरावे केरड़ा॥
चरती छालर जाय मरदां, गाय चरातां गुरु मल्या।
मलग्या दीनानाथ मरदां, नागवाड़ का डूंगरां॥

[भोज ने जोगी को पकड कर तेल के कडाह मे डाल दिया, तो उनकी लाश पारस की मूर्ति बन गई। गुरु ने जाते-जाते कहा, बारह वर्ष के लिये यह माया और बारह वर्ष की तुम्हारी काया। दिन दूणी रात चौगुणी बढेगी। खाओ खर्चो, धरा पर नाम अमर कर दो। अब बगडावत अपने भाई तेजा से माया को किस प्रकार भोगना चाहिये जिसकी सलाह लेते हैं।]

माया ने किण विध खाय, पूछो पूछो रे अनड़ी तेज ने।
अग्रवालां को भाणेज दादो, ग्यारां लोग वारो वड़ो॥
नित को पडसी काल मरदां, मारवाड़ नेडी बसे।
माया ने इण विध खाय रे माया ने ओ उण्डी गाड़ दो॥

देवो शीशो ढलाय मरदां, काल दुकालां काढजो।
बजड़ जड़ो किंवाड़ ताला जड दो रे बीजलसार का॥
महादेव की आण आपां, माण्डल ढाबां मालवो।
झलती ढाबां मेवाड़ रे, जातोड़ी परजा ढावलां॥

घर तो राखां सेर मरदा अन्तर काणी ताकड़ी।
दूणां करलां दाम रे, घटतोडो जी सोदो तोलसी॥

[यह बात सवाई भोज नियाण अन्य भाइयो को स्वीकार नही हुई। माया १२ वर्ष तक सीमित है, इसको अच्छी प्रकार माणना (उपयोग करना) चाहिए।]

गुरुदेव की आंण मरदां घोडा मंगावां काबुली।
काबुलियां केकाण, घुडला फेरां राण के चौहटे॥
मोहरां पडावां टकसाल रे मोहरां जी मुहगां मोल की।
घोड़ा के घुघरमाल, घोड़ा खूंद राण के चोवटे॥
मोहरां टूट पड़ जाय, जाने विणेने परजा खावसी।
अमर कर दां नाम रे घोड़ा से जी सांचा फेलवा॥
पातू करलां बहन, मदवो पीवां जी पातू पोल में।
सोच्या भला निवांण,+ मरदां माया तो माणी भली॥ (+कुआ)

[अब सवाई भोज की पत्नी बगडावतो को राण जाने से मना करती है। यदि दारू पीना है तो मेरे पीहर गागोली मे काफी महुए हैं। मैं स्वय उत्तम किस्म का दारू निकाल पिला दू ।]

राण ठगां रो देश, देवर, मती पधारो राण में।
राण कांगरू देश रे, राणां की रांडा मोहनी ॥
थाने राखेला विलमाय देवर नर थोड़ा नार्यां घणी।
म्हारा जीव की आण देवर ताम्बा की भाटी चुणू ॥
सर्व धातु की नाल खरड़े+ गातू रे डोडा एलची। (+खरल)
लूंगा तणो बगार देवर कुसुमल ओढू ओढणी ॥
डीलां वणू कलाल रे डोड्या में जी दारू पावती।
म्हारा जीव की आण बांका मत चालो बगड़ावतां ॥
वांका सूं अवली खोड़ देवर बांका सूं टेढो मिले।
काड़े वांक मरोड देवर सेर्‌या पर दुसेरया मिले ॥
नीचा करदे सींग देवर मानो रे भट्ट बाड़ का।

[इस पर अब नियां प्रत्युत्तर देता है]

म्हारा जीव की आण भाभी, वांका वांका जी मैं फरां।
मांने आदर भाव भाभी, बांकी बन में लाकडी ॥
काट सके नहीं कोय, भाभी सरगां बांधां झूपड़ी।
दुनियां में आधी चार भाभी खांदे खापण+ लिया फरां ॥ (+कफन)
म्हारे डीगों हाथ भाभी माथे मौत लिया फरां।
कई करे करतार भाभी कवले ओ नागर वेलड़ी ॥
धायो धतूरो खाय जांके रस थोड़ा कांटा घणा।

[सवाई भोज की घोडी बूली का वर्णन अनूठा है।]

गुरुदेव की आण घोड़ी वन्दी रे ऊण्डे ओवरे।
फोड़े सोवन्यो ठाण, घोडी बादल सूं वाता करे ॥

मूंग रले रल जाय, घोडी थाली में थलिया करे ।
धरे अनूठा पांव छलका आई रे रावत भोज ने ॥
चांदी की खुरताल घोडी के पगां ढलकती नेवरिया ।
घमसे घुघरमाल, घोड़ी के हरिया जी नेवर वाजणा ॥
रूपा की रमझोल घोडी के सिंघाडो सोने वण्यो ।
नौ लाख को जीण घोडी के लाख लाख का पागडा ॥
हीरां तपे ललाड़ घोड़ी के बाल बाल मोती जड्या ।
सत जुग को पलाण घोड़ी के त्रेता युग को ताजणो ॥
लालां जड़ी लगाम घोड़ी ने तूरों तो ओपे * घणों । (*अच्छा लगना)
तुर्रे तार हजार रे नेणा में जी चमके वीजली ॥

[सवाई भोज का वर्णन ।]

गुरुदेव की आण भोज के पायजामा को पहरणो ।
नाडो लाल गुलाल भोज ने मखमल सोवे मोचडी+ ॥ (+जूती)
पटा घाल चमेल, भोज के कडा लगर+ को पेरणो । (+पैर का गहना)
हेम कडोल्यो हाथ, भोज के बावन रूप वेडी वणी ॥
जाड्यो जैसलमेर भोज के जाली को रूमाल जी ।
लूम झूम की जोड़ भोज के वेल कान मोती जड्या ॥
भंवर घड्या सुनार भोज के मगर भांति कुण्डल वण्या ।
फेण्टो लाल गुलाल भोज के कमर कटारो वांकडो ॥
एक मूठ दो धार भोज के सिरोही झलका करे ।
बूंदी की बन्दूक भोज के रामपुरा को सेलडो ॥
राजा वाली रीत भोज के फोकवाण कडका करे ।
राजा वाली रीत मरदां आयुध+ ले चूली चढो ॥ (+शस्त्र)
तोरण आयो वींद जाणे वण ठण वनड़ो नीसरयो ।
जाणे जमीं को चांद मरदां शेल किरण सूरज ... ॥

[तोरण पर निया और नीमजी के युद्ध का वर्णन]

गुरुदेव की आण मरदां, नियो निमलो आथडया ॥
भवरी लागो राड़ मरदा कटार्यां कुरला करे ।
तग भपटे तलवार बरछी मांगे भड़ा भाबुकड़ा+ ॥ (+कलेजा)
गोला गावे गीत मरदां, सीरोही भलका करे ।
म्हारा जीव की आण मरदां तोरण मारू तीन सौ ॥
हथलेवे हजार रे डोड्यां मे जी मारू डोड सौ ।
नियो मरद को नाम निमला भीतर+ में भालो रोप दूं ॥ (+कलेजा)
हल में पूरी हाल रे पूठी में ठोक्यो फाचरो ॥

[आदिशक्ति चामुण्डा हीरा को कहती है ।]

कहूँ दिलड़ा की बात अरमा आवो वडारण हीर जी ।
दौड़ी महलां सूं जाय रे रगता को खुणच्यो+ लाय दे ॥ +अंजली
खून बहे खोखाल हीरां खारी नद रे मायने ।
वचन दियो भगवान रे रगतां री महंदी राचणी ॥

कलस घड्यो कुम्हार रे खातीडे खूट्यां घड़ी ।
शकरनाथ की आण, चंवरी रची रे बामण देवता ॥

भालां की गणगोर या तो परणे ओ देवी चावण्डा ।
देऊं हथलेवा हाथ मारे चांद सूरज साखी वण्या ॥
डग मग हाले नांड़ रे डोल्या में आयो डोकरो ।
गई जमारो हार हीरां, ऊंट बलद जोड़ो वण्यो ॥
पाने पडग्यो दानो राव भाग लेख लिख्या वगड़ावतां ।
गई जमारो हार, हीरां ऊंट बलद जोड़ो वण्यो ॥
करम न वांच्यो जाय हीरा कागद ह्व तो वाच लूं ।
जोबण न राख्यो जाय हीरां, बालक ह्वै तो राख लूं ॥

वैरण ह्वैगी माय हीरा आंवो होग्यो बापल्यो।
डोकरिया ने आवे नींद रे, छोरया ने छूटे खेलणों ॥
म्हारा जीव की आण रे परण्या ने बणा दूं कूकड़ो।
ढीला वणु वलाय ईका गण-गण पांडु पांखडा ॥
म्हारा जीव की आण हीरा तीन बात का खमी+ लेवां। (+प्रण)
काजल महंदी तम्बोल हीरां अतरो नखरो जदी करां ॥
जाऊं भोज की लार, भंवरो+ घणो दुखी ओ मारा हीरजी (+आत्मा)
गेन्द भोज की लार, म्हूंतो झाला देती निकलूं ॥
रूप देही को जाय हीरा बायां हाथ की मूंदड़ी।
रलकण लागी बांह हीरां काजल सूं काली पडूं ॥

[राणी को लेने बगडावत जाते हैं उस समय अपशकुन होते हैं।]

खोटा ह्वैग्या सूण रे काकड़ पर फूटो केवडो।
मंगरे बोल्था मोर सपणी बोली जमी रा बीट मे ॥
सायर कुरल्या हंस रे, कुण्डला मे सारण बोलग्या।
मल गई राण्डी राण्ड मरदां तेल ले तेली मल्यो।
मलग्या वासग नाग भाईजी सोनो ले सोनी मल्यो ॥
हिरण्या की कतार मरदां विना तिलक जोशी मल्यो।
वावां बोल्या स्याल रे डावां जी तितर बोलिया ॥
सांमी ह्वैगी छींक कुआ में कबूतर बोलियो।
वांको बालक वेश मरदां राण गिया नहीं वावडो+ ॥ (+आजो)

[राण की आदिशक्ति का रूप-वर्णन, भाभी साढू से करते हैं।]

गुरुदेव की आण भाभी, भरतोडो जी सांचो ढुले गियो।
राठोलां की गेल भाभी विण सांचे नर दोही वड्या ॥

भूल गया भगवान भाभी नही देवल में पूतली ।
नही नार्यां में नार भाभी जाघ देवल को खम्भ वण्यो ।।
पीड्यां वेलण होय भाभी ऐडी तो सुपारी बणी ।
लंक बणी तरवार भाभी गोरया जी गंगा खलक रही ।।
गोडा तो गुणेश राणी की कमर केल की कामड़ी ।
पेट पीपल को पान देवी की दूंद गहुंआ की लोथ जी ।।
भुज चम्पा की डाल देवी के शीश तो उदख वण्यो ।
नारेला अवतार देवी के दांत दाडम का बीजड़ा ।।
कोया काजल रेख देवी की जीभ कंवल को पानड़ो ।
होठ फेफ का फूल राणी के बाल-बाल हीरा जड्या ।।
मोत्यां तपे ललाड़ राणी के चोटी जी तनारवो भलेरियो ।
दोही नैण ललाट भाभी चौथी जी पांती थांभलो ।।

[श्राप का चित्रण ।]

मारा जीव की आण थने सिलो आपुरे तेजा जेठजी ।
भोल्यां लीज्यो भेल बाबो वीओ रे तेजा जेठजी ।।
मरज्ये माचो काट थारे गले घरड़को जूतज्यो ।
रोड्यां चरजो रोज, थारे हिरण हथायां बैठज्यो ।।
चूल्हे हरियो धोव थारे, घर में बोल्या ऊगजो ।
धोला फूलां रा आक थारे खेत खेजड़ा नीपज्यो ।।

[आदिशक्ति चामुण्डा का अवतार भेलू भेमती अपना परिचय देती है ।]

धरा अमर कोई नर होतो जद को जनम म्हांरो जी ।
चांदा के घर चन्दावल वाजी, सूरज के संध्या राणी जी ।।
अतरा ए जनम आगे कीदा जदी रे कुल मे जाणी जी ।
राम रावण ने मैं ही लड़ाया, विण भगड़ा सूं न्यारी जी ।।

सीता वण रावण ने छलगी छण में लंका जलाई जी ।
कौरव पाण्डव ने मैं ही खपाया विण भारत सू न्यारी जी ॥
द्रोपदी वण पाण्ड़वां ने छलगी वांके घर मूं नारी जी ।
पार्वती वण शंकर ने छलगी शकर नेजा धारी जी ॥
सींगी रखने वन मे छलगी दे चरगढ की आई जी।
भील के घर मे भाल पुजाई रे दास घर में आई जी ॥
नहीं परणी मूं नहीं कुआरी वेटा जण जण हारी जी ।
खेड़े खेडे वाजी चामुण्डा गोत गीत में दियाड़ी जी ॥
काली मुण्डी को एक नी छोड्यो रह गई अकन कुवारी जी ।
रजपूतां के रावले पुजाई जदां रे कुल मे जाणी जी ॥
अजती चाली छलती चाली छलती ने कोई नही जाणी जी ।
किणी की दाय पड़े तो संग मे रमओ तीन लोक सूं न्यारी जी ॥

[श्री नानानाथजी योगी, कपासन के सग्रह से]

---

१४. मरवण झूरै एकली

जीवन मे संयोग-जन्य सुख और वियोग-जन्य दुख के प्रसंग आते ही रहते हैं। हमारा जीवन संयोग-वियोग के घूप-छाही रंगो से सदा ही रंगीन और रसमय बना रहता हैं। सयोग-सुख का आनन्द अनिर्वचनीय रहता ही है किन्तु वियोग रूपी दुख की महत्ता भी किसी प्रकार गौण नही कही जा सकती क्योकि वियोग की पृष्ठभूमि मे ही संयोग-सुख अपार रूप मे उपलब्ध होता है।

हमारे साहित्य मे सयोग-सुख का वर्णन प्रायः सीमित रहा है किन्तु वियोग का वर्णन खुलकर किया गया है। नायक-नायिका के लिये अभीष्ट की अप्राप्ति ही विप्रलम्भ अथवा वियोग कहा गया हैं। भोजराज ने विप्रलम्भ की व्याख्या करते हुए लिखा है—"जहा रति नामक भाव प्रकर्ष को प्राप्त करे किन्तु अभीष्ट को न पा सके तो विप्रलम्भ शृंगार होता है (सरस्वती कण्ठाभरण, ५।४५)। भानुदत्त ने विषय को और स्पष्ट करते हुए लिखा है कि युवा और युवती की परस्पर मुदित पचेन्द्रियो के पारस्परिक सम्बन्ध का अभाव अथवा अभीष्ट की अप्राप्ति ही विप्रलम्भ है। इस प्रकार विप्रलम्भ के लिये नायक-नायिका मे परस्पर रति-भाव की विद्यमानता आवश्यक मानी गई है।

राजस्थानी नायक का जीवन अतीत मे मुख्यत वीर योद्धा का रहा हैं। राजस्थानी जीवन मे युद्ध के अवसर सामान्यत आते ही रहे और हमारी नायिकाए अपने प्रियजनो को युद्धभूमि के लिये विदा करती रही। राजस्थानी नायको के लिये 'चाकरी' मे रहना अनिवार्य सा रहा। नायक को 'चाकरी' के लिये विदा करते समय ही नायिकाओ के विरह-सम्बन्धी भाव गीतो मे व्यक्त हो गये। विदाई के उपरान्त विरहिणी नायिकाओ के लिये प्रिय-आगमन की प्रतीक्षा का लम्बा समय व्यतीत करना कठिन हो गया और उनके उद्गार लोक-गीतो मे विविध रूपो मे प्रकट हुए। विरहिणी नायिकाओ ने अपने अपार विरह-जनित प्रेम मे आस-पास के सम्पूर्ण वातावरण को रञ्जित बना दिया और किसी भी पक्ष को अछूता नही छोडा।

राजस्थानी नायिकाओ के विरह मे अपने नायक के प्रति अनन्य प्रेम के

प्रमाण मिलते है नायिकाओ का सात्विक प्रेम ही इन गीतो मे विभिन्न रूपो मे फूट पडा है। नायिका रात दिन प्रिय-प्रेम मे ही निमग्न रहती है। स्वप्न मे तो उसको प्रियतम के दर्शन होते ही है किन्तु हिचकी और आख अथवा बाहु आदि शारीरिक अ गो के फडकने मे भी उसको अपने प्रियतम की अनुभूति होती है। विरहिणी नायिका ने लोकगीतो मे धरती, आकाश, बादल, सूरज, चाद, सितारे, पपीहा, सूआ, काग, कुरज और पारिवारिक-जनो आदि के प्रति मार्मिक भावो की अनूठी अभिव्यक्ति की है।

चाल्या पना मारू चाकरी

थे तो चाल्या जी पनां मारू चाकरी,
धण को कांई रे हवाल, गोरी ने खिंदा दो बाप के।
म्हे तो चाल्या ए झाली राणी चाकरी
बैठी थे कवर खिलाय, के'र करोगी थारे बाप के,
कोठी तो चांवल झाली राणी मोकला,
घी का भर्या ए भंडार कै'र करोगी थारे बाप के।
चांवल में जी पनॉ मारू सुलसुलियो,
घी थारे घुडला ने पाय गोरी ने खिदाओ बाप के।
कुण थांरी ए झाली राणी गूंथेगो सीस,
कुण उतारे चोलया बीदड़ी,
कुण थांरे मैदी जी मांडसी ?
नाई की जी पनां मारू गूंथेगी सीस,
बाई जी मैदी मांडसी, सास उतारे चोल्या बीदडी।
गैले तो गैले ए झाली राणी जायज्यो,
मत पडज्यो ऊजड़ बाट, लोग सै हंसे,
गैले तो गैले जी पनां मारू जाय छा,
पड़ गया ऊजड़ वाट, कांटो तो लागगो जी कैर को।
कुंण थारो ए झाली राणी पकडै ए पाव

कु'ण थांरा आंसू पूछसी, कुछ थारो कांटो जी काढसी ?
नाई की जी पनां मारू पकडै जी पाव,
देवर काटो काढसो, बाई जी आंसू पूंछसी ।

अर्थात्—

ओ पना मारू, आप तो चाकरी के लिये रवाना हो गये किन्तु आपकी स्त्री का कैसा हाल है ? गोरी को अपने बाप के यहा भेज दो ।

ओ झाली राणी, हम तो नौकरी के लिये चले । तुम पीछे से बैठी हुई कुवर को खेलाना । अपने बाप के यहा जाकर क्या करोगी ?

ओ झाली राणी, कोठी मे बहुत चावल है और घी का भडार भरा हुआ है । तुम अपने बाप के यहा जाकर क्या करोगी ? ओ पना मारू, चावलो मे कीडे पड गये हे और घी अपने घोडो को पिलाओ ! गोरी को अपने बाप के यहा भेज दो ।

ओ पना मारू, मेरा छोटा भाई लेने के लिए आया है, सास भी कहती है बहु जाओ, मै आपकी भेजी हुई ही पिता के यहा जाऊँगी ।

ओ झाली राणी, कौन तुम्हारा मस्तक गूथेगी, कौन तुम्हारे मेहदी लगायेगी और कौन तुम्हारी चोली और बिन्दी उतारेगी ।

ओ पना मारू ! नाई की लडकी शीश गूथेगी, बाई जी मेहदी माडेगी और सासजी चोली बिन्दी उतारेगी ।

ओ झाली राणी ! रास्ते-रास्ते जाना, उजड रास्ते मत पडना । नही तो सब लोग हसेगे ।

पना मारू ! मै तो रास्ते-रास्ते जाती थी किन्तु उजड रास्ते पर पैर पड गया और कैर का काटा लग गया ।

ओ झाली ! कौन तुम्हारा पैर पकडेगा, कौन तुम्हारा काटा निकालेगा और कौन तुम्हारे आसू पोछेगा। ओ पना मारू ! नाई की लडकी पैर पकडेगी, देवर काटा निकालेगा और आपकी बहन आंसू पोछेगी।

विशेप—पना-मारू राजस्थानी पति के लिये प्रकट किया गया उपनाम है जिसका सम्वन्ध प्रसिद्ध प्रेमाख्यानो से है।

सूती ने का जगाई

धन वारी ओ सूरत पर, सूती ने कां जगाई रे।
कां जगाई हो सुख री हो नीद मे जी म्हारा राज ॥

नाना लाड़ी जी हो, धन वारि ओ सूरत पर
परदेश मे जावां हो, जावां हो, राजरी हो चाकरी जी म्हारा
राज ॥१॥ धन

म्हारा मेवाड़ा जी हो, धन वारि ओ सूरत पर,
लीला री असवारी हो, असवारी ने पाछी हो फेर दो जी म्हारा
राज ॥२॥ धन

म्हारा मारूजी हो, धन वारी ओ सूरत पर,
एकलड़ी ना रेवू रे, ना रेवू रे रग रा हो मेल में जी
म्हारा राज ॥३॥ धन

भोला लेणी जी हो, धन वारी ओ सूरत पर,
देराणी जेठाणी हो, नणदल रे मेलां हो खेलजो जी
म्हारा राज ॥४॥ धन

मूंगा मारूजी हो, धन वारी ओ सूरत पर,
एकलड़ी ना सोंवू रे, ना सोंवूं सुख री

चीता लंकी जी हो धन वारी ओ सूरत पर
नणदल ने भौजायां हो, नणदल रे भेले सोवजो जी म्हारा राज
।।६।। धन.

पनां मारूजी हो धन वारी ओ सूरत पर,
एकलड़ी ना जीमूं रे ना जींमू रे सूरज हो गोखड़े जी
म्हारा राज ।।७।। धन.

म्हारा मारूजी हो धन वारी ओ सूरत पर,
देवर ने भोजायां हो देवर रे मेले हो जीमजो जी म्हारा राज
।।८।। धन.

अर्थात्—

मै आपके रूप पर बलिहारी जाती हूँ। आपने मुझे सोती हुई क्यो जगाया ?

मेरे राजन् ! मै सुख की नीद सोती थी, आपने मुझे क्यो जगाया ?
छोटी बहू जी ! धन्य हो, मै आपके रूप पर बलिहारी जाता हू ।
मै अब राज्य-सेवा के लिये परदेश मे जाता हूँ ।
मेरे मेवाडा जी ! धन्य हो, मै आपके रूप पर बलिहारी जाती हू ।
मेरे राजन ! आपके नीले घोडे की सवारी पुन लौटा दो ।
मेरे मारूजी ओ ! धन्य हो, मै आपके रूप पर बलिहारी जाती हू ।
मेरे राजन ! रगमहल मे मैं अकेली नही रह सकती ।

ओ झूमती हुई चलने वाली ! धन्य हो, मै तुम्हारे रूप पर बलिहारी जाता हू ।

तुम अपनी देवरानी, जेठानी और ननद के साथ खेलना ।

मेरे मेहगे मारूजी ! धन्य हो मै आपके रूप पर बलिहारी जाती हूँ, सुख शैय्या पर मै अकेली नही सो सकती ।

सिंह जैसी पतली कमर वाली ! धन्य हो, मैं तुम्हारे रूप पर बलिहारी जाता हूँ।

मेरे राज, तुम ननद भौजाइयो के साथ सोना मेरे पनामारूजी ओ ! धन्य हो, मैं आपके रूप पर बलिहारी जाती हूँ।

मेरे राजन ! सूरज झरोखे मे बैठकर मैं अकेली भोजन नही कर सकती।

ओ मेरे मारूजी ! धन्य हो मेरे राज ! तुम देवर और भौजाइयो के साथ भोजन करना।

विशेष—चाकरी से तात्पर्य वश परम्परागत कर्तव्य से है। चाकरी के बदले मे जागीर भी प्राप्त रहती थी।

मेवाडाजी — मेवाड के पुरुष से तात्पर्य है।

मारूजी — मारवाड के पुरुप से तात्पर्य है।

पन्ना — राजस्थान के एक प्रसिद्ध प्रेमाख्यान "पन्ना वीरमदे" का पात्र झोला लेणी जी, चीतालकी जी और मारूणी राजस्थानी महिलाओ के लिये प्रयुक्त विशेषण है।

ढोला आप पधारो चाकरो

ढोला आप पधारो चाकरी, म्हाने लारां लिया ए जाओ,
सरदारां, साथे म्हाने ले चालो जी।
घर जाओ गांधण आपणे।
ढोला ! दासी केय बतलाजो,
म्हांने मत कीजो घर री नार, सरदारां !
साथै म्हांने लेता चालो जी,
घर जाओ गांधण आपणे।
ढोला आछी राणा जी रो चाकरी,

यो तो आछो उदयपुर सैर, सरदारां !
साथै म्हांने लेता चालो जी,
घर जाओ गांधण आपणे ।
ढोला, आछी रसोड़ा री खीचड़ी जी,
कोई आछो पिछोलो सागर, सरदारां !
साथै म्हांने लेता चालो जी,
घर जाओ गांधण आपणे ।
ढोला जब जब जोवूं बाटड़ी,
कोई डब-डब भरिया नैण, सरदारां !
साथै म्हांने लेता चालो जी,
घर जावो गांधल आपणे ।
ढोला फेंटा सूं आंसू पूंछिया,
म्हाने लीधा ए हिवड़े लगाय, सरदारां ।
साथै म्हाने लेता चालो जी,
घर जावो गांधण आपणे ।

अर्थात्—

पतिदेव, आप नौकरी पर जाते है,
सरदार, हमको साथ लेकर चलो ।
हमको साथ लेकर चलो जी,
गाधण अपने घर जाओ ।
पतिदेव ! आप मुझे दासी कहकर बतलाना,
सरदार ! मुझे अपने घर की स्त्री मत कहना ।
हमको साथ लेकर चलो जी,
गाधण अपने घर जावो ।
गौरी, हमारे राणाजी की नौकरी है,
मारूणी ! तुमको साथ नही ले जा सकते,
हमको साथ लेकर चलो जी,

गाँधरण अपने घर जाओ ।
पतिदेव ! राणाजी की नौकरी अच्छी है,
और सरदार उदयपुर शहर भी अच्छा है,
हमको साथ लेकर चलो जी ।
गाँधरण अपने घर जाओ ।
पतिदेव, राणा जी के रसोई घर की खिचडी स्वादिष्ट होती है ।
सरदार, पीछौला सागर भी अच्छा है,
हमको साथ लेकर चलो जी ।
गाँधरण, अपने घर जाओ ।
पतिदेव, जब–जब मैं आपकी राह देखती हूं,
सरदार, मेरी आँखे आँसू से भर जाती है,
हमको साथ लेकर चलो जी ।
गाँधरण, अपने घर जाओ ।
पतिदेव ने अपने दुपट्टे से आँसू पोछे ।
सरदार ने मुझे हृदय से लगा लिया ।
हमको साथ लेकर चलो जी,
गाधरण अपने घर जाओ ।

टिप्पणी —

प्रस्तुत गीत मे एक नायिका की अपने पति के साथ उदयपुर जाने की निष्फल मनुहार का चित्रण है ।

सुपनो

सुपनो तो आयो सरब सुलखणो जी म्हारा राज
अगूठो तो मोड्यो गोरी रे पांव रो जी
सुपना में देख्या भंवरजी ने आवता जी
कोई माथे पचरग जी पाग,
कांधै सबज ए जी ए रूमाल

हाथ में सीसी प्यालो प्रेम रो जी
आंगण मोचड्या भंवर जी री मचकी जी
कोई डेली ठमक्यो ए जी सेल
गोरी रे आंगण सुड़को कुण कियो जी
लीलड़ी बांधी भंवर जी ठाण में जी
कोई सेल धर्यो धम साण
आप पधार्या मारूजी मेंल में जी
टग टग मेलां भवर जी चढ गया जी.
कोई खोल्या धण रा बजड़ किंवाड़
सांकल खोली बीजल सार री जी
हाथ पकड़ भंवर बैठी करी जी
कोई बूझी म्हारे मनड़े री बात
अखियां निमाणी पापण खुल गई जी
सुपना रे बैरी थने मार दू जी
कोई थारो कतल ए जी कराय
सूती ने ठगली भवरजी री गोरड़ी जी
क्यां ने गोरी धण म्हाने मार द्यो जी
कोई क्यूं म्हारी कतल ए जी ए कराय
म्हें छां सुपना ढलती रेण रा जी
सुपना रे वैरी थे असी करी जी
कोई जसी करे नां ए जी ए कोय
धोखे से छलकी भवरजी री गोरड़ो जी
म्हे छां सुपना सरब सुलखणा जी
कोई बिछड्या ने देवां ए मिलाय
म्हे छां सुपना ढलती रैण रा जी

अर्थात्—

मेरे राजा, सपना सभी तरह से अच्छे लक्षण वाला आया।
गोरी के पैर का अंगूठा मोडा।

मैंने भवर जी को सपने मे आते हुए देखा
सर पर पचरगी पाग थी ।
कन्धे पर सब्ज रूमाल था
हाथो मे शीशी और प्रेम का प्याला था ।
भवर जी ने आगन मे आकर जूतो की आवाज की,
उन्होने देहली मे अपनी सेल चमकाई,
गोरी के आगन मे किसने खटका किया ?
भवर जी ने लीलडी घोडी को अपने स्थान पर बाधा ।
अपने सैले को स्थान पर रखा
मारूजी अपने महलो मे आया ।
भवर जी टग टग महलो मे चढ गए
स्त्री के कमरे के सुदृढ किवाड खोले ।
वीजल सार की साकल प्रियतम ने खोली
भवर जी ने हाथ पकडकर मुझे बैठा दिया
मुझे मन की बात पूछी ।
इतने मे निर्मोही पापी आँख खुल गई ।
वैरी सपना तुझे मैं मार दूँ,

सपना तुझे मैं कत्ल करवा दूँ, भवर जी की स्त्री को तूने सोते हुए ठग लिया ।

गोरी स्त्री, तुम मुझे क्यो मार दोगी ?
तुम मुझे क्यो कत्ल करवा दोगी, हम तो ढलती रात के सपने है ।

सपना वैरी, तुमने ऐसा बुरा काम किया है जैसा कोई नही कर सकता । तुमने भवर जी की स्त्री को धोखे से ठग लिया है ।

मैं सभी तरह से अच्छे लक्षण वाला सपना हू,
मैं बिछडे हुओ को मिला देता हू,
मैं ढलती रैन का सपना हू ।

छप्पर पुराणो पड गयो जी

छप्पर पुराणो भंवरजी पड़ गयो जी
कोई टपकण लाग्या ए जी ए जूण
अब घर आवो आसाँ थारी लग रही जी
पलंग पुराणो भंवरजी हो गयो जी
कोई बड़कण लाग्या ए जी ए साल
अब घर आओ गोरी रा सायबा जी
पीपल झूरै जी मारूजी फूल ने जी
कोई फल ने झूरै नागर ए जी ए बेल
सा पुरसां ने झूरै भंवर ए नार जी
झूर झूर पींजर हो जाय गोरड़ी जी
जांको पियो बसै ए जी ए परदेस
बा घण डरपे सेजा एकली जी
कै कोई जागे राजा बादस्या जी
कै कोई जागे बालक री ए जी ए माय।
कै कोई जागे तिरिया एकली जी
डूंगर ऊपर मारूजी घर करूँ जी
कोई बादल रा कर लूं ए जी किवाड़
बिजली रे झपकै देखूं भवर थांने आवता जी
टींकी फीकी भवर जी हो गई जी
कोई हिंगलू रे चढ़्यो ए जी ए सिवाल
अब घर आओ गोरी रा ए बालमा जी
नरवर गढ़ पर पड़जो बीजली जी
कोई पडज्यो अचूको ए जी ए काल
ज्यू डुल आवै गोरी रो सायबो जी

अर्थात्—

भवर जी, घर का छप्पर पुराना हो गया है,
छप्पर टपकने भी लगा है।
अब घर आ जाओ, आपकी आस लग रही है।
भवर जी पलग भी पुराना हो गया है।
इसके साल तडकने लगे हैं।
गोरी के प्रियतम, अब घर पर आ जाओ।
मारुजी, पीपल फूल के लिये दुखी हो रहा है।
नागर वेल फूल के लिये दुखी हो रही है।
भवर, यह स्त्री वीर पुरुष के लिये दुखी हो रही है।
स्त्री रो-रो कर दुबली हो गई है।
जिसका प्रियतम परदेश मे बसता है।
वह स्त्री सेज मे अकेली रहते हुए डरती है।
रात मे राजा अथवा बादशाह जागते है।
अथवा किसी बालक की माँ जागरण करती है।
अथवा अकेली विरहणी स्त्री जागती है।
मारुजी, पहाड पर अपना घर बनाऊ।
प्रियतम बादलो को मै किवाड बना लू।
भवर जी बिजली की चमक मे आपको आते हुए देखू।
भवर जी मेरी बिंदी फीकी पड गई है।
मेरे हिंगलू पर सिवाल चढ गई है।
गोरी के प्रियतम अब घर आ जाओ।
नरवर गढ पर बिजली गिरे।
अचानक ही वहा पर काल पडे।
जिससे गोरी के प्रियतम लौट आवे।

बदली ऐ म्हारो चाद छिपायो

बदली ए म्हारो चांद छिपायो
उठ-उठ बदली म्हारे घर आई

महलां ऊपर घेरो ए लगायो
बदली ए म्हारो चांद छिपायो
कुण सी दिसा सूं आई ए बादली
कुण म्हारो घर ए बतायो
बदली ए म्हारो चांद छिपायो
दिखण दिसा सूं आ उठी रै बादली
ऐ ढूंढत ढूंढत घर पायो
बादली ए म्हारो चांद छिपायो
क्यों बदली ए म्हारो चांद छिपायो
क्यों घर म्हारे ए घेरो लगायो
बदली ए म्हारो चांद छिपायो
रतनागर सूं नीर जे भरियो
बरस ने घेरो ऐ लगायो
बदली ए म्हारो चांद छिपायो
घहर घुमेर ऊमड़ी बादली
थारो चांद ओट में आयो
बदली ए म्हारो चांद छिपायो।

अर्थात्—

वादली ओ ! तुमने मेरे चाँद को छिपा लिया।
वादली उठ–उठ कर मेरे घर आ गई।
वादली ने मेरे महलो का घेरा लगा लिया।
वादली ओ ! तुमने।०
कौनसी दिशा से आई ओ वदली
किसने मेरा घर बताया ?
वादली ओ !०
दक्षिण दिशा से यह वादली उठी।
उसने ढूढते ढूढते मेरे घर का पता पाया।

वादली ओ !०
वादली तुमने क्यो मेरे चाँद को छिपाया ?
वादली तुमने क्यो मेरे घर का घेरा लगाया ?
वादली ओ !०
रत्नाकर से पानी भरा है
वर्षा के लिये घेरा लगाया है
वादली ओ !०
वादली गहरी गरजती उमडी है
तुम्हारा चाँद ओट मे आ गया ह
वादली ओ !०

उड उड़ रे म्हारा काला रे कागला

उड उड रे म्हारा काला रे कागला
जे म्हांरा पीवजी घर आवे । उड़०
खीर खांड रा जीमण जीमाऊं
सोनां में चूच मंडाऊं रे कागा । उद०
कद म्हारा मारूजी घर आवे
पगल्या में थारे बांधू रे घूघरा
गले मे हार पहराऊँ कागा,
कद म्हारा पीवजी घर आवे । उद०
जे तू उड़ने सूण बतावे,
तो तेरो जनम जनम गुण गावूँ म्हारा कागा
कद म्हारा मारूजी घर आवे । कद ०

अर्थात्—

ओ मेरे काले कौवे उड जा
जो मेरे प्रितयम घर आवे । उड०
तुझे खीर व खाड का भोजन कराऊँगी

और तेरी सोने मे चोच मढा दूँगी
यह बता कब मेरे प्रियतम घर आ रहे है ? उड०
तेरे पैरो मे घूँघरू बाधूँगी
और तेरे गले मे हार पहिनाऊ गी
मेरे प्रियतम कब घर आ रहे है ?
जो तू उड के शकुन बतलावे
तो तेरा मै जनम-जनम गुरग गाऊँगी ।
मेरे कौए मेरे प्रियतम कब घर आ रहे है ?

टिप्पणी—राजस्थान मे यह विश्वास है—घर पर बैठ कर कौआ बोलता है तो यह समझते है कि आज कोई पाहुना घर पर आयेगा ।

सूती छी सुख-नीद मे

सूती छी सुख नींद में सुपनो भयो ए जजाल,
भवर सुपनै बतलाई जी
थाने सुपना मारस्यूं रै के थारी कतल कराय
गोरी थारे पीव ने मिलाया ए
आज संवारी उठिया जी गई मायड़ के पास
सुरण मांयड़ थाने बात कहूँ ए, कहतां आवै लाज
व्याई छूं कै कवारी ए जै को अरथ बताय
मायड म्हाने सांच बता दे ए
व्यान चढ्या था पीलै पोतडै ए हो गई जोध जुवान
नल राजा को डीकरो ए परण दिसावर जाय ।
बाई थाने सांच सुरणावां ए
आज सवारी उठिया जी, गई कुंजा के पास
थूं छे धरम की भायली ए एक सदेश पु चाय
पत्री लिख दूं प्रेम की ए दीज्यो पियाजी ने जाय
कुंजा म्हारे पिव ने मिला दे ए

माणस होय तो मुख कहै जी म्हासू बोल्यो नी जाय
भायली म्हारी पाखां पर लिख दे ए
वी लसकरिया ने जाय कहो ए क्यू परणी छी मोय
ओ तो परण पिराछत क्यू लियो ए
रह्यो क्यूं न अखन कुंवार
कुंवारी ने वर तो घणा छा जी
काजल टीका को थारी धण पण लियो जी
बिंदली को सरब सुहाग
गोटै मिसरू थारी धण पण लियो जी
चुनडी को सरब सुहाग
दूध दही को थारी धण पण लियो जी
अन्न विना रह्यो ए न जाय
कुंजा म्हारा भवर मिला दे ए।
आज सवारी उठिया जी गई कोस पचास
डेरो तो हरिया बागां मे दीनों जी डाल
ढोलो मारूणी पासा ढालिया जी कुंजां रही कुरलाय
हाथ रा पासा हाथ रह्या बाजी रही पासा मांय
कुण जिनावर बोलिया जी जै को करो विचार
साथी म्हांने भेद बताओ ऐ
हाथां का पासा डाल दो जी बाजी रालो ना दोय चार
घणाई जिनावर बोलै देस का जी
कां को करो विचार, थे तो पासा खेलो जी
बो गयो ढोलो बो गयो, गयो बागां के माय
ढूंढे चपा बाग में जी बैठी धण अंबल्या री डाल
कुंजां कुरलावण लागी जी
कुणियारा भेज्या अठै आइया जी कुणियारा कागद हाथ
कुंजा म्हाने साच बतावो ए
थारो धण का भेज्या अठे आइया जी

थारी घण का कागद हाथ
भंवर म्हारी पांखा बांच लो जी
आज अपूठा सोच रह्या जी रह्यो कै अन्देसो छाय
कै चित्त आयो थारे देसड़ो जी
कै चित्त आयो आपणो बाप
भवर दिलगीरी क्यूं लावो जी
ना चित्त आयो देसड़ो जी, ना चित आया माय ने बाप
एक चित्त आई म्हारी गोरडी जी, वा धण घणी ए उदास
भायली म्हाने गोरी चित्त आई जी
बो गयो ढोलो वो गयो जी, गयो करवा के वास
म्हारी गोरी ने मिलाय दो जी
कै गल घालूं घूघरा रै गल घालू रेसम डोर
तूं करवा म्हारे बाप को रे लगडो होयर बैठ
छिटक पडैगो तेरो पेट करवा रे बैरी सागै मत जाई रे
पाणी तो पीवां ठंड होद को ए चरस्यां म्हें नागर वेल
जारया म्हें ढोला जी के सामरै ए मन में घणी ए उमेद
गोरी ए म्हैं हो सागे जास्यां ए
मालीड़ा की डीकरी ये थूं छै धरम की बैन
थारे कनै होकर ढोलो नीसर्‌यो ए किसा ए उमावै जाय
बाई म्हॉने भेद बताई ए
म्हारे कनै कर ढोलो नीसर्‌यो ए जाणै ल्होडी परणवा जाय
बाई थाने साच सुणावां ए
वेरां की बड़ बोरड़ी ए थूं छै धरम की वेन
थारे कनै होकर ढोलो नीसर्‌यो ए रास्यो क्यू नी विलमाय
भायली म्हाने पियो चित आवै ए
तोड्या छा चाख्या नही ए लीना गोजा मे घाल
बाई थाने सांच सुणावां ए
ढोलो पुंचाय'र ओठी बावडी जी जै को आवै रोज

चूल्हे पाणी गेर लियो जी धुवा के मिस रोय
भंवर म्हांने छोड़ सिधाया जी
करवा चाल उतावलो रे दिन थोड़ो घर दूर
दो गोर्‌यां रो सायबो रे रह्यो मैं अकेलो आज
करवा म्हारी गौरी सैं मिला दे रे
दांतण करो कुवा बावड़ी जी, मलमल करो असनान
चांद उग्यो सूरज छिप्यां जी देस्यां थारी मारूणी मिलाय
भवर वेगा पुंचावा जी।

अर्थात् -

मैं गहरी नीद मे सो रही थी। मुझे सपना आया और सपने मे भवर ने बाते की।

सपना मैं तुझे मारूंगी और कत्ल करवा दूंगी।
तू झूठा क्यो आया ?
गोरी मुझे क्यो मारोगी और क्यो कत्ल करवाओगी ?
मैने सपने मे तुम्हारे प्रियतम से मिलाया है।
सुवह उठते ही माँ के पास गई
सुन मा, तुझे एक बात कहू लेकिन कहते हुए लाज आती है।
मा, मैं व्याही हुई हू या कवारी हू ? सच वता।
मा ने कहा, वेटी तेरा व्याह तो जव तू छोटी थी तभी हो गया था।
नल राजा के वेटे से तेरा विवाह हुआ है।
मारूणी सीधी कुरजा के पास गई, तू मेरी धरम की वहिन है।
ए कुरजा मेरा एक सदेश पहुचा दे
प्रेम पत्र लिख देती हू। वह पत्र ले जाकर प्रियतम को दे देना
कुरजा मेरे पिव जी को मिला दे।
मनुष्य होऊ तो मुंह से कह दूं। मेरे मे वोला तो नही जाना,
वहिन मेरे पखो पर लिख दे।

उस लसकरिया से जाकर कहना कि मेरे से शादी क्यो की और यह पाप मोल क्यो लिया ?

अखड कुवारा क्यो नही रहा, कुवारी को वर बहुत थे
काजल लगाना तुम्हारी प्रिया ने छोड दिया है
लेकिन सुहाग-चिन्ह होने से बिंदी लगाती है।
गोटे-किनारी के वस्त्र पहिनना छोड दिया है
लेकिन सुहाग-वस्त्र होने से चुनरी पहनती है।
कुरजा मेरे भवर से मिला दे।
कुरजा उडकर पचास कोस गई और हरे बाग मे जाकर डेरा डाला।
ढोला और मारूजी पासा बिछाए हुए बैठे थे,
कुरजा की बोली सुनकर पासे हाथ मे ही रह गये
यह कौन पक्षी बोला, इसके बोलने मे कुछ भेद है ?
हाथ के पासे डाल दो और दो-चार बाजी खेलो
देश के कितने ही पक्षी बोल रहे है।
किस बात की चिता करते हो ? भवर पासे खेलो ।
ढोला बागो मे गया, चपा बाग मे ढूढने लगा
कुरजाँ आम की डाली पर बैठी हुई बोलने लगी
किसकी भेजी हुई यहा आयी हो ? किसका कागज तुम्हारे पास मे है ?

तुम्हारी पत्नी की भेजी हुई यहा आई हू और तुम्हारी पत्नी का पत्र मेरे पास है।

भवर मेरे पाखो को पढ लो।
आज पीठ फेर कर सो रहे हो ? किस बात की चिन्ता हो रही है ?
क्या देश की याद आई है ? क्या मा बाप की याद आई है ?
न तो मा बाप की याद आई है न देश की,
मुझे मेरी उदास पत्नी की याद आई है,
प्रिय, मुझे मेरी प्यारी पत्नी याद आई है।
ढोला उठकर सीधा ऊट के पास गया

मेरी गोरी से मिला देग्रो जी । कौन मुझे मेरी गोरी से मिलाने की हिम्मत रखता है ?

किसके गले मे घूघरे डालू ? किसके मैं रेशम की डोर डालू ?
ढोला ने ऊट को सजाया और रवाना हुग्रा ।

हे ऊट, तू मेरे पिता का है । तू लगडा होकर वैठ जा वरना तेरा पेट फूट जायेगा ।

दुश्मन, ढोला के साथ मत जा
मैं तो ठडे होद का पानी पीऊगा और नागरबेल चरूगा
मैं तो ढोला जी के सासरे अवश्य जाऊगा । मेरे मन मे वडी उमग है ।
गोरी ए, मैं तो साथ जाऊगा
माली की लडकी तू मेरी धरम की वहिन है

तेरे पास से ढोला निकला, वह कैसी जल्दी मे जा रहा था ? वहिन मुझे यह भेद वताग्रो ।

मेरे पास से ढोला ऐसे निकला मानो दूसरी स्त्री से विवाह करने जा रहा हो ।

वेरो की भरी हुई वोरडी, तू मेरी धरम की वहिन है
तेरे पास से ढोला निकला तूने उसे भुलावा देकर
रख क्यू नही लिया ?
वहिन मेरे प्रियतम मुझे वहुत याद ग्रा रहे हैं

उन्होने वेर तोडे तो थे लेकिन चखे नही और जेव मे डाल लिए, बाई तुझे सच कह रही हू ।

ढोला को पहुचा कर मारूणी वापिस ग्राई तो रोने लग गई ।

चूल्हे को पानी डालकर वुझा लिया और धुवे का मिस कर करके रोने लगी ।

भवर मुझे छोडकर चला गया है ।

ऊट जल्दी चल । दिन थोडा सा रह गया है और घर दूर है।
मै दो स्त्री का पति होकर भी आज अकेला हू
ऊट मेरी पत्नी से मिला दे ।
ढोला उतरकर कुएँ-बावडी पर दातण करो
और अच्छी तरह से स्नान कर लो,
चाद उगने और सूरज छिपने पर तुम्हारी मारूणी से तुम्हे मिला दू गा ।
भवर, तुम्हे बहुत जल्दी पहुचा दू गा ।

ओ म्हारी जोड़ी रा

ओ म्हारी जोड़ी रा ओ मिरगा नैणी रा
रतन, सीयालो राजन यूं ईं गयो ॥
ऊंनाला रा पांच महीना, चौमासा रा चार महीना,
सीयाला रा लागे थोड़ा थोड़ा ॥म्हारी जोड़ी०॥
ऊंनाला रा पोमचा, चौमासा रा लहरिया,
सीयाला रा फागणिया छपावो ॥म्हारी जोड़ी०॥
ऊंनाला रा बाप रे, चौमासा रा मामारे,
सियाला रा म्हांने ले चालो ।म्हारी जोड़ी०॥
ऊंनला रा चौक में, चौमासा रा मेड़ियां,
सियाला में ओवरियो पोढ़ो ओ ॥म्हारी जोड़ी०॥
ऊंनालो फेर आवेला, चौमासो फेर आवेला,
गयो तो जोबण फेर नही आवे,
म्हारी जोड़ी रा रतन सियालो राजन यूं ही गयो रा ॥
ओ म्हारी जोड़ी रा ओ मिरगा नैणी रा रतन०

अर्थात्--

ओ मेरी जोडी के, ओ मृगनयनी के साजन, रतन सियाला यू ही व्यतीत हो गया है । गर्मी के पाच महीने, चौमासे के चार महीने और सर्दी के बहुत थोडे दिन लगते है । गर्मी मे पौमचे, चौमासे मे लहरिये और सर्दी

मे फागणिये कपड़े तैयार करवाइये। गर्मी मे पिता के यहा पर, चौमासे मे मामा के यहा रखिये और सर्दी मे हमको साथ लेकर चलिये ।

गर्मी मे चौक मे, चौमासे मे मेडी पर और सर्दी मे ओवरी मे पधारिये ।

गर्मी भी आवेगी और चौमासे भी आयेंगे । लेकिन बीता हुआ यौवन वापिस नहीं आयेगा । मेरी जोडी के प्रियतम, रतन जैसी सर्दिया यो ही नहीं आवेंगी ।

जाड़ो तो पड़े म्हारा डूंगरा

जाड़ो तो पड़े जी बाईसा म्हारा डूंगरां
मार्‌या मार्‌या दादर मोर किस विध भुगतूं जी
बाईसा म्हारा जाड़ा ने ।
जाड़ो तो पड्यो जी बाईसा म्हारा बाग में
कोई मार्‌या छै माली लोग,
किस विध भुगतूं जी बाईसा म्हारा ।
जाडो तो पड्यो जी बाईसा म्हारा शहर में
मार्‌या मार्‌या महाजन लोग
किस विध भुगतूं जी बाईसा म्हारा जाड़ा ने
जाड़ो तो पड्यो जी बाईसा म्हारा महलां मे,
मार्‌या मार्‌या राजन लोग ।।किस विध०।।
दादा भाई को दुपट्टो ये भोजाई म्हांरी
ओढ़लो-म्हारी लेल्यो मोसोड़
इस विध भुगतुं ये भौजाई म्हारी जाड़ा ने

अर्थात्—

मेरी बाईसा, पहाड़ो पर सर्दी पडती है । सर्दी से दादुर और मोर मर गए है । बाईसा, मैं जाडे को कैसे सहन करूंगी । बाईसा, सर्दी मेरे बागो मे पड़ी है और माली लोग मारे गये है ।

मेरी बाईसा, मैं जाडे को कैसे सहन करूं गी ? मेरी बाईसा, सर्दी शहर मे पडती है और महाजन लोग मारे गए है ।

मेरी बाईसा, मै जाडे को कैसे सहन करू । बाईसा, जाडा मेरे महल मे पडा है और महल के लोग मारे गये है ।

मै जाडे को किस प्रकार सहन करू ? मेरी भौजाई जी, दादा जी का दुप्पटा ले लीजिये और रजाई ओढ लीजिये । मेरी सोड ले लीजिये और इस प्रकार जाडा सहन कीजिये ।

हिचकी घड़ी ए घड़ी मत आवे

गेला में चींतारै, राजन मारगिये चींतारै
चालतड़ां हिचकी घड़ी ए घडी आवे ए
म्हारा साजनां रो जीव दुख पावै ए
हिचकी घड़ी ए घड़ी मत आवै ए
बागां में चींतारै राजन बावडियॉ चीतांरै
हिचकी फूल बिणता दूणी आवै री
म्हारो सैलाणी भंवर दुख पावै ए
हिचकी घड़ी ए घडी मत आवै ऐ
खेलतॉ चीतारै राजन पासा में चींतारै ए
हिचकी चोपड खेलन्ता दूणी आवै ए
हिचकी घडी ए घडी मत आवै ए
म्हारा छैल भंवर रो जीव दुख पावै ए।
मेला में चीतारै साजन गोखां में चींतारै
हिचकी मेला में दूणी आवै री
हिचकी घडी ए घडी मत आवै ए
म्हारा सौलाणी भंवर रो जीव दुख पावै ए
ढोल्या में चीतांरे साजन सेजा में चींतारै ऐ
हिचकी पौढतणां दूणी आवै री
हिचकी घडी ए घडी मत आवैरी

अर्थात्—

प्रियतम मार्ग मे चलते हुये मुझे-याद करते हे। चलते हुये बार-बार हिचकी आती है।

मेरे प्रियतम दुख पा रहे हे।

हिचकी तू बार-बार मत आ। मेरे प्रियतम बागो मे और बावडियो पर मुझे याद करते है।

फूल चुनते समय हिचकी दूनी आती है, हिचकी बार-बार मत आ।
मेरे सैर करने वाले प्रियतम दुख पाते है, हिचकी बार-बार मत आ।
प्रियतम खेलते हुये और पासा डालते हुये मुझे याद करते है।
चौपड खेलते समय हिचकी दूनी आती है, हिचकी बार-बार मत आ।

मेरे छैल भवर का जी दु ख पाता है, प्रियतम महलो मे और झरोखो मे मुझे याद करते है।

हिचकी महलो मे दूनी आती है।
हिचकी बार-बार मत आ।
मेरे सैर करने वाले भवर जी का जी दु ख पाता ह।
मेरे प्रियतम ढोलिये मे और मेजो मे मुझे याद करते है।
सोने के समय दूनी हिचकी आती है।
हिचकी बार-बार मत आ।
मेरे आलीजी का जी दु ख पाता है,
हिचकी बार २ मत आ।

ओलू घणी आवे

माथा ने मेमद घढावजो सा
ओलूं रखडी रे बीच
ओलूं घणी आवै म्हारा राज।
राज री ओलूं म्हैं करां ओ

हाँ तो गढपतिया राज
म्हारी करे न कोय
ओलूं घणी आवै म्हारा राज
नींद नहीं आवे म्हारा राज
ओलूं हो हरिया डूंगरा ओ
हां ओ मुरधरिया राजा
ओलू हरिये रूमाल
ओलूं घणी आवे म्हारा राज
धान नहीं भावे म्हारा राज
हिवड़े ने हांस घड़ावजो सा
ओलूं छतियां रे बीच
ओलूं घणी आवै म्हारा राज
घड़ी एक न आवडै म्हारा राज
ओलूं कर पोली पड़ी
लोग जाणे पड रोग
छाने लांघण म्हे करॉ
पिया मिलण रे जोग
ओलूं घणी आवै म्हारा राज, जी नींद नहीं आवै म्हारा राज
कागद थोड़ा हेत घणां; कूंकर लिखूं बणाय
सागर में पाणी घणो, गागर कोण समाय
ओलूं घणी आवै म्हारा राज. नींद नहीं आवै म्हारा राज।

अर्थात्--

सिर के लिए मेमद बनवा दीजिए।
रखडी देख कर मैं आपकी याद करू।
मेरे राजा मुझे आपकी याद बहुत आती है।
मेरे राजा, मुझे नीद नही आती है।
गढपति राजा, आपकी याद मैं करती हू।

मेरी याद कोई नही करता
मेरे राजा, मुझे आपकी याद बहुत आती है ।
मेरे राजा, मुझे नीद नही आती है,
हरे पहाडो को देख कर मुझे आपकी याद आती है ।
हरा रूमाल देखकर मुझे आपकी याद आती है ।
मेरे राजा, मुझे आपकी याद बहुत आती है ।
मेरे राजा, मुझे अन्न नही अच्छा लगता है ।
छाती पर धारण करने के लिए हास बनवाना,
छाती देख कर मैं आपकी याद करू ।
मेरे राजा, मुझे आपकी याद बहुत आती है ।
मेरे राजा, मुझे एक घडी भी नही सुहाती है,
मैं आपकी याद करती हुई पीली पड गई हूं
और लोग जानते हैं कि पीलिया हो गया है ।
प्रियतम से मिलने के लिये हम चुपचाप लघन करती है ।
मेरे राजा, मुझे आपकी याद बहुत आती है ।
मुझे नीद नही आती है,
कागज थोडा है और प्रेम बहुत है
मैं उसको किस प्रकार लिखू ?
सागर मे पानी बहुत है मगर, गागर मे कैसे समा सकता है ?
मेरे राजा मुझे आपकी याद बहुत आती है,
मेरे राजा, मुझे नीद नही आती है ।

आवे तो बोली कोयल

आॅवे तो बोली कोयल, जी ढोला !
विण बादल, विण बीजली जी !
हों मेवासी ढोला ! हो धन वारी लोल
वेगा पधारो जी म्हारे पामणॉ ।

थे म्हारे आजो पामणा जी ढोला !
से गणगोरिगॉ री रात,
हो मेवासी ढोला, हो धन-वारी लोल,
वेगा पधारो जी म्हारे पामणॉ ।
बागो तो सोवे केसरिया जी ढोला,
माथे मोहर गज पाग,
हा मेवासी ढोला, हो धन-वारी लोल
वेगा पधारो जी म्हांरा पामणॉ ।
रामपुरा रो सेलड़ो जी ढोला,
असल गेडा री ढाल,
हो मेवासी ढोला, हो धन-वारी लोल,
वेगा पधारो जी म्हारा पामणाँ ।
कड़ियॉ ए कटारो बॉकड़ो जी ढोला,
असल सिरोई तलवार
हो मेवासी ढोला हो धन-वारी लोल,
वेगा पधारो जी म्हारे पामणॉ ।
धोलो तो घोड़ो हॉसलो जी ढोला
मोत्यां जाड्यो ओ पलाण,
हों मेवासी ढोला, हो धन-वारी लोल
वेगा पधारो जी म्हारे पामणॉ ।

अर्थात्—

पतिदेव, आम के पेड़ पर कोयल बोली है,
बिना बादल और बिना बिजली के ।
मेवासी ढोला, मै आप पर बलिहारी जातो हू ।
जल्दी ही हमारे यहा पाहुने होकर आवे ।
पतिदेव, आप हमारे घर पाहुने होकर आना,
ठीक गनगौर की रात को ।

मेवामी ढोला ! मैं आप पर वलिहारी जाती हू, जल्दी ही हमारे यहाँ पाहुने होकर आ जाओ !
ढोला जी, आपको केसरिया वागा सुशोभित हे
मर पर मोहर गज दाम की पाग है
मेवामी ढोला, मैं आप पर वलिहारी जाती हू
जल्दी ही हमारे यहाँ पाहुने होकर आओ।
ढोला जी, आप रामपुर का सेलडा धारण लिये हुये हो
और असली गेडे की ढाल है
मेवासी ढोला, मै आप पर बलिहारी जाती हू ।
जल्दी ही हमारे यहाँ पाहुने होकर आओ।
ढोलाजी, आपकी कमर मे वाका कटार बधा हुआ है
असली सिरोहीं की तलवार लटकी हुई है
मेवामी ढोला, मैं आप पर वलिहारी जाती हू
जल्दी ही हमारे यहाँ पाहुने वन कर आओ।
टोलाजी, सफेद हीसला घोडा आपकी सवारी के लिये है।
घोडे का पलान मोतियो से जडा हुआ हे
मेवासी ढोला, मै आप पर वलिहारी जाती हू ।
जल्दी ही हमारे यहाँ पाहुने होकर आओ ।

टिप्पणी—

राजस्थानी युवक का जीवन एक सैनिक का जीवन रहा हे। वह प हुन की भाति विशेष त्यौहारो पर ही प्रियजनो मे मिलने के लिये घर पहुचता था। प्रस्तुत गीत मे गणगौर के त्यौहारो पर एक नायिका की अपने प्रिय से मिलन की उत्कट अभिलाषा व्यक्त हुयी है।

पपैया थारे वोलण री रुत आई रे

रुत आई रे पपैया थारे, बोलण री, रुत आई।
जेठ मास री लूवा रे बीतीं, अब सुरंगी रुत आई रे

रुत आई रे पपैया थारे बोलण री, रुत आई रे।
असाढ़ उतरियो, सावण लाग्यो. काली घटा घिर आई रे
कदेयक झोला चलै सूरियो, धीमी धीमी पुरवाई रे
रुत आई रे पपैया थारी, बोलण री, रुत आई रे।
मोठ बाजरी सूं खेत लहरकै, बन बन हरियाली छाई रे
रुत आयी रे पपैया थारे बोलण री, रुत आई रे।
झिरमिर झिरमिर मेहड़ो बरसे, स्याम बदली घिर आई रे
रुत आई रे पपैया, थारे बोलण री, रुत आई रे।

अर्थात्—

ऋतु आई, ओ पपीहा ! तुम्हारे बोलने की ऋतु आई है,
जेठ मास की लूएँ बीत गई, अब सुरगी ऋतु आ गई है।
ऋतु आई०
आपाढ उतर गया, श्रावण लगा और काली घटा घिर आई है। ऋतु।
कभी वर्षा लाने वाली उत्तरी हवा का झोका लगता है और कभी धीमी-धीमी पुरवाई चलती है।
ऋतु आई०
मोठ-बाजरी से खेत लहराते है, बन-बन मे हरियाली छा गई।
ऋतु आ गई०
झिर-मिर झिर-मिर मेह बरसता है और श्याम बादली घिर गई है।
ऋतु आ गई।

| ———

१५. जलाल और उससे सम्बन्धित राजस्थानी लोकगीत

जलाल सम्बन्धी राजस्थानी लोक-साहित्य प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध होता है। जलाल सम्बन्धी कई दोहे भी प्राचीन पुस्तको के विभिन्न भण्डारो मे मिल जाते हैं। जलाल सम्बन्धी कुछ वार्ताएँ भी पुरानी पुस्तको मे लिखी हुई मिल जाती है। राजस्थानी लोक गीतो मे तो जलाल का उल्लेख कई वार हुआ है। जलाल सम्बन्धी कुछ लोक-गीत इस प्रकार है—

१—जलो म्हारी जोड रो उदियापुर माले रे।
२—जला रे आमलिया पाकी ने अब रुत आई रे।
३—जल्ला रे मैं तो थारा डेरा निरखण आई रे।
४—हाँ रे जलाल ऊगुणी दिसरा रे।

उक्त लोक-गीत राजस्थान के विभिन्न भागो मे वडे चाव से गाये जाते हैं। इन लोक-गीतो का स्वर-सौंदर्य भी मोहक होता है, जिसका राजस्थानी जनता पर विशेष प्रभाव है।

भारतीय लोक-कला-मडल, उदयपुर के खोज-विभाग ने जैसलमेर क्षेत्र मे जलाल सम्बन्धी एक नवीन गीत भी रेकार्ड किया है—

सईयां मोरी रे आयोडो सुणी जे रे जलालो देश मे।[1]

जोडी रा जला, मिरगा नेणी रा जला आदि प्रयोग राजस्थानी लोक-गीतो मे वहु प्रचलित है। जिस प्रकार ढोला जी, ढोला आदि शब्द पति के अर्थ प्रकट करते है उसी प्रकार जलो जी, जला आदि भी पति अथवा प्रियतम के सूचक हैं।

---

१ राजस्थान का लोक-सगीत, श्री देवीलाल सामर, लोक-कला मण्डल, उदयपुर, पृष्ठ ४४।

जल.ल कौन था और उसका प्रयोग राजस्थानी साहित्य मे किस प्रकार हुआ ? यह समस्या अभी तक नही सुलझायी जा सकी है। इस विषय मे श्री जगदीशसिह गहलोत ने अपनी पुस्तक मारवाड के ग्राम-गीत पृष्ठ १७८ की टिप्पणी मे निम्नलिखित विचार प्रकाशित किये है—

"मुगल सम्राट अकबर का पूरा नाम अबुल फतह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह था। जल्ला, जलाल तथा जलाला इसी जलालुद्दीन शब्द के अपभ्र श है जो अब पति शब्द के स्थान मे प्रयोग होते है। कहते है कि अकबर को सकेत कर यह गीत उस समय रचा गया था। इस बादशाह का उस समय के राजपूत राजाओ पर बडा भीतरी प्रभाव पडा था। फारसी तवारीखो तथा मारवाडी ख्यालो से ज्ञात होता है कि सीसोदिया (गहलोत) तथा चौहान दो ही खापे उसके भीतरी प्रभाव से बची थी। इन बादशाहो का यह प्रभाव करीब स० १७७१ वि० (सम्राट फर्रुखसियर) तक नरेशो पर बना रहा।"

अन्य किसी विद्वान ने अब तक जलाल और उससे सम्बन्धित साहित्य पर विचार नही किया है। श्री गहलोतजी ने भी अपने कथन के साथ कोई प्रमाण नही उपस्थित किया है जिससे यह कोरी कल्पना ही मानी जा सकती है। अवश्य ही आदरणीया श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी जी चू डावत, रावतसर ने अपने "माझल रात" नामक कथाओ के सग्रह मे जलाल सम्बन्धी एक कहानी प्रकाशित की है। किन्तु इसके साथ भी कोई विचार प्रकट नही किया गया है।

कई वर्ष पूर्व मेरे आग्रह पर राजस्थान के सुप्रसिद्ध विद्वान सशोधक आदरणीय श्रीयुत अगरचन्द जी नाहटा, बीकानेर ने प्राचीन हस्तलिखित पुस्तको से प्रतिलिपि करवा कर कई राजस्थानी लोक-कथाए मुझे भेजने की कृपा की है। इन कथाओ मे एक "जलाल बूबना री वात" भी प्राप्त हुई है। इस वार्ता के अध्ययन से ज्ञात होता है कि ढोला, मरवण, पन्ना, वीरमदे, फूलजी, फूलमती आदि की तरह जलाल बूबना री वार्ता भी प्राचीन काल मे प्रचलित राजस्थान की एक प्रेम कथा है। इस प्रेम कथा का नायक जलाल है, बूबना नायिका है। इस प्रेम कथा के आधार पर ही जलाल राजस्थानी साहित्य मे लोकप्रिय हुआ है। जलाल सम्बन्धी वार्ता का साराश इस प्रकार है।

थटाभखर के वादशाह मृगतमयाची की वहिन गाहणी का विवाह वलख के वादशाह कुलहनसीब से हुआ । गाहणी के जलाल नाम का पुत्र हुआ । गाहणी अपने परिवार सहित मृगतमायची के पास थटाभखर मे आ गई ।

जलाल वहुत रगीली तवियत का हुआ । उसके तना और मना नाम के दो मित्र थे । गखडा-ढाढी मु ह आगे गाता । ताजिया गुलाम देश-प्रदेश की वाते करता । फुलम दे खवास साथ रहता । जलाल मूल्यवान वस्त्र पहिनता और चार मुहर तोले का इत्र लगाता । चारो ओर जलाल की शौकीन तवीयत की बाते प्रसारित हो गई । इसी समय सिंध-समुद्र के वादशाह भवर के दो शाहजादियाँ थी । वडी मूमना १८ वर्ष की और छोटी वूवना १५ वर्ष की ।

सिध समुद्र के वादशाह ने जलाल की प्रसिद्धि सुन कर अपनी छोटी शाहजादी वूवना का विवाह उससे निश्चित किया । साथ ही बडी पुत्री मूमना का विवाह थटाभखर के बादशाह से करने का विचार प्रकट किया । थटाभखर के वादशाह मृगतमायची ने हठ पूर्वक छोटी शाहजादी वूवना से विवाह किया और मूमना से जलाल का विवाह करवा दिया ।

थटाभखर मे विवाह के बाद जलाल और वूवना दोनो ही वहुत दुखी रहते और एक दूसरे से मिलने का प्रयत्न करते । जलाल वूवना के झरोखे की जाली की ओर निगाह लगाये बैठा रहता किन्तु वूवना का "दीदार" नही पाता—

लोचन प्यारे दीद के, निरखे नित की नित्त ।
दरसण ही पावे नहीं मित्र गए कहाँ कित्त ।।

वूवना की दासी नेत्रवादी थी । वूवना ने जलाल के समाचार सुने । वादशाह का वूवना के लिए महल मे आने का वर्ष मे केवल एक ही दिन निश्चित था । क्योकि वादशाह के हरम मे कई वेगमे और रखेलनिया थी । एक दिन वूवना वादशाह से स्वीकृति मगवा कर अपनी वहिन मूमना से मलने के लिये जलाल के महल मे गई । वही से लौटते हुए रथ मे जलाल से

प्रथम साक्षात्कार किया। दूसरी बार नेत्रबादी फूलो से भरे हुए टोकरे मे छिपा कर जलाल को बूबना के पास ले आई। बूबना के साथ आया हुआ अन्धा डोढीवान इतना चतुर था कि पैरो की आहट और कर-स्पर्श से ही हरम मे कौन जाता है, इसका ज्ञान प्राप्त कर लेता। जलाल ने उससे क्षमा माग कर ही बूबना के महल मे प्रवेश किया। बादशाह को सूचना मिली कि जलाल बूबना के महल मे है। बादशाह महल मे पहुचा तो बूबना ने जलाल को फूलो के ढेर मे छिपा दिया। बादशाह ने फूलो को जलाल की सास से हिलता हुआ देखा तब नेत्रबादी ने दोहा कहा—

भमरा कली लपेटियो, कायर कपे काइ।
जो जीव्यो तो जुग समो, मुवा तो मोटी ठाई॥

बादशाह के पूछने पर बूबना ने स्पष्ट किया कि फूल मे भौरा वन्द हो कर आ गया है। बादशाह ने समझा बेगमो ने ईर्ष्या वश जलाल-बूबना की शिकायत की है। ६ माह बूबना के महल मे रह कर जलाल अपने महल मे आया। तना-मना और गखडा ढाडी ने वास्तविक बात प्रकट कर पुरस्कार प्राप्त किया। फिर जलाल नित्य ही महल के पीछे की खिडकी मे लटकाये गये झूले मे हो कर बूबना से मिलने लगा। बादशाह को भी शका हुई तो उसने जलाल को मरवाने का निश्चय किया। जलाल के मार्ग मे एक वडा शामियाना बँधवाया गया। जलाल के शामियाने के नीचे आने पर शामियाना गिरा दिया। शामियाने के गिरते समय जलाल ने अपनी कटार ऊची की जिससे शामियाना फट गया और जलाल वच गया।

फिर लोगो की राय से जलाल को गिरवर गढ की विजय के लिए भेजा गया। गिरवरगढ के परगने मे जोहियो न बगावत कर गढ पर अधिकार कर लिया था। बूबना को तीज पर लौटने का वचन दे कर गिरवर गढ पहुचा। जलाल ने जोहियो से बादशाह के कुपित होने की वात कह कर अपने अच्छे सम्बन्ध स्थापित कर लिये और वरसात होने पर अपनी सेना सहित थटाभखर के लिए रवाना हो गया। जलाल को रवाना हुआ देख कर जोहिये अपने-अपने खेतो मे वुवाई के लिए चले गये। पूर्व योजनानुसार जलाल ने अचा-

तक ही आक्रमण कर गढ पर अधिकार कर लिया और सारे परगने मे बिखरे हुए जुहियो को दण्ड देकर अपना प्रबन्ध कर लिया। तीज पर जलाल थटाभखर लौट आया और पानी के बीच मे बने हुए महल मे बूवना से मिला।

एक वार वादशाह जलाल को शिकार मे साथ ले गया किन्तु यहा भी वादशाह के तेज घोडे पर सवारी कर जलाल बूवना से मिल आया।

बादशाह ने अन्त मे यही निश्चय किया कि यदि बूवना ने जलाल के मरने की सूचना प्राप्त की तो वह अवश्य ही मर जावेगी और बूवना को मरा हुआ जानकर जलाल जीवित नही रहेगा। बादशाह ने एक वार शिकार मे जाकर सूअर से सघर्ष मे जलाल की मृत्यु का समाचार बूवना के पास भेज दिया जिससे बूवना ने अपना दम तोड दिया। जलाल ने भी जब बूवना की मृत्यु का समाचार सुना तो वह वेहोश होकर मर गया।

दोनो प्रेमियो को साथ ही दफनाया गया। शिव-पार्वती कब्र के पास होकर निकले। कब्र से जलाल द्वारा लगाये हुए इत्र की सुगध फूट रही थी। पार्वती की हठ पर शिवजी ने कब्र खोदी और पार्वती ने दोनो प्रेमियो के दर्शन किये। पार्वती ने कहा "इन प्रेमियो की मृत्यु असमय मे हुई है, आप इनको जीवित कर दीजिये।" शिवजी ने विवश होकर दोनो प्रेमियो को जीवित किया और जलाल को थटाभखर का बादशाह होने का वरदान दिया।

कुछ दिनो मे थटाभखर के बादशाह का देहान्त हुआ और जलाल को राज्य मिला। जलाल ने अपने पूर्वजो के राज्य पर अधिकार किया और दोनो प्रेमी आनन्द से जीवन व्यतीत करने लगे।

उमरकोट की महाराणी आदरणीया सुभद्राकुमारी जी से ज्ञात हुआ कि थटाभखर सिंध मे एक ऐतिहासिक स्थान है। थटाभखर मे अब भी पुराने भवनो के खण्डहर देखे जा सकते हैं। इस प्रकार प्रस्तुत वार्ता से कई ऐतिहासिक वातो पर प्रकाश पडता है। प्रस्तुत कहानी मे कई राजस्थानी उत्कृष्ट दोहे भी प्राप्त होते है। भारतीय सस्कृति का चित्रण प्रस्तुत कहानी की एक प्रधान विशेषता है।

———

१६. राजस्थानी लोकगीतों में स्वर-सौन्दर्य

राजस्थानी लोकगीत सुनने मे अत्यन्त कर्ण-प्रिय होते है। राजस्थानी भाषा से अनभिज्ञ व्यक्ति भी राजस्थानी लोकगीतो के स्वर-माधुर्य से प्रभावित हुए बिना नही रहते। विभिन्न विषयो के गीत विभिन्न रागो मे गाये जाते है। जैसे बहुधा होली के गीत धमाल मे और ख्याल के गीत लावणी मे गाये जाते है। राजस्थानी लोकगीत मुख्यत: माड, देश, सोरठ, कालीगडा, जोगिया, आसावरी आदि रागो मे गाये जाते है। राजस्थानी लोकगीतो की अपनी मौलिक धुनो की सख्या भी कम नही है, जैसे पणिहारी, जलो, नागजी, वगडावत, कागसियो, आदि। स्त्री-पुरुष जब सामूहिक रूप मे आत्मविभोर होकर बगीचो, तालाबो, मेलो और किसी त्यौहार अथवा मगल-कार्य मे राजस्थानी गीत गाते है तो सुनने वाले चमत्कृत हो जाते है। नीचे कुछ राजस्थानी लोकगीती की स्वर-लिपिया पाठको की जानकारी के लिये दी जाती है—

(१) सावणोया-री तीज

आई आई सावणिये री तीज,
गोरी तो रमवा निसरी जी म्हारा राज।
देवो नी सासू जी म्हांने सीख,
सहेल्यां उबी बारणे जी म्हारा राज।
जावो जावो मोटा घर री नार,
खेल ने वेगा आवजो जी म्हारा राज।
खेलता रमन्ता लागी बार,
सासू जी तेड़ो मोकल्यो जी म्हारा राज।
[illegible]

बालूडो रोवे पालणे म्हारा राज ।
खेलन्ता रमन्ता लागी बार,
भाभी सा तेड़ो मोकल्यो जी म्हारा राज
घरे पधारो सगुणी नार,
उडिके थांरा साहिबा जी म्हारा राज ।
देवो नी सहेल्यां माने सीख,
सासू जी तेड़ो मोकल्यो जी म्हारा राज ।
पालणे बालूड़ो रोवे ,
उडिके म्हारा साहिब जी महाराज
खोलो खोलो ने बजड़ किंवाड़
सुन्दर उबी बारणे म्हारा राज
जड़िया रे जड़िया बजर किवाड़
ताला तो बीजलसार रा जी म्हारा राज,
भाग्या भाग्या बजड़ किवाड़
ताला तो बीजल,सार रा जी म्हारा राज,
आई आई मारूजी ने रीस
गोरी रे वायो चाबकोजी म्हारा राज
आई आई मारुणी ने रीस
मेंलां सूं नीचे ऊतरी जी म्हारा राज
खोल्या खोल्या सोला सिणगार,
रातो तो ओढ्यो पोमचो जी म्हारा राज ।
चाली चाली पीहरिया री ओर,
गोरी तो हाली सूती जी म्हारा राज ।
रुको जी रुकोजी लाड़ी आज,
पाड़ोसी बोल्या आपने जी म्हारा राज ।
देस्यां देस्यां घेवर री गोठ,
वेन्या ने राखां प्यार सूं जी म्हारा राज ।

सात भायां री लोडी बेन,
पीयर से पूरो पाडस्यां जी म्हारा राज।
धोलो घोड़ो झरमर पूंछ,
जेठसा आणो आविया जी म्हारा राज।
आप तो जेठ सा म्हारा बाप,
आविया जूं जावजो जी म्हारा राज।
राती घोड़ी झरमर पूंछ
देवर आणे आविया जी म्हारा राज।
आप तो देवर सा म्हारा वीर,
आविया जू जावजो जी म्हारा राज।
सात घोड़ा पिंजस असवार,
सायब जी लेवा आविया जी म्हारा राज।
मनो मनो मोटा घर री धीय,
डीलां डील आविया जी म्हारा राज।

प्रस्तुत गीत श्रावणी तीज के अवसर पर झूला झूलते समय अथवा नृत्य के साथ गाया जाता है। इसमे दाम्पत्य जीवन-सम्बन्धी पूरी कथा का समावेश किया गया है जिसमे एक महिला द्वारा अपने पति से रूठकर अपने पीहर जा ने और ससुराल वालो द्वारा उसको मनाने का चित्रण किया गया है—

श्रावण की तीज आई और गोरी खेलने के लिए चली।
ओ सासूजी ! हमे सीख दो।
मेरी सहेलिया बाहर खड़ी है।
जाओ जाओ ओ बड़े घर की स्त्री,
खेल कर पन जल्दी लौट आना।

खेलते और आनन्द करते देर हो गई ।
सास जी ने बुलावा भेजा ,
ओ गुणवती स्त्री ! घर पर आओ ।
भाभीजी ने बुलावा भेजा ।
ओ गुणवती स्त्री ! घर आओ ।
तुम्हारे प्रियतम प्रतीक्षा करते है ।
सहेलियो, हमे सीख दो ।
सासुजी ने बुलावा भेजा ।
पालने मे वालक रूठ कर रोता है,
प्रियतम प्रतीक्षा करते है ।
खोलो खोलो मजवूत वन्द किवाड को ।
सुन्दर बाहर खडी है ।
मजवूत किवाड वन्द है ।
मजवूत फौलाद के ताले लगे हुए हैं ।
मजवूत किवाड टूट गए,
मजवूत लोहे के ताले टूट गये ।
प्रियतम को क्रोध आया,
गोरी के चावुक मारा ।
स्त्री को क्रोध आया,
वह महलो से नीचे उतरी ।
उसने सोलह शृगार खोल दिये,
उसने लाल पोमचा धारण कर लिया
अपने पीहर की ओर चली,
गोरी रूठकर चली ।
ओ वहू, आज रुक जाओ,
आपको पडोसी कहते है ।
तुम्हे घेवर का प्रीति-भोज देगे

अन्तरा

रे ग –	रे – सा –	रे म –	प – पध सानि
दे वो ऽ	नी ऽ सा ऽ	सू जी ऽ	म्हा ऽ नैंऽ ऽऽ
ध – –	प म म ध	प प –	म ग म
सी ऽ ऽ	ख ऽ स ऽ	हे ल्यां ऽ	ऊ ऽ भी ऽ
– – –	ग – र –	गप म –	रे ग रे सा
ऽ ऽ ऽ	वा ऽ रे ऽ	ने ऽ जी ऽ	म्हा ऽ रा ऽ
स – –	– – – सा	रे ग –	रे – सा – –
रा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ज	जा वो ऽ	जा ऽ वो ऽ
रे म –	प प पध सानि	ध – –	प म म ध –
मो टा ऽ	ध र रीऽ ऽ ऽ	ना ऽ ऽ	र ऽ खे ऽ
प प –	म ग म –	– – –	ग – रे ऽ
ल ने ऽ	बे ऽ गा ऽ	ऽ ऽ ऽ	आ व ऽ
गप म –	रे ग रे सा	सा – –	– – – सा
जोऽ जी ऽ	म्हा रा ऽ	रा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ज
०	२	×	३

(२) रतन राणा

म्हारा रतन राणा,
एक र तो अमराणै घोड़ो फेर ॥
अमराणे मे बोले सूवा मोर,
कोई बागां मे बोले मीठी कोयल जी,
म्हारा रतन राणा,

एक र तो अमराणै घोड़ो फेर ।।
अमराणै में घोर अंधार,
हां रे म्हारा सोढा राणा,
अमराणै में घोर अंधार
बिलखा लागै महल मालिया ।
हो म्हारा रतन राणा
एक र सां अमराणे पाछो आव ।।
ऊभी धण छाजलिये री छांह
हो जी हो म्हारा रतन राणा
भटियाण ऊभी छाजलिये रीं छांह
आंसूड़ा ढलकावै कायर मोर ज्यूं
रे म्हारा रतन राणा
एक र तो अमराणे घुड़लो फेर ।
अमराणे में घरट मंडाय
हो जो हो म्हारा रतन राणा
घर घर घरटी रे मंडाय
आटो पीसीजे सोढां री फोज ने
रे म्हारा सायर सोढा
एक र तो अमराणे घोड़ो फेर
अमराणे में महूडै रा रूख
हो जी हो म्हारा रतन राणा
अमराणे में महूडै रा रूंख
महूड़ा गलीजै ने मदड़ो नीसरै ।
हो म्हारा रतन राणा
मदडो पीवण पाछो आव ।
अमराणे में घड़े रे सुनार
हो जी हो म्हारा रतन राणा

अमराणे में घड़ै रे सुनार
पायलडी घडा दे रिमझिम बाजणी।
रे म्हारा रतन राणा
एक र सा अमराणे पाछो आव।

अर्थात् —

उमरकोट के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रतन राणा को सम्बोन्धित कर यह गीत गाया जाता है। रतनराणा ने १६ वी सदी मे ब्रिटिश-शासन का सगठित विरोध किया था जिसके कारण उनको फासी हुई थी। मेरे रतन राणा ! एक बार तो अमराणे की ओर घोडा लौटाओ। अमराणे मे मोर बोलते है और बागो मे मीठी कोयल बोलती है। मेरे रतन राणा, एक बार तो अमराणे की ओर घोडा लौटाओ। अमराणे मे घोर अन्धकार है। मेरे सोढा राणा, अमराणे मे घोर अन्धकार है, महल मालिये रोते हुये से प्रतीत होने है। ओ मेरे रतन राणा, अमराणे मे फिर आओ !

तुम्हारी स्त्री छज्जे की छाया मे खडी है। ओ मेरे रतन राणा ! मटियाणी छज्जे की छाया मे खडी है और कायर मोर की तरह आँसू गिरा रही है। ओ मेरे रतन राणा, अमराणे की ओर घोडा लौटाओ। अमराणे मे गरट लगे हुये है। ओ मेरे रतन राणा, घर-घर चक्की चलती है और सोढो की सेना के लिये आटा पीसा जाता है। ओ मेरे सयाने सोढे ! एक बार अमराणे की तरफ अपना घोडा लौटाओ ! अमराणे मे महुए के पेड है। ओ मेरे रतन राणा ! अमराणे मे महुओ के पेड से महुऐ गलते है और मदिरा निकलती है। ओ मेरे रतन राणा ! मदिरा पीने के लिये पुन आओ।

अमराणे मे सुनार काम करते है। ओ मेरे रतन राणा,अमराणे मे सोनी काम करते है और मेरे लिये रिमझिम बजने वाली पायल बनवा दो। ओ मेरे रतन राणा ! एक बार अमराणे मे वापिस आओ।

विशेष–अमराणे से तात्पर्य उमरकोट से है जो अभी राजस्थान की सीमा पर पाकिस्तान मे है। घरट से तात्पर्य प्राचीन काल की आटा पीसने की चक्की से है।

राग मॉड ताल दादरा

×	०	२	३
ऽ ऽऽ	ऽ सा नि	सा ग ग	म प ऽ
ऽ ऽऽ	ऽ म्हाँ रा	र त न	रा णा ऽ
पध मप –ग ग म प		ग म धप ध म प ग	सा नि रे सा
एऽ कऽ ऽर तो श्र म		रा णोऽऽऽ ऽऽऽ	घो डो ऽऽ
सा ऽऽ	ऽसा प प	प प पम	मपध ध –
फे ऽऽ	ऽर म्हारा	र त नऽ	राऽऽ णा ऽ
पध मप–ग	ग म प	ग म धपध मपग	सा नि रे सा
एऽ कऽ ऽर	तो श्र म	रा णो ऽऽऽ ऽऽऽ	धो डो ऽऽ
सा ऽऽ	ऽ ऽ ऽ		
फे ऽऽ	र ऽ ऽ		

अन्तरा

गग मप गग	सा सारे नि	सा ग सा	गम प मध
अम राऽ ऽऽ	णो मेऽ ऽ	बो ले ऽ	सूऽ वा ऽऽ
प — —	–प प प	प प ऽम	मपध ऽऽम
मो ऽऽ	ऽर को ई	वा गाँ ऽऽ	मे ऽऽ ऽ ऽऽ
मप ग ऽसा	सा सारे नि	सा ग ऽसा	गम प मध
बो ले ऽऽ	मी ठी ऽ ऽ	को ऽ ऽ य	ली ऽऽ ऽऽ
प – –	– प प	प प पम	मप धऽ
जी ऽऽ	ऽ म्हा रा	र त नऽ	राऽ णा ऽ
पध मप ऽग	ग म प	ग म धपध मपग	सा नि रेसा

एऽ कऽ ऽर   तो अम   रा णेऽऽऽ ऽऽऽ   घो ्ो ऽऽ

सा – –   सा ऽऽ

फे ऽ ऽ   – र ऽऽ

(३) क्यो लाया सोकनियां

म्हारे गले का हार राजा, क्यों लाया सोकनिया।
जो मैं होती आधरी तो लाता राजा सोकनियां
म्हारी नींबू सरीखी आंख, राजा क्यों लाया सोकनियां।
जो मैं होती दांतली तो लाता राजा सोकनियां
म्हारा दाड़म सरीखा दांत, राजा क्यों लाया सोकनियां।
जो मै होती तोतजी तो लाता राजा सोकनियां
म्हारी जीभ कमल री पांख, राजा क्यों लाया सोकनियां।
जो मैं होती हाथ री लूली तो लाता राजा सोकनिया
म्हारा हाथ चम्पा की डाल, राजा क्यों लाया सोकनियां।
जो मैं होती पांगली तो लाता राजा सोकनियां
म्हारा पग देवल रा खम्भ, राजा क्यूं लाया सोकनियां।
जो मैं होती बांझ बझोटी तो लाता राजा सोकनियां
म्हारा पांच खेले द्वार, क्यों लाया सोकनियां।

कहावत है कि सौत मिट्टी की भी बुरी होती है। प्रस्तुत गीत मे सौत से दुखी एक महिला अपने सौन्दर्य का वखान स्वय करती है—

ओ मेरे गले के हार राजा! आप सौत क्यो लाये? यदि मैं अन्धी होती तो आप सौत लाते। मेरी नीबू जैसी आँख है। राजा आप सौत क्यो लाये? यदि मैं निकले हुए दाँत की होती तो आप सौत लाते, किन्तु मेरै दाडम जैसे दाँत है। राजा आप सौत क्यो लाये?

यदि मे तोतली बोलने वाली होती तो सौत लाते । मेरी जीभ कमल की पाख जैमी है । राजा ! आप सौत क्यो लाये ?

यदि मैं हाथ की लूली होती तो सोत लाते ! मेरे हाथ चम्पे की डाल जैसे है । राजा आप सौत क्यो लाये ?

यदि मै पैरो की लगडी होती तो सौत लाते । मेरे पैर देवल के स्तम्म जैसे है ! राजा ! आप सौत क्यो लाये ?

यदि मै वॉझ होती तो आप सौत लाते ? किन्तु मेरे द्वार पर पाँच बालक खेलते है । राजा ! आप सौत क्यो लाये ?

विशेष -दाडिम जैसे दॉत, कमल की पाख जैसी जिह्वा, चम्पे की डाल जैसे हाथ, मन्दिर के स्तम्भ जैसे पैर, नीबू की फॉक जैसी ऑखे सुन्दरता को व्यक्त करती है ।

ताल कहरवा

धसा	ऽसा	सा -	सा-	रेऽ	ऽरे,	साऽ	साऽ
म्हारे	ऽग	ले-ऽ	काऽ	हाऽ	ऽर	राऽ	जा-ऽ
रे	रे	रे	सा	सासा	सा	सा	—
क्यू	ला	या	सौ	क	नि	या	ऽ
रे	रे	म	म	मप	ऽप	प	पन
जो	मै	हो	ती	आऽ	ऽध	री	तो
ध	ध	प	प	म	मध	प	ऽ
ला	ता	रा	जा	सो	कनि	या	ऽ

स्वरलिपि श्री रामलाल माथुर

(४) सुवटा पीव मिला दे

सूवटा पीव मिला दे
सूवटा मारूजी मिला दे रे,
तेरो जलम जलम गुण गास्यूं
सूवा म्हारो भवॅर मिला दे रे।
गोरी म्हांने पतो बता दे रे,
हॉ ए, प्यारी बिछड्यो कंत मिलावां
सुगणी म्हांने देश बताओ रे।
सूवा बंगाले जाजे रे
सूवा बगाले जाजे रे
काई बगाले रे मांय
भॅवर रो पतो लगाजे रे।
लावो लावो कोरो कागदियो
लावो लावो कलम दवात
कोई लिख परवानो म्हारे गले बांधो
उड़ जास्यां परभात।
उडियो उड़ियो सूवटो
जा पूग्यो बगाल
सूवटो जा पूग्यो बंगाल।
बंगाले रे बागा में बैठ्यो अमल्या री डाल।
साथिड़ा रे साथ में
आयो गोरी रो स्याम
रामजी आयो गोरी रो स्याम
घूमत झूमत आ बैठ्यो
हरिये अमवा री छाव।
चक्कर खाकर कै सूवटो
पड्यो धरां रे मांय

साथिड़ा तो पीछे हटिया
स्याम लियो उठाय ।
गले से खोल्यो कागदियो ।
सूवटे खाई उडाण
रामजी सूवटे खायी उडाण ।
राजन देखत रह गया,
कोई सूवटो बैठो हाथ ।
एवड़ छेवड़ ओलभा
बिच बिच सात सलाम
राम जी बिच बिच सात सलाम ।
पढ़ परवानो घर-नारी रो
राजन भयो उदास ।
सुण लो रे साथ्यां बीनती
म्हारी मानो सात सलाम
म्हे जास्यां म्हारे गांव ने
के म्हारे घरां छे काम ।

प्रस्तुत गीत मे सुए को सदेशवाहक के रूप मे चित्रित कर क्रमश नायिका और नायक की विरहाभिव्यक्ति की गई है ।

सूवटा ! मेरे प्रियतम को मिला दो । सूवटा ! मेरे मारूजी को मिला दो । मैं तेरे जनम २ गुण गाऊँगी । सूवा ! मेरे भवर के दर्शन करादो ! गोरी ! हमको पता बता दो, हम तुम्हारा विछडा हुआ पति मिला देगे । हमे उनका देश बता दो । ओ सूआ ! तुम बगाल मे जाना और बगाल मे मेरे भवर का पता लगाना ।

कोरा कागज लाओ और कलम लाओ । पत्र लिख कर मेरे गले मे बाँध दो । मै सुवह उड जाऊँगा ।

सूवटा उडता-उडता बगाल पहुचा और बगाल के बागो मे ग्राम की डाली पर जा बैठा। गोरी का श्याम अपने साथियो के समूह मे आया और झूमता-घूमता हरे ग्राम की छाया मे जा बैठा। सूवटा चक्कर खाकर धरती पर गिर पडा, साथी तो पीछे हट गये किन्तु प्रियतम ने उसे उठा लिया।

गले से पत्र खोला तो सूवटा उड गया। प्रियतम देखते रह गय और सूवटा डाली पर बैठ गया।

पत्र के आदि व अन्त मे उपालम्भ लिखे हुये और बीच मे सात प्रणाम लिखे हुये थे। घर की स्त्री का पत्र पढकर प्रियतम उदास हो गये। साथियो! मेरी विनती सुन लो और मेरे सात वार प्रणाम स्वीकार करो। हम अपने गाँव जायेगे क्योकि हमे घर पर काम है।

ताल कहरवा

––– –सा –सा सा– सा–गरे सानि निसा
ऽऽ ऽसू ऽव टाऽ पीऽ व मि लाऽ देऽ
सारे गसा –ग रेसा ग्रासा गरे सनि निसा
रेऽ ऽसू ऽत्र टाऽ मारू जीमि लाऽ दे ऽ
सारे गऽ –– गरे गम मम मम गरे
रे ऽ –– –– थारा जन मज न म गुण
सारे ऽरे रेरे सारे निनि निसा साग रे–
गास्यूँ ऽसू वाऽ म्हारो भँव रंदि खाऽ देऽ
सा–
रेऽ

(५, सुरता भीलणी

सुरता भीलणी हे भीलणी,
रावजी बुलावे, महलाँ आव।
थाल जिमावूँ मोटा राव रो ॥
मोटा राव जी हो रावजी,
नहीं छे थाल सूँ म्हारे काम।
टुकड़ा भला हो म्हारे भील रा ॥
सुरता भीलणी हे भीलणी,
राव जी बुलावे ढोल्ये आव।
सेज दिखावुं हे मोटा रावरी ॥
म्हारा राव जी हो राव जी,
नहीं रे ढोल्या सूँ म्हारे काम
माचो तो भलो रे म्हारे भील रो।

प्रस्तुत गीत मे सूरता नामक एक भीलणी के ऊँचे चरित्र का परिचय मिलता है। वह अपने निर्धन पति से प्रेम करती हुयी राजसी सुखो का त्याग करती है--ओ सुरता भीलणी, तुझे राव जी बुलाते है। महलो मे आ, तुझे हाथी दाँत का चडला पहिनाऊँ।

मेरे राव जी, ओ रावजी, हमे महलो की इच्छा नही है। मेरे भील की झोपडी ही मुझे भली लगती है। भील के वलिये ही मुझे अच्छे लगते है। ओ सुरता भीलणी, तुझे रावजी बुलाते है महलो मे आ।

तुझे मेरे राव जी का थाल जिमाऊँ। ओ मेरे राव जी; मुझे थाल से कोई काम नही। मेरे भील के दिये हुये टुकडे ही अच्छे है। ओ सुरता भीलणी, तुझे राव जी बुलाते है, ढोलिये पर आ। तुझे मेरे राव की सेज बताऊँ। ओ मेरे राव जी, मुझे ढोलिये से काम नही है। मेरे भील की खाट ही अच्छी है।

खेमटा (दीपचन्दी के वजन का)

सा - नी -   सा सा -   ग - ग -   म म - प - म -
मुरताँ ऽ   भी ल ऽ   णी ऽ हो ऽ   भील ऽ णी ऽऽऽ
म नि -   नि - नी -   ध - -   प - म -

रा व -   जी ऽ वु ऽ   ला वे ऽ   म्हे ऽ ला ऽ
म प -   ग - - -   सा प -   म - प -
आ ऽ ऽ   ऽ ऩ ऽ ऽ   चू [डो ऽ   तो ऽ पे ऽ
ग ग -   ग प म प   ग - -   रेसा सा - -

रा ऊ ऽ   ह स ती ऽ   दा ऽ ऽ   ऽ ऽ त ऽ ऽ
मा - -
रो ऽ ऽ

(६) खेलण दो गणगोर

माथा ने मेंमद लाय भंवर, म्हारे माथा ने मेमद लाय हो।
म्हारी रखडी रतन जड़ाय, भवर म्हांने खेलणदो गणगोर ॥
कानां मे दड़िया लाय. भंवर म्हाने कानां सें दड़िया लाय हो।
म्हारा झुठणा रतन जडाय, भंवर म्हाने खेलणदो गणगोर ॥
हाथां मे चुड़िया लाय, भवर म्हाने हाथां मे चुड़िया लाय।
हो म्हारा गजरा रतन जड़ाय, भंवर म्हाने खेलण दो गणगोर।
पगलिया में पायल लाय, भंवर म्हानें पगलिया से पायल लाय।
हो म्हारा बिछिया रतन जड़ाय भवर म्हाने खेलण दो गणगोर ॥

अर्थात्—

गणगोर सम्बन्धी प्रस्तुत गीत मे राजस्थानी महिलाओ द्वारा विभिन्न प्रकार के आभूषणो की कामना की गई है।

ओ भंवर ! मेरे सर के लिये मेमद लाओ और मेरी रखडी मे रतन जडाओ। भवर ! हमे गणगौर खेलने दो।

भवर ! मेरे कानो मे कडियाँ लाओ और झूटणो मे रतन जडवाओ। भंवर ! हमे गणगौर खेलने दो।

भवर ! मेरे हाथो मे चुडियाँ लाओ और गजरो मे रतन जडवाओ। भवर ! हमे गणगौर खेलने दो।

भवर ! मेरें पैरो मे पायल लाओ और मेरे विछियो के रतन जडवाओ। भवर ! हमे गणगौर खेलने दो।

विशेष:—गणगौर से तात्पर्य पार्वती से है, जिसकी पूजा सुहाग-कामना के लिये की जाती है।

मैमद, रखडी, कडियां, जुटण, चूडी, गजरा, पायल और विछिया राजस्थानी महिलाओ के प्रिय आभूषणो के नाम हैं।

ताल त्रिताल, मात्रा १६

म – म –	म प जग रेग	म – म ग	प ध प प धनि
मा ऽ था ने	मे ऽ म ऽ द ऽ	ला ऽ व म	व र ऽ म्हाऽने
ध प ध म	पम पध नि	प – – प	स नी ध प
मा ऽ था ने	मे ऽ म द	ला ऽ व हो	म्हारी र क
ध म म प	म प मग रेग	म म म प	ध ध नि द्
डी ऽ ऽ र	रतन ऽ ज ऽ	डाऽ व भवर	र म्हा ऽ ने
प प प म	प प म ग	म म म ज	म – म –
खे ऽ ल ण	दो ऽ ऽ ऽ	गण ऽ गो	ऽ ऽ ऽ र
•	३	×	२

[स्वरलिपि—श्रीमती मोहनकुंवर व्यास]

(७) झाली राणी

थे तो चाल्या जी पनांमारू चाकरी,
धण को काई रे हवाल, गोरी ने खिदादो बाप के ।
म्हे तो चाल्या रे झाली राणी चाकरी
बैठी थ कँवर खिलाय, कै र करोगी थारे बाप के ।
कोठी तो चावल झाली राणी मोकला,
घी का भर्‌या ऐ भण्डार कै र करोगी थारे बाप के ।
चावल में जी पनामारू सुलसुलियो,
घी थारे घुड़ला ने पाय गोरी ने खिदाबो बाप के ।
छोटो भाई पनांमारू सुलसुलियो,
सास कैवै बहू जाय लारा खिंदाया जास्यां बाप के ।
कुण थारो ए झाली राणी गूथेगी सीस
कुण थारे मेंदी जी माडसी कुण उतारे चोलया बीदड़ी ।
नाई की जी पनामारू गूथेगी सीस
बाई जी मेंदी माडसी, सासू उतारे चोलया बीदड़ी ।
गेलै तो गेलै ए झाली राणी जाय ज्यो,
मत पडज्यो ऊजड़ बाट लोग ले हँसे
गेलै ता गेलै जी पनामारू जाय छा
पड गया ऊजड बाट, कॉटो तो लाग्यो जी कैर को ।
कुण थारो ए झाली राणी पकडे पाव
कुण थारो कांटो जी काढसी, कुण थारा आँसू पूँछसी ।
नाई की जी पनामारू पकडे जी पाव,
देवर कॉटो काढसी, बाई जी आंसू पूँछसी ।

के पति को प्रवास जाने के अवसर पर उसकी स्त्री रोती है । प्रस्तुत गीत मे पति की मनुहार का चित्रण किया गया है । मध्य काल के राजस्थानी जीवन की एक सच्च झाकी इस गीत मे दी गई है ।

ओ पनामारू ! आप तो चाकरी के लिये रवाना हो गये हो किन्तु आपकी स्त्री का कैसा हाल है ? गौरी को अपने बाप के यहाँ भेज दो।

ओ झाली राणी ! हम तो नौकरी के लिये चले ! तुम पीछे से बैठी हुई कुँवर को खेलाना। अपने बाप के यहाँ जाकर क्या करोगी ? ओ झाली रानी ! कोठी मे बहुत चावल है और घी का भडार भरा हुआ है। तुम अपने बाप के यहाँ जाकर क्या करोगी ? ओ पनामारू ! चावलो मे कीडे पड गये है और घी अपने घोडो को पिलाओ। गौरी को अपने बाप के यहाँ भेज दो। ओ पनामारू ! मेरा छोटा भाई लेने के लिये आया है। सास जी कहती है, बहू जाओ। मै आपकी भेज हुई ही पिता के यहाँ जाऊँगी।

ओ झाली रानी ! कौन तुम्हारा मस्तक गूथेगी ? कौन तुम्हारे मेहदी लगावेगी ? और कौन तुम्हारी चोली और बिन्दी उतारेगी।

ओ पनामारू ! नाई की लडकी शीष गूथेगी, बाई जी मेहदी माडेगी और सास चोली और बिन्दी उतारेगी।

ओ झाली रानी ! रास्ते रास्ते जाना, उजड रास्ते मत पडना। नही तो सब लोग हँसेगे।

ओ पनामारू ! मै तो रास्ते रास्ते जाती थी किन्तु उजड रास्ते पर पैर पड गया और कैर का काँटा लग गया।

ओ झाली रानी ! कौन तुम्हारा पैर पकडेगा, कौन तुम्हारा काँटा निकालेगा और कौन तुम्हारे आँसू पौंछेगा ?

ओ पनामारू ! नाई की लडकी पैर पकडेगी, देवर काँटा निकालेंगे और आपकी बहिन मेरे आँसू पौंछेगी।

विशेष—पनामारू=राजस्थानी पति के लिये प्रकट किया गया उपमान है जिसका सम्बन्ध प्रसिद्ध प्रेमाख्यान से है।

ताल दादरा

सा ग –	म प –	म ग –	म ग –
थें तो ऽ	चाल्याजी	पन्ना ऽ	मारू ऽ

सा ग नि	सा सा ऽ	सासा ग ऽ	मम प पम
चा ऽ क	री ऽ ऽ	घणु को ऽ	काई रे ऽ ऽ
पम ग ऽ	ग ऽ सा	ग म प	मम ग सा
हवा ऽ ऽ ऽ	ल ऽ गो	री ने खि	दा ऽ दो ऽ
सा ग नि	सा सा –		
वा ऽ प	के ऽ ऽ		

[स्वर लिपि—श्री रामलाल माथुर]

(१२) धोकां तीजडली

म्हांरे कर्‌यो चूरमो दाल,
आज धोका तीजड़ली।
मण भर तो म्हें गेहूड़ां पीस्या,
घडी दोय दली एक दाल।
सासूजी म्हांरा चोको दीनो,
नणदी चूलो ऐ जलाय,
एक नाके म्हे चूलो जलायो,
कोई दीनी दीनी दाल चढ़ाय।
नणदी वाई मांड़ा पोवै,
म्हें लाई ऊंखली मंगाय।
घर घर ऊंखल कूटण लागी,
यू यू चूरमो कूटाय।
नानी चूर्‌यो चूर मो,
कोई दीनी खाण्ड मिलाय
भर भर पलिया घी का घाल्या,
कोई बणियो विसवा बीस।

बेठ्यो कुटंब म्हारो जीमवा,
म्हारी सासड़ परूस्यां जाय ।
जद दाल् चूरमो खावा लाग्या,
म्हारो जी गयो धपाय
आज धोकां तीजड़ली ।

प्रस्तुत लोकगीत राजस्थानी जनता द्वारा तीज के त्यौहार पर गाया जाता है ।

हमारे यहाँ चूरमा दाल किया गया है । हम आज तीज को प्रणाम करेंगे ।

हमने मन भर गेहूँ पीसे और दो धडी दाल दली ।

मेरी सासू जी ने चौका दिया और ननद ने चूल्हा जलाया। हमने एक और चूल्हा जलाया और उस पर दाल पकने के लिये चढा दी ।

ननद बाई माडा बनाती हैं और मैंने ओखली मगवा ली है । मै घर-घर आवाज से ओखली कूटने लगी और इस प्रकार मेरा चूरमा कूटा गया ।

मैने बहुत बारीक चूरमा बनाया और उसमे शक्कर मिला दी, फिर चम्मच भर भर कर घी डाला और इस प्रकार बहुत अच्छा चूरमा बन गया ।

मेरा परिवार जीमने बैठा और सास परोसने लगी । जब सभी दाल चूरमा खाने लगे तो मेरा जी तृप्त हो गया । हम आज तीज को प्रणाम करेंगे ।

विशेष—

धडी—दस सेर तोल के बराबर होता है ।

माडा—रोटी का एक राजस्थानी प्रकार ।

चूरमा—राजस्थान का प्रिय मिष्ठान्न माना जाता है ।

पलियो—घी डालने के बडे चम्मच को कहते हें ।

ताल कहरवा

– – सा सा	सा रे – रे	– रे ग रे	ग – – रे	रे सा
ऽ ऽ म्हा रे	क र्यो ऽ चू	ऽ र मो ऽ	दा ऽऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ल
सा रे – रे	रे ऽ रे ऽ	ग – रे सा	सा – सा सा	
आ ऽ ऽ ज	धो ऽ का ऽ	ती ऽ जड	ली ऽ म्हा रो	

(१३) पनजी

मैं तो म्हारे घर मे बैठी, कांकरड़ी कुण मारी रे,
घड़ी घड़ी की कांकरड़ी म्हाने घायल कर दई रे,
पनजी मुखड़े बोल।
बोल बोल हिवड़ै रा जिवडा,
बोल्या थाने सरसी रै,
पनजी एक वर बोल रे।
मैं तो म्हारे घर में बैठी आडे देकर टाटी रै।
टाटी तोड़ नजारा मार्‌या छाती फाटी रे,
पन जी एक वर बोल रे।
बोल बोल नथली रा मोती, काया मत छोलै रे
पनजी मुखड़ै बोल रे
ओढ़ण ने थाने साल दुसाला चढवा ने थाने घोड़ी रे,
बोल बोल वादीला ढोला, चाकर थारी रै
पनजी ... .
नथली बेच थाने मुरकी घड़ा दूं, भैंस वेच ल्यादूं घोड़ी जी
बैठ्यो मौजां मांण तोड़ मत वालक जोड़ी जी।
पनजी . ...
वोल बोल म्हारे दिल का मालक, बोल्यां सरसी रै
पनजी .. . .

पनजी तो बाजारां चाल्यो, कीकरलो सो रूढ़ो रे,
कुण म्हारी सोकण नजर लगा दी,
कालो पड़ग्यो रे,
पनजी मुखड़े बोल।
बोल बोल हिवड़े रा जिवड़ा, मत तरसावै रे।
पनजी मुखड़े बोल।

प्रस्तुत लोकगीत पनजी को सम्बोधित करके महिलाओ द्वारा प्रेमाभिव्यक्ति के रूप मे गाया जाता है।

मै तो मेरे घर मे बैठी हुई थी और मेरे ककरी किसने मारी ?

बार बार मारी गयी ककरी ने मुझे घायल कर दिया। पनजी मुह से बोलो।

ओ मेरे हृदय के प्राण ! तुम बोलो, तुम्हे बोलना ही पडेगा। पनजी एक बार बोलो।

मैं तो मेरे घर मे टाटी की आड लगाकर बैठी हुई थी। टाटी को तोड कर आख मिलाई तो मेरी छाती फट गयी। पनजी एक बार बोलो।

ओ मेरे नथ के मोती बोलो, मेरे शरीर को कष्ट मत दो। पनजी मुह से बोलो।

आपके पास ओढने के लिये शाल-दुशाले है और चढने के लिये घोडी हे। बोलो बोलो मेरे हठीले पति, मै तुम्हारी सेविका हूँ।

अपनी नथ को बेच करके तुम्हारे लिये कानो की मुरकियाँ बनवा दूँ और भैस बेचकर तुम्हारे लिये घोडी ला दूँ। आप बैठे हुए आनन्द करो। ओ पनजी ! बचपन की जोडी को मत तोडो।

ओ मेरे हृदय के स्वामी ! बोलो, आपके बोलने से ही काम होगा। मेरा पनजी बाजारो मे चला। वह कीकर के फल की तरह सुन्दर था। मेरी किस सौत ने नजर लगादी कि वह काला पडा गया। पनजी मुँह से बोलो। ओ मेरे हृदय के प्राण ! पनज ! मुझे मत तरसाओ और मुख से बोलो।

विशेष—पनजी=एक राजस्थानी प्रेमाख्यान का नायक है।
हिवड़ा रा जिवड़ा=प्रेमी के लिये प्रयुक्त विशेषण है।

ताल कहरवा

सा – ध –	सा – सा रे	ग ग ग म	ग रे रे ग
म्हे ऽ तो ऽ	म्हा ऽ रे ऽ	घ र मे ऽ	बै ऽ ठी ऽ
सा ऽ सा सा	सा रे ग म	ग रे ग सा	सा – – –
का ऽ कर	डी ऽ कुण	मा ऽ री ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
म म ऽ म	म – म म	ग म प प	प म ग
घ डी ऽ घ	डी ऽ की ऽ	को ऽ कर	डी ऽ म्हाने
रे ग सा सा	सा रे ग म	ग रे – सा	सा रे ग म
घा ऽ यल	करदी ऽ	रे ऽ ऽ क	पनजी ऽ
ग रे ग सा	सा – – सा		
मू ऽ डे ऽ	वो ऽ ऽ ल		

(१०) सियालो

कस्या रे नगर सू आयो रे सियालो,
तो घर कुणी जी रे जाईयो भंवर जी।
यो जाड़ो सेली वाला ने लागे।
धार नगर सू आयो रे सियालो,
तो घर रावजी रे जाईयो भंवर जी।
यो जाडो सेली वाला ने लागे
सोना री सगडी, जडाऊ रा दूध्या,
तोई म्हारो जाड़ो नहीं जाईयो भवर जी!
यो जाडो सेली वाला ने लागै॥
सोनारी चुसकी, जड़ाऊ रा प्याला,
तो ई म्हारो जाडो नहीं जाईयो भंवर जी!
यो जाड़ो सेली वाला ने लागै,
रमझम करता लाड़ीसा पधारिया,
अबे म्हारो जाड़ो जाईयो भंवर जी।
यो जाडो सेली वाला ने लागै॥

प्रस्तुत गीत मे जाडे की कठोरता का वर्णन करते हुए बताया गया है कि कई साधनो के होते हुए भी वह दूर नही होता।

किस नगर से यह सरदी आई है? ओ भवर जी! यह किसके घर जावेगी? यह जाडा सेली पहिनने पर भी लगता है। सरदी धार नगर से आयी है और रावजी के घर जायेगी। यह सरदी सेली पहिनने पर भी लगती है।

सोने की सिगडी है और अगारे मानो रत्नजडित है। भवर जी! तो भी मेरी सर्दी नही जाती है। यह सरदी सेली पहिनने पर भी लगती है। सोने की सुराही और रत्नजडित प्याले है। भवर जी! तो भी मेरी सरदी नही जाती। यह सरदी सेली पहनने पर भी लगती है

प्रियतमा रिमझिम करती हुई आई। अब मेरी सरदी दूर हो जावेगी। यह सरदी सेली पहिनने पर भी लगती है

स्वर—लिपि

सा ग ग ग	ग ग ग रे	सा रे रे ग	सा सा सा –
क स्या रे	नगर सूँ ऽ	आयो रे सि	या ऽ लो ऽ
सा रे रे रे	रे रे रे ग	सा रे – सा	रे – प –
धर कुणी	जी ऽ रे ऽ	जायो ऽ भ	वरजी ऽ
– – सा –	सा रे रे रे	रे रे रे –	ग रे सा
ऽ ऽ ओ ऽ	जाडो सेंली	ब ऽ लॉऽ	ने ऽ ला ऽ
सा –			
गे –			

[स्वरलिपि—श्री रामलाल माथुर]

(११) सुरगी ऋतु आई म्हारे देश

सुरगी ऋतु आई म्हारे देश, भली ऋतु आई म्हारे देश।
मोटी मोटी छाट्या ओसर्यो ए बादली,
ओसर्यो ये बादली, जोडा ठेलम ठेल
सुरगी ऋतु आई म्हारे देश, भली ऋतु आई म्हारे देश
ओ कुण वं जे मोठ, मेवा मिसरी

सुरंगी ऋतु आई म्हारे देश, भली ऋतु आई म्हारे देश
ईसर बीजे बाजरो ए बादली
बाजरो ए बादली
कानू बीजे मोठ, मेवा मिसरी
सुरंगी ऋतु आई म्हारे देश, भली ऋतु आई म्हारे देश।

राजस्थानी कृषको का यह प्रसिद्ध गीत है जिसमे वर्षाकालीन प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन करते हुए फसल बोने का वर्णन किया गया है।

मेरे देश मे सुरगी ऋतु आ गई। मेरे देश मे अच्छी ऋतु आ गई है। मोटी मोटी बूंदो वाला मेह बरस रहा है। बादली उमड रही है और तालाब पानी से भर गये है। मेरे देश मे सुरगी ऋतु आ गई है।

ओ बादली! बाजरा कौन बोता है और मोठ-मेवा कौन बोता है? मेरे देश मे सुरगी ऋतु आ गई है। मेरे देश मे सुन्दर ऋतु आ गई है।

ओ बादली! ईसर बाजरा बोता है और कृष्ण मोठ, मेवा-मिश्री बोता है। मेरे देश मे सुरगी ऋतु आ गई है, मेरे देश मे अच्छी ऋतु आ गई है।

विशेष—

जोडा, राजस्थान के छोटे मरुस्थलीय तालाब को कहते हैं।

ईसर, शिवजी का और कानू कृष्ण का राजस्थानी नाम है।

ताल कहरवा

ग ग गं रे ग   सा रे ग रे   सा ऽ ऽ ऽ
सु - र गी ऋ तु   आ ई म्हा रे   दे ऽ ऽ स
(भली ऋतु०)

गा रे रे रे रे रे ग रे   ग ऽ ऽ ग रे ग   सा रे ग ऽ
मो टी मोटी छा ऽ ट्या ऽ   ओ ऽ ऽ स र्‍योए   बा द ली ऽ

ऽ ग ग ग ऽ म ग   रे ऽ ऽ ग   ग ग रे ग
ऽ डा ऽ टे ऽ ल म   ठे ऽ ल सु   र गी ऋ तु

(स्वरलिपि, श्री रामलाल माथुर)

(१२) जलो म्हारी जोड रो

जलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर माले रे,
वीरो भोली नणद रो हुकम नी उठावै रे।
म्हे थांने जलो जी बरजिया छैला उदियापुर मत जाव,
उदियापुर री कामणी छैला राखैला बिलमाय
ओ जलो म्हारी जोड़ी रों फौजां रो मांझी रे,
वीरो म्हारी नणद रो म्हारो कह्यो नी माने रे।
सांझ पड़ै दिन आंथवै रे छैला तेलण लावै तेल,
कंई ए करूं थारे तेल ने तेलण कंई ए करूं थारे तेल
रे म्हारे आलीजा बिना किसो खेल,
ओ छेलो म्हारी जोड रो उदियापुर माले रे।
सांझ पडे दिन आंथवै रे, जला खातण, लावे खाट
कई ए करूं थारी खाट ने ए।
म्हारे मारूड़े बिना किसो ठाट।
ओ छेलो म्हारी जोड़ रो म्हारे घर नीं आयो रे
सांझ पड़े दिन आंथवै रे छेला मालण लावै फूल
कई ए करूं मालण फूल ने ए
म्हाने आलीजा बिना लागे शूल,
ओ जलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर मालै रे
सांझ पड़े दिन आंथवै रे जला तम्बोलण लावे पान
कंई रे करूं थारे पान ने ए
म्हारा आलीजा बिना किसी आन
ओ जलो म्हारी जोडी रो उदियापुर मालै रे
फस्त महीनो आवियो रे जला अब तो खबरां लेय
थां बिन घड़ी ए न आवडै रे।
छेला जीव उठै अठै देह
ओ जलो म्हारी जोड़ रो सेजां रो सवादी रे

कहते है कि जोधपुर के किसी महाराजा ने एक विवाह उदयपुर किया था। वे एक बार उदयपुर कई दिन तक रुक गये तो उनकी दूसरी रानी ने इस गीत की रचना की।

मेरी जोडी का जला उदयपुर मे आनन्द मनाता है। भोली ननद का भाई मेरी आज्ञा नही मानता है। ओ जला जी ! हमने आपको मना किया कि आप उदयपुर न जावे। उदयपुर की कामिनी आपको रोक लेगी। मेरी जोडी का जला सेनाओ का नायक है। मेरी ननद का भाई मेरा कहना नही मानता है। साझ पडती है, दिन अस्त होता है, ओ छेला ! तेलिन तेल लाती है। ओ तेलिन ! तुम्हारे तेल का मै क्या उपयोग करूँ ? मेरे प्रियतम के बिना कैसा खेल ? मेरी जोडी का प्रियतम उदयपुर मे आनन्द मनाता है।

साझ होती है, दिन अस्त होता है, ओ जला ! खातिन खाट लाती है। मै तुम्हारी खाट का क्या उपयोग करूँ ? मेरे प्रियतम के बिना कैसा ठाट ? मेरी जोडी का छेला मेरे घर नही आया।

ओ छेला ! साझ होती है, दिन अस्त होता है और मालिन फूल लाती है। ओ मालिन ! तुम्हारे फूलो का मैं क्या करूँ ? मेरे प्रियतम के बिना वे शूल जैसे है। मेरी जोडी का जला उदयपुर मे आनन्द करता है। ओ जला ! साझ होते ही दिन अस्त होता है, तम्बोलण पान लाती है। तुम्हारे पान का मै क्या करूँ ? मेर आलीजा के बिना कैसी आन ? मेरी जोडी का जला उदयपुर मे आनन्द करता है।

ओ जला ! मस्त महीना आ गया है, अब तो सुध लो। तुम्हारे बिना एक घडी भी नही सुहाता है। ओ छेला ! जीव वहाँ है और शरीर यहाँ है। मेरी जोडी का जला गैया का रसिक है।

विशेष—जलो, एक एक प्रसिद्ध राजस्थानी प्रेमाख्यान का नायक है जिसको सम्बोधित करके प्रस्तुत गीत मे प्रेमाभिव्यक्ति की गई है।

राग पीलू ताल दीपचंदी

×	२	०	३
नि नि –	सा – सा	प – –	म – ध प
ज लो ऽ	म्हाऽरी ऽ	जो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ड
म – ग	रे ग रे –	ग सा –	सा – रे प
रो ऽ ऽ	उ ऽ दि ऽ	ऽ ऽ ऽ	या ऽ पु र
ग – –	रे – ग सा	सा	
मा ऽ ऽ	ले ऽ ऽ ऽ	रे	

अन्तरा

– – –	ग रे सा नि	सा – –	सा – सा –
ऽ ऽ ऽ	मैं ऽ था ने	ज लो ऽ	जी ऽ ऽ ऽ
प प –	म – ध प	ग ऽ ऽ	रे ऽ ग ऽ
ब र ऽ	ऽ ऽ ऽ जि	यो ऽ ऽ	छै ऽ ला ऽ
सा सा –	सा – रे प	ग ग –	रे – ग सा
उ दि ऽ	या ऽ ऽ ऽ	पु र ऽ	म ऽ त ऽ
सा – –	ग रे नि नि	सा – –	सा – सा –
जा ऽ व	उ दि या ऽ	पु र ऽ	री ऽ ऽ ऽ
प – –	म – ध प	म ऽ ग	रे ऽ ग ऽ
का ऽ –	ऽ ऽ ऽ म	णी ऽ ऽ	छै ऽ ला ऽ
सा – –	सा – रे प	ग – –	रे ऽ ग सा
ऽ ऽ ऽ	रा ऽ खे ऽ	ला ऽ ऽ	वि ऽ ल ऽ
सा ऽ ऽ	नि सा ग रे	नि नि –	सा – सा ऽ
मा ऽ य	ओ ऽ ऽ ऽ	ज लो ऽ	म्हा ऽ री ऽ

(१३) कामण

दोय कामण राणी रुकमण जाणे सा
कृष्णचन्द्र बस कियो री सखी
दोय कामण जाणे ।।
दोय कामण राणी सीता जाणे सा,
राम चन्द्र बस कियो री सखी
दोय कांमण जाणे ।
दोय कामण म्हारा ग्वाला जाणे सा,
कांकड़ लाडो वस कियो री सखी
दोय कामण जाणे
दोय कामण म्हारी मालण जाणे सा,
बागां बनडो बस कियो री सखी
दोय कामण जाणे ।

प्रस्तुत गीत दुल्हे के विवाह-सस्कार के लिये आगमन पर गाया जाता है । कामण का अर्थ मोहित कर लेने से है ।

दो कामण रानी रुक्मिणी जानती है । हे सखी ! उसने कृष्णचन्द्र को वश मे कर लिया है । वह दो कामण जानती है ।

दो कामण सीता जानती है । हे सखी ! उसने रामचन्द्र को वश मे कर लिया है । वह दो कामण जानती हे । दो कामण मेरे ग्वाले जानते है । हे सखी ! उन्होने गाव की सीमा मे ही दुल्हे को वश मे कर लिया हैं । वह दो कामण जानते हैं । दो कामण मेरी मालिन जानती है । हे सखी ! उसने बाग मे ही दूल्हे को वश मे कर लिया है । वह दो कामण जानती है ।

नि	सा	ऽ	ग	ऽ	ऽ	ऽ	म	म	ऽ	म	ऽ	म	ऽ
दो	य	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ	म	ण	ऽ	रा	ऽ	णी	ऽ
ग	ग	ऽ	म	ऽ	ग	ऽ	रे	ऽ	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ

र क ऽ	म ऽ ण ऽ	जा ऽ ऽ	णे ऽ ऽ ऽ
ध ऽ ऽ	ध ऽ ध ऽ	ध ध ऽ	प ऽ ध –
कृ ऽ ऽ	ष्ण ऽ च ऽ	ऽ द्र ऽ	ब ऽ स ऽ
ग म ऽ	प ऽ ध ऽ	प ऽ ऽ	म ऽ म ऽ
कि यो ऽ	री ऽ स ऽ	खी ऽ ऽ	दो ऽ य ऽ
ग रे ऽ	म ऽ ग ऽ	रे ऽ ऽ	सा ऽ ऽ ऽ
का ऽ ऽ	म ऽ ण ऽ	जा ऽ ऽ	णे ऽ ऽ

(१४) होली आई

होली आई सहेल्यां खेलाॅ लूर, होली आई हो ।
कोई-कोई ओढे झीणी चूनड़,
कोई कोई ओढे दिखणी चीर, होली आयी
होली आई सहेल्यां खेलाॅ लूर, होली आयी हो
कोई-कोई पहरे रिमझिम विछिया,
कोई-कोई पहरे पायलड़ी, होली आयी हो ।

होली-उत्सव के अवसर पर राजस्थानी महिलाओ द्वारा लूर नृत्य किया जाता है जिसके साथ ही प्रस्तुत गीत गाया जाता है । सहेलियो ! होली आ गई है, हम मिल कर लूर खेले । होली आ गई है । कोई-कोई महीन चूँदडी ओढे हुये है और कोइ दक्षिणी चीर ओढे हुये है । सहेलियो ! होली आई है, और हम मिलकर लूर खेले ।

कोई-कोई रिमझिम करते हुये बिछिया पहने हुई है और पायल ठनक-ठनक बजते है । सहेलियो ! होली आई है और हम मिलकर लूर खेले ।

विशेष--चूँदडी और दक्षिणी चीर राजस्थानी महिलाओ के प्रिय आभूषण है जिनका उल्लेख उक्त गीत मे हुआ है ।

ताल कहरवा

नि प	नि सा सा सा	सा सा रे सा	रे – – रे
हो ली	आ ई रे स	हेल्याँ खेलाँ	लू ऽ ऽ र
सा – म रे	सा सा सा		
हो ऽ ऽ ली	आ ई रे ऽ		
प प नि नि	सा – सा –	रे रे रे रे	सा – सा –
कोई कोई	ओ ऽ ढे ऽ	झीणी झीणी	चू ऽ न ड
रे रे रे रे	रे रे रे रे रे रे	म – – रें	– – सा सा
कोई कोई	ओढे दिख णी ऽ	ची ऽ ऽ र	ऽ ऽ होली

(१५) हींडो ए घलायो

आज तो सहेल्यॉ म्हारी, घटा ए उमटी,
रुक रुक चालै सूरियो ।
कहो तो सहेल्यॉ, आपॉ बागॉ में चालॉ
अमवा री डाली हींडो घाल्यो,
रेसम डोर बँधायो ।
कहो तो सहेल्यॉ आपॉ बागॉ मे चालॉ
बागाँ में हींडो ए घलायो ।
माली की बेटी म्हाने झुल्या ऐ देगी,
ओ झूलो म्हारे मन भायो
कहो तो सहेल्यॉ आपा बागॉ में चालॉ
बागॉ में हींडो ए घलायो ।
सात सहेल्यॉ आपां
म्हारे मन कोड ज छायो
कहो तो सहेल्यॉ आपां बागॉ में चालां
बागॉ मे हींडो ए घलायो ।

प्रस्तुत गीत मे एक नायिका की श्रावण मास मे उमडती हुयी घटाओ, रिझाने वाली ठडी उनरी वायु और हरे-भरे उपवन के आह्लादकारी वातावरण मे झूला झूलने की इच्छा व्यक्त की गई है।

मेरी सहेलियो ! आज बादलो की घटा घुमडी है और रुक-रुक कर बरसात लाने वाली हवाये चल रही है। सहेलियो ! कहो तो बागो मे चले ! बागो मे झूला डाला गया है। आम की डाली पर झूला डाला गया है जो रेशम की डोर से बँधा हुआ है। सहेलियो ! कहो तो बागो मे चले, बागो मे झूला डाला-गया है।

मेरे झूले की बैठक चाँदी की बनी हुई है जिस पर सोने का पानी चढा हुआ है। सहेलियो ! कहो तो बागो मे चले। बागो मे झूला डाला गया है।

माली की बेटी झूट्या देगी, यह झूला मेरे मन को अच्छा लगा है। सहेलियो कहो तो बागो मे चले, बागो मे झूला डाला गया है।

हम सातो सहेलियाँ हिलमिल कर झूले। मेरे मन मे आनन्द छा गया है। सहेलियो ! कहो तो हम बागो मे चले। बागो मे झूला डाला गया है।

विशेष—सूरियो, उत्तर की वर्षा लाने वाली वायु को कहते है। अन्य प्रकार की वायु पछवा पुरवाई आदि है।

ताल दीपचन्दी मात्रा १४

नि सा –	रे – म –	प प –	प – प –
आ ज ऽ	तो ऽ ऽ स	हे ल्यां ऽ	म्हा ऽ री ऽ
प ध –	प – म –	ग म –	ग – रे –
घ टा ऽ	ऐ ऽ ऽ ऽ	उ म ऽ	टी ऽ ऽ ऽ
रे प –	प – प ध	म ग –	नि – सा –
रु क ऽ	रु ऽ क ऽ	चाले ऽ	सू ऽ रि ऽ
रे म ऽ	ग – रे –		
यो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ		

अन्तरा

प प –	प – ध –	नि सा –	सा – सा –
क हो ऽ	तो ऽ स ऽ	हेल्या ऽ	आ ऽ पाँ ऽ
नि सा ऽ	नि रे सा ऽ	नि सा ऽ	नि ध प ऽ
वा ऽ ऽ	गाँ ऽ मे ऽ	चा ऽ ऽ	लाँ ऽ ऽ ऽ
सा – –'	सा – सा रे	ध नि –	ध – प –
वा ऽ ऽ	गाँ ऽ मे ऽ	ही डो ऽ	ऐ ऽ ध ऽ
म प ग			
ला यो ऽ			

(१६) अमवा रो रूख

म्हारे आंगण मे आमवा रो रूख
ऊँ चढ बेठ्यो सूवटो जी राज
उड उड़ रे सुआ नरवल जाय,
कहीयो म्हारी माय ने जी राज
वीरा सा नै भेज ने ल्यो नी मंगाय
थारी घोवड भूरे सासरे जी राज
आयी आयी सावण री तीज,
सावण सुरंगो लहरियो जी राज
और सहेली म्हारी पोवर जाय
मने न आयो कोई लेण ने जी राज
चढ़ चढ देखूं डागली,
कोई य न दीसै आवतो जी राज
लाग्यो लाग्यो म्हारे मन मे चाव
एक वर चढूँ एक वर उतरूँ जी राज
आय आय साथण बूझे बात
थें कद जासो सोवण पीरनै जी राज
कयाँ कया देवूँ मैं बानै जवाब,
नैण भरे हिवडो ऊभले जी राज ।

श्रावण की तीज पर नव विवाहिता वधुएँ अपने पीहर जाती है। प्रस्तुत गीत में सुए को सदेश-वाहक के रूप मे ग्रहण कर नव वधू ने पीहर जाने की उत्कठा व्यक्त की है।

मेरे आँगन मे आम का पेड है जिस पर तोता बैठा है। उड उड तोते। तू नरवल जा और मेरी माँ को कहना कि भाई को भेज कर बुला लो। तुम्हारी बेटी ससुराल मे दुखी है।

श्रावण की तीज आई और सुरगा श्रावण लहराने लगा। मेरी दूसरी सहेलियाँ पीहर जाती है किन्तु मुझे कोई लेने के लिये नही आया।

मै घर के उपरी भाग पर चढकर देखती हू किन्तु कोई आता हुआ नही दिखाई देता। मेरे मन मे चाव लगा है। मै एक बार चढती हूँ और एक बार उतरती हूँ।

सहेलियाँ आ आ कर बात पूछती है। तुम सुहाने पीहर कब जाओगी? मै उनको क्या क्या जवाब दूँ? मेरी आँखो मे आँसू आ जाते है और हृदय भर आता है।

श्रावणी तीज राजस्थान का विशेष त्यौहार है और इस अवसर पर नव विवाहिता वधुए उनके पतियो सहित पीहर आमन्त्रित की जाती हैं।

ताल दीपचन्दी

–	–	–	सा	–	मा	ध	सा	–	–	रे	ग	रे	म
–	–	–	म्हा	ऽ	रे	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ण	ऽ
ग	ग	ग	रे	–	सा	ध	सा	–	–	रे	ग	रे	ऽ
अ	म	ऽ	वा	ऽ	रो	ऽ	रूँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ख	ऽ
प	–	–	प	–	प	–	प	ध	म	म	ग	ऽ	ऽ
जे –	ऽ	ऽ	च	ऽ	ढ	ऽ	बै	ऽ	ऽ	ठ्यो	ऽ	ऽ	ऽ
ग	ग	–	रे	ग	सा	ऽ	सा	–	सा				
सू	व	ऽ	टो	ऽ	जी	ऽ	रा	ऽ	ज				

(१७) उड़ज्या रे काग

उड़ज्या रे काग गिगन का वासी,
खबर तो लाव म्हारे राजन की ।
नॉव नहीं जाणु, मैं तो गॉव नहीं जाणु
सूरत न जाणू थारे राजन की ।
नॉव बतास्यां, गांव बतास्यॉ
सूरत बतास्यॉ म्हारे राजन की ।
तीखी तीखी नाक, फिरंगी को नोकर
चाल चलै उमरावॉ की ।
उड़ज्या रे काग गिगन का वासी
खबर तो ल्याव म्हारी गोरी की ।
नाम नही जाणू मैं तो गाम नहीं जाणू
सूरत न जाणू थारी गोरी की ।
नाम बतास्यॉ गाम बतास्यॉ
सूरत बतास्यॉ म्हारी गोरी की
लॉबा लॉबा केस मिरग सा नेतर
चाल चलै ठकराण्यॉ की ॥

प्रस्तुत गीत मे कौवे को सदेशवाहक मान कर क्रमश नायिका और नायक ने एक दूसरे की पहिचान बतलाई है । पक्षियो को सदेशवाहक के रूप मे लेकर प्रेमाभिव्यक्ति करने की प्रथा हमारे साहित्य मे प्राचीन काल से चली आ रही हे । ओ आसमान मे उडने वाले कागे ! उड जा और मेरे प्रियतम की खबर ला ।

मैं नाम नही जानता, मैं गाम नही जानता और तेरे प्रियतम की सूरत भी मैं नही जानता । तुमको मै नाम बताऊँगी, गॉव बताऊँगी, और मै अपने प्रियतम की सूरत भी बताऊँगी । उसकी नाक नुकीली है । वह फिरगी का नौकर है और वह उमराव की चाल चलता है । ओ आसमान के वासी काग ! उड जा और मेरे प्रियतम की सूचना ला ।

मै नाम नही जानता, मै गाम नही जानता और मै गोरी की सूरत नही जानता। मै नाम बताऊँगा, गाम बताऊँगा और अपनी गोरी की सूरत बताऊँगा ।

उसके लम्बे लम्बे बाल है, मृग जैसे नेत्र है और वह ठकुरानियो जैसी चाल चलती है। विशेष-तीखी नाक, फिरगी का नौकर, उमराव की चाल नायक की तथा लम्बे बाल, मृग-नेत्र और ठकुरानियो जैमी चाल की विशेषता नायिका की प्रस्तुत गीत मे व्यक्त की है।

ताल कहरवा

सा ग ग ग	ग – ग ग	सा रे रे ग	सा ऽ सा ऽ
उ ड जा रे	का ऽ ग गि	ग न का ऽ	वा ऽ सी ऽ
सा रे रे रे	रे ऽ रे ग	सा रे सा रे	ग – – –
ख ब र तो	ल्या व म्हारे	रा ऽ ज न	की ऽ ऽ ऽ

(१८) ढोलो गयो है गुजरात

ढोलो गयो है गुजरात,
मरवण महलॉ मॉहे एकली रे लाल।
बरसण लागो है मेह
चमकण लागी है बीजली, रे लाल ।
ढोलो नदियॉ रो नीर,
मरवण जल मॉयली माछली रे लाल।
सूखण लागो है नीर,
तडपण लागी है माछली रे लाल।
ढोलो चंपले रो पेड़,
मरवण चंपा केरी डालियॉ रे लाल।
ढोलो चम्पा रो फूल,
मरवण फूला, मॉयली पांखड़ी रे लाल॥

यह गीत प्राय राजस्थानी महिलाओ के द्वारा घूमर नृत्य के साथ गाया जाता है। विरह की मार्मिक अभिव्यक्ति इस गीत की प्रधान विशेपता है। ढोला गुजरात गया है, मरवण महलो मे अकेली है। ढोला सावन के महीने की बरसात है और मरवण आकाश की विजली हे। बरसात बरसने लगी और विजली चमकने लगी है।

ढोला नदी का पानी है और मरवण पानी के अन्दर रहने वाली मछली। पानी सूखने लगा और मरवण रूपी मछली तडफने लगी। ढोला चम्पा का पेड है और मरवण चम्पा के पेड की डालियाँ है। ढोला चम्पा वे पेड का फूल है और मरवण पखडियाँ।

विशेष—ढोला और मारवणी प्रसिद्ध राजस्थानी प्रेमाख्यान के क्रमश नायक और नायिका है।

ताल दादरा

स नि
ढो लो

सा ग ग	म प ऽ	प – ग	मम प प
ग यो ऽ	हे गु ज	रा ऽ त	मर व ण
प म –	प ग –	प म प	ग रे सा
म्हे लाँ ऽ	मा हे ऽ	ए ऽ क	ली ऽ रे
सा – सा	नि नि –	सा सा सा	नि ध नि
ला ऽ ल	ढो लो ऽ	सा व णि	या रो ऽ
प – प	नि नि नि	ध ध –	प म –
मे ऽ ह	मर व ण	आ भा ऽ	के री ऽ
पध धप म	ग रे सा	सा – सा	
वीऽ ऽऽ जऽ	ली ऽ रे	ला ऽ ल	

(१९) मेरो मन मारुजी मिलबा ने

मेरो मन मारूजी मिलवा ने
जेठ असाढ आसा सूं काढ्या तो सावण आयो झुरबा ने
मेरो मन मारूजी मिलबा ने
पहलो पख सावण को लाग्यो तो लाग्यो भादवो उड़बा ने
मेरो मन मारुजी मिलबा ने

पूरब दिसा सू उठी बादली तो आयी घटा बरसबा ने
मेरो मन मारूजी मिलबा ने
नान्ही नान्ही बूंदा मेवड़ो बरसे, तो लागी बादली गरजबा ने
मेरो मन मारूजी मिलबा ने
लिख परवाणू म्हारे मारूजीने देस्यां
तो एक बर आवो पिय मिलबा ने
मेरो मन मारूजी मिलबा ने

वर्षा ऋतु मे राजस्थान का प्राकृतिक सौदर्य कई गुना बढ जाता है। ऐसी अवस्था मे विरही जनो की पीडा भी असह्य हो जाती है और उनकी अभिव्यक्ति गीतो मे फूट निकलती है ।

मेरा मन प्रियतम से मिलने के लिये उत्सुक हो रहा है।

जेठ और आषाढ मैने आशा करते हुये व्यतीत किये। अब श्रावण मानो रोने आया है। मेरा मन प्रियतम से मिलने के लिये उत्सुक है ।

श्रावण का पहला पक्ष लगा और फिर भादवा भी व्यतीत होने लगा। मेरा मन प्रियतम से मिलने के लिये उत्सुक है ।

पूर्व दिशा से बदली उठी और मेरे घर बरसने के लिये आ गई। मेरा मन प्रियतम से मिलने के लिये उत्सुक है।

मेह छोटी छोटी बून्दो मे बरसने लगा और बादली गर्जना करने लगी। मेरा मन प्रियतम से मिलने के लिये उत्सुक है।

मै पत्र लिखकर प्रियतम को दूंगी । प्रियतम, एक बार मिलने के लिये आ जाओ।

ताल कहरवा

सा रे रे रे	रे रे रे रे	ग ग सा –	सा – – –
मे रो म न	मा रू जी ऽ	मि ल बा ऽ	ने ऽ ऽ ऽ
ग – ग ग	ग – ग ग	सा रे रे ग	सा सा सा सा
जे ऽ ठ आ	पा ऽ ढ आ	सा ऽ सूँ ऽ	का ऽ ढ् या
सा ऽ रे रे	रे ऽ रे ग	सा सा रे –	ग – – –
सा ऽ व ण	आ ऽ यो ऽ	भु र बा ऽ	ने ऽ ऽ ऽ

(२०) सावण लहर्यो रे

सावण तो लहर्यो भादवो रे,
वरसै च्यारूं कूंट,
म्हारा मोरला, सावण लहर्यो रे।
सावण बाई गवरां सासरे,
कन्हैयो वीरो लेणिहार,
म्हारा मोरला, सावण लहर्यो रे।
सावणियो रगीलो रे लाल
आसी वीरो कन्हैयालाल पावणों
लासी बाई गवरां ने वैलडली जुपाय
म्हारा मोरला, सावण लहर्यो रे

श्रावण मे नव-विवाहिता वधुओ को अपने पीहर जाने की इच्छा होती है जिसकी अभिव्यक्ति प्रस्तुत गीत मे मोर को सम्बोधित करके की गई है।

सावन लहरा रहा है और चारो ओर बरस रहा है। मेरे मोरले ! श्रावण लहरा रहा है। श्रावण मे गवरा बाई ससुराल है और कन्हैया भाई लिवाने वाला है। मेरे मोरिये ! श्रावण लहरा रहा है।

लाल ! सुरगा श्रावण है। भाई कन्हैया पाहुन आवेगा। बाई गवरा को बैल गाडी जुतवा कर लावैगा। मेरे मोरिया। श्रावण लहरा रहा है।

विशेष–बाइ गवरां (गौरी) पुत्री का और कन्हैया (कृष्ण) भाई के प्रतीक माने गये है।

ताल कहरवा

ध ध ध सा	सा – सा ध	सा -- -- सा	सारेग ऽ
सा व ण सु	र ऽ गो ऽ	भा ऽ ऽ द	वो ऽ रे ऽ
ग ग ग –	रे – रे –	सा सा सा सा	सारेग ऽ
व रसे ऽ	चा ऽ रू ऽ	कूं ट म्हा रा	मो र ला ऽ
ऽ ऽ ग –	ग ग सा सा	रे – – –	रे – – –
ऽ ऽ सा ऽ	व ण ल ह	र्यो ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ

(२१) चरखला

चाल रे चरखला, हाल रे चरखला।
ताकू तेरो सोवणो लाल गुलाबी माल,
चरकूँ मरकूँ फिरे घेरणी, मधुरो मधुरो चाल
चाल रे चरखला, हाल रे चरखला।
गुड्डी तेरी रंगरगीली, तकली चक्करदार
चोखो वण्यो दमड़को तेरो, कूकड़िये रे लार।
चाल रे चरखला, हाल रे चरखला।
कातण वाली छेल छबीली बैठी पीढो ढाल
मही--मही पूणी कातै, लम्बो काढै तार,
चाल रे चरखला, हाल रे चरखला।

चरखा हमारे गृहउद्योग का प्रतीक रहा है। प्रस्तुत गीत मे चरखे को सम्बोधित करते हुये सौंदर्य का बखान किया गया है।

चल, मेरे चरखे चल। मेरे चरखे, तेरा तकुवा सुहावना है और तेरा माल लाल गुलाबी है। तेरी घिरनी चरकूँ मरकूँ करती हुयी फिरती है। तू धीमे धीमे चल। चल, मेरे चरखे चल। मेरे चरखे, तेरी गुड्डी रग रगीली है और तेरी तकली चक्करदार है। तेरा दमडका कूकडी के साथ बहुत सुन्दर बना हुआ है। चल, मेरे चरखे। चल मेरे चरखे।

छैल छबीली कातने वाली पीढा ढाल कर बैठी है। वह महीन–महीन पोनी कातती है और लम्बा तार निकालती है। चल मेरे चरखे। चल, मेरे चरखे।

विशेष–ताकू, माल, घेरणी, गुड्डी, दमडको, कूकडी और पूनी चरखा सम्बन्धी राजस्थानी शब्द है।

ताल कहरवा

सा–सा मासा रेसा प – । सा–सा सासा रे सा पऽ

चाऽल रेच रख लाऽ । हाऽल रेच रख लाऽ

गग गग गग गग । सासामा रेग सा- – –

ता कू नेरो सोह णोऽ । लाऽलगु लावी माऽ ल ऽ

गगग ऽ गगग ऽ गगगग रेगरेग । सासासा रे रे ग ऽ सा–ऽ

चरकूँ मरकूँ फिरेऽथे ऽरणीऽ । मवुरो मवुरो चाल

(२२) पटेलिया

ऊँचा राणाजी रा गोखडा रे,

नीचे पीछोला री पाल

पटेल्या मालवी रे

मार्‍यो जाइला रे

मार्‍यो तो जाइला माल मे रे

खेती रो धन्धो ढाव पटेल्या, मालवी रे

मार्‍यो जाइला रे

चोरां री बैठक छोड पटेल्या मालवी रे

मार्‍यो जाइला रे

पटेलिया से तात्पर्य १९वी सदी मे मराठा शासक से होता था। प्रस्तुत गीत मराठो के आक्रमण करने पर प्रचलित हुआ प्रतीत होता है। ओ पटेलिया ! राणा जी के ऊँचे झरोखे है और नीचे पिछौले की पाल है।

ओ पटेल्या ! तू युद्ध क्षेत्र मे मारा जायेगा। तू खेती का कार्य कर। ओ पटेल्या, तू चोरो का कार्य छोड दे नही तो युद्ध मे मारा जायेगा।

विशेष—मराठा शासक मूलत कृषक थे जिनको इस गीत मे "पटेल्या" कहा गया है। उन्होने पडौसी प्रदेशो मे लूट—मार प्रारम्भ कर दी थी।

ताल दादरा

सा रे सा	सा प प	सा ग रे	ग रे सा
ऊँ चा रा	णा जी रा	गो ऽ ख	डा रे ऽ
सा रे सा	गरे सा	सा रे सा	सा प —
नी चे पी	छो ला री	पा ल प	टेल्या ऽ
सा ग रे	ग रे सा	सा रे सा	ग रे सा
मा ऽ ल	वी रे ऽ	मा र्यो ऽ	जाई ला ऽ
सा — —			
रे — ऽऽ			

(२३) खेलण जास्यूं लूरडी

ए मा काकाजी ने कै मने चूनड़ी मँगा दे
मैं खेलण जास्याँ लूरड़ी
ऐ मा काकोजी ने कह मने चुड़लियां मगा दे
मैं खेलण जास्यां लूरड़ी
ऐ मा काका जी नै कै मोचड़ी करवा दे
मै खेलण जास्यूं लूरड़ी
ऐ मा भाभीजी ने कै मनै पोमचो दिरा दे
मैं खेलण जास्यू लूरड़ी
ऐ मा भाभीजी ने कै मनें पेजणी दिरा दे
मैं खेलण जास्यूं लूरड़ी
ऐ मा भाभोजी ने कै मने तोड़िया दिरा दे
मैं खेलण जास्यू लूरड़ी॥

प्रस्तुत गीत होली के अवसर पर लूर नाचने के साथ गाया जाता है। इस गीत मे राजस्थानी पुत्री द्वारा विभिन्न आभूषणो और वस्त्रो की माग की गई है।

ओ मा ! काकाजी को कहकर चूदड मगा दो मैं लूर खेलने के लिये जाऊँगी।

ओ मा ! काकाजी को कहकर मुझे चुडला मगवा दो, मैं लूर खेलने के लिये जाऊगी।

ओ मा ! काकाजी को कहकर मेरे लिये जूतिया मगवा दो, मैं लूर खेलने के लिये जाऊगी।

ओ मा भाभीजी से कहकर मेरे मेहदी मढवा दो, मै लूर खेलने के लिये जाऊँगी।

ओ मा ! भाभी जी से कहकर मुझे पोमचा दिलवा दो, मैं लूर खेलने के लिये जाऊँगी।

ओ मा ! भाभीजी से कहकर मुझे पैजनी दिलवा दो, मै लूर खेलने के लिये जाऊँगी।

ओ मा ! भाभीजी से कहकर मुझे तोडिया दिलवा दो, मै लूर खेलने के लिये जाऊगी।

विशेष—चु ंदडी, चुडलो, मोचडी, मेहदी, पोमचा, (एक प्रकार का वस्त्र), पैजणी और तोडिया (पैरो मे पहनने के आभूषण) राजस्थानी महिलाओ की परम प्रिय वस्तुए है।

प – प –	म प ध ध	प – प प	रे ऽ ऽ म प म
ऐ ऽ माँ ऽ	का को जी ने	कै ऽ म ने	चू ऽ ऽ न डी मै
रे – सा –	सा रे ऽ नि	सा ऽ रे म	ऽ ऽ ऽ नि
गा ऽ दे ऽ	खेल ऽ ण	जा ऽ स्यू ऽ	ऽ लू ऽ र
सा – –			
डी – –			

(२४) मरवण

सोना री सरीसी धण पीलरी हो राज,
राज ढोला, राखो नी थांरे हिवड़े रे मांय
परभाते सिधावजो, आलीजा ओ, आज रेवो नी रात
रूपा री सरीसी ओ थारी धण ऊजली हो राज,
राज ढोला राखोनी थांरी मुठडी रे मांय
परभाते सिधावजो आली जा ओ, आज रेवोनी रातडली
हीरा ने सरीसी थॉरी धण चिलकणी हो राज,
राज ढोला राखों नी थांरे कंठां रें मांय।
परभाते सिधावो आली जा ओ, आज रेवो नी रातड़ली
पानॉ ने सरीसी थारी धण राचणी ओ राज
राज ढोला, राखो नी थांरे मुखड़े रे माय
परभाते सिधावो आली जा ओ, आज रेवो नी रातड़ली
लूणॉ ने सरीसी थारी धण चरचरी ओ राज॰
राज ढोला राखो नी थॉरे मुखड़े रे मॉय
परभाते सिधावजो आलीजा ओ आज रेवोनी रातड़ली।

मरवण के नाम से प्रचलित प्रस्तुत गीत मे जाने वाले पति से एक रात रुकने की मनुहार की गई है। स्त्री-सौदर्य का इस गीत मे विशेप वर्णन है।

ओ राज, तुम्हारी स्त्री सोने के समान सुन्दर है।

ढोला उसको अपने हृदय मे रखो! ओ आलीजा आप आज की रात ठहर जाओ और कल सुबह जाना।

ओ राज! आपकी स्त्री चादी की तरह उज्ज्वल है। ओ राज ढोला! इसे अपनी मुट्ठी मे रख लो। ओ आलीजा, आज की रात ठहर जाओ, कल सुबह जाना।

ओ राज! आपकी स्त्री मोती जैसी निर्मल है। ओ राज ढोला! उसको अपने कानो मे रखिये। ओ आलीजा! आज की रात ठहर जाओ, कल सुबह जाना।

ओ राज ! आपकी स्त्री हीरे जैसी चमकीली है।

ओ राज ढोला ! उसको अपने गले में रखिये। ओ आलीजा ! आप आज की रात ठहर जाओ और कल सुबह जाना।

ओ राज ! आपकी स्त्री पान जैसी रग देने वाली है।

ओ राज ढोला ! उसे अपने मुख मे रखिये। ओ आलीजा ! आज की रात ठहर जाओ कल सुबह जाना।

ओ राजा ! आपकी स्त्री लोग जैसी चरचरी है। ओ राज ढोला ! उसको अपने मुँह मे रखिये।

ओ आलीजा ! आज की रात ठहर जाओ और कल सुबह जाना।

विशेष—"सोना सरीसी पीलरी, रूपा सरीसी ऊजली, हीरा सरीसी चमकीली, पान सरीसी राचणी, लूगा सरीसी चरचरी" इस गीत मे प्रयुक्त स्त्री-सौन्दर्य के विशेष उपमान हैं।

स्वरलिपि—ताल दीप चन्दी

सा सा –	ग – ग –	प प –	म – ग –
सो ना ऽ	ने ऽ स ऽ	री सी ऽ	ध ऽ ग्ग ऽ
प प प	प – प –	प प –	प – प नि
रा ज ऽ	ढो ऽ ला ऽ	रा खो ऽ	नी ऽ था रे
ध प –	प म म –	म प ग	ग – सा सा
हि व ऽ	डा ऽ रे ऽ	माँ ऽ ऽ	य ऽ प र
सा ग –	ग – ग –	प – –	म – ग –
भा ते ऽ	ऽ ऽ सि ऽ	धा ऽ व	जो ऽ ऽ ऽ
सा सा ऽ	ग – – –	म – –	ग – म ग
आ ली ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	ओ ऽ ऽ	ऽ ऽ आल
सा सा –	ग – प –	म म –	ग रे ग –
रे वो ऽ	नी ऽ ऽ ऽ	रा ऽ ऽ	त ऽ ऽ ऽ
ड ली –			

(२५) बनवारी ओ लाल कोन्या थारे सारे

बनवारी ओ लाल कोन्या थारे सारे
गिरधारी ओ लाल कोन्या थारे सारे ।
ऐ महल-मालिया थारे
थारी बराबरी करां स कोई टूटी टपरी म्हारे
बनवारी हो लाल, कोन्या थारे सारे
गिरधारी हो लाल, कोन्या थारे सारे ।
ऐ कामधेनवां थारे
थारी बराबरी करा स कोई भैस पाडली म्हारे
बनवारी हो लाल कोन्या थारे सारे
गिरधारी हो लाल कोन्या थारे सारे ।
ऐ हाथी घोडा थार
थारी बराबरी करा स कोई ऊँट साढणी म्हारे
बनवारी ओ लाल कोन्या थारे सारे
गिरधारी ओ लाल कोन्यां थारे सारे ।
ऐ भाला बरछी थारे
थारी बराबरी करा स काई जेली गडासो म्हारे
बनवारी ओ लाल कोन्या थारे सारे
गिरधारी ओ लाल कोन्यां थारे सारे ।
ऐ रतनाकर सागर थारे
थारी बराबरी करां स कोई ढाब भर्यो है म्हारे
बनवारी ओ लाल कोन्यॉ थारे सारे
गिरधारी ओ लाल कोन्या थ रे सारे ।
ऐ तोकस तकिया थारे
थारी बराबरी करां स कोई फाटी गुदड़ी म्हारे
बनवारी ओ लाल कोन्या थारे सारे
गिरधारी ओ लाल कोन्या थारे सारे ।

ओ राधा राणी थारे
थारी बराबरी करां स कोई एक जाटणी म्हारे
बनवारी ओ लाल कोन्या थारे सारे
गिरधारी ओ लाल कोन्या थारे सारे ।

ओ गिरधारी लाल ! हम तुम्हारे भरोसे नही है, तुम्हारे महल मालिये है, हम तुम्हारी बराबरी क्या करे ? हमारे टूटी झोपडी है ओ बनवारी लाल, हम तुम्हारे भरोसे नही है । ओ गिरधारी लाल, हम तुम्हारे भरोसे नही, तुम्हारे कामधेनु गाये है । हम तुम्हारी बराबरी क्या करे हमारे भैंस और पाडिया हे ।

ओ बनवारी लाल, हम तुम्हारे भरोसे नही हैं । ओ गिरधारी लाल, हम तुम्हारे भरोसे नही है । तुम्हारे हाथी घोडे है, तुम्हारी बराबरी हम क्यो करे, हमारे ऊँट साँडनी है, ओ बनबारी लाल, हम तुम्हारे भरोसे नही है, ओ गिरधारी लाल, हम तुम्हारे भरोसे नही है ।

तुम्हारे पास भाला–बरछी है, हम तुम्हारी बराबरी क्या करे ? हमारे जैली और गडासी है । ओ बनवारी लाल, हम तुम्हारे भरोसे नही है । ओ गिरधारी लाल, हम तुम्हारे भरोसे नही है ।

तुम्हारे रत्नाकर सागर है । हम तुम्हारी बराबरी क्या करे ? हमारे तालाब भरे हुये है । ओ बनवारी लाल, हम तुम्हारे भरोसे नही है ? ओ गिरधारी लाल, हम तुम्हारे भरोसे नही है ।

तुम्हारे पास तोकस-तकिये है । तुम्हारी बराबरी हम क्या करे ? हमारे फटी गूदडी है । ओ बनवारी लाल हम तुम्हारे भरोसे नही है । ओ गिरधारी लाल, हम तुम्हारे भरोसे नही है ।

तुम्हारे राधा रानी है । तुम्हारी बराबरी हम क्या करे ? हमारे एक जाटनी है । ओ बनवारी लाल, हम तुम्हारे भरोसे नही है । ओ गिरधारी लाल, हम तुम्हारे भरोसे नही है ।

ताल कहरवा

स्रं सा
त्र न

साग ग– गम प ऽ ग ऽ मग रेमा सारे

वारी होऽ लाऽ ऽल कोऽ न्याऽ थारे सारे

सा ऽ सा ऽ ऽ ऽ

प ऽ धमा सानि निध्र धप ध प प– ऽ ऽ ऽ ऽ

ऐ ऽ मह ल मा ऽ लि या ऽ थारे एऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

पनि ऽनी निनि निध पध ऽध प ऽ म ऽ

थारी ऽव्र राव री ऽ करॉ ऽमो कॉऽ ई ऽ

पध ध ऽ प ऽ म ऽ मप ग ऽ ऽ ऽ सासा

हूऽ टीऽ टप रीऽ म्हाऽ ऽरे ऽ ऽ बन०

(स्वर लिपि)—श्री रामलाल माथुर

(२६) वीरा–१

गाडो तो लरक्यो रेत में रे वीरा, उड रई गगना गैर,
चालो म्हारा घोड़ा उतावला रे, म्हारी बेन्या जोवे बाट।
बेल्यां रा चमके सीगड़ा रे, म्हारा भतीजा रो झगल्यो झूल,
म्हारी भावज रो चमक्यो चूड़लो, म्हारी वीराजी री पंचरगी पाग
काका बाबा रा म्हारा अन्त घणा रे म्हारा गोयरे होतो जाय
म्हारी भाई रो जायो वीरो एकज घणो रे।
म्हारो वरद बजायाँ जाय

प्रस्तुत गीत विवाह मे माहेरे के अवसर पर भाई के स्वागत मे गाया जाता है। वधु का मामा भेट के लिये वस्त्राभूषण आदि लाता है, उसे माहेरा कहते है। भाई की गाडी रेत मे चल रही है और आकाश मे धूल उड रही है। मेरे बैलो, जल्दी चलो क्योकि मेरी बहिन राह देख रही है। बैलो के सीग चमके और मेरे भतीजे का अ गरखा चमका।

मेरी भावज का चुडला चमका और मेरे भाई की पचरगी पगडी चमकी।

मेरे काका बाबा के सम्बन्धी बहुत हैं। वे मेरी गाव की सीमा मे होकर जाते है किन्तु घर नही आते। मेरी मा का जाया भाई एक ही बहुत है जो मेरे मागलिक कार्यो को सफल करता है।

लूर सारङ्ग ताल कहरवा

साऽ सासा सासा रेसा रेम ऽरे मप ध प ऽ ऽ ऽऽ रेम ऽ ममम

गाऽ डोतो लर क्यो रेऽ ऽत मेरे वी रा ऽ ऽ ऽऽ उड ऽर हीऽ

रे रे रे रे साऽसा मा सासा सासा सासा सासा

ग ग ना ऽ गँ ऽ ऽ र चालो म्हारा घोडा उऽ

रेम ऽरे मऽ पऽ मऽ ऽ ऽ ऽऽ मरे मप पम पम रेसा

ताऽ ऽव लाऽ ऽऽ रेऽ ऽऽ ऽऽ म्हारी बँऽ न्याऽ जोऽ वेऽ

साऽ ऽऽ ऽऽ ऽस

बाऽ ऽऽ ऽऽ ट

(२७) लूग्या री डोरी

आक तलै म्हारो सासरियो लूग्या री डोरी ये,
नीम तलै म्हारो पीर म्हारी–ए लूग्यां री डोरी

आक बकरियाँ चर गई ए लुंग्या री डोरी,
कोई नीम झिलोरा खाय म्हारी लूग्यां री डोरी
एक पनड़लो तोड़ियो ए लूग्यां री डोरी
कोई चुव चुव पडे छे मजीठ। म्हारी ए लूग्या री डोरी
तलै कटोरो मॉडियो ए लूग्यां री डोरी
मैं तो गई म्हारे मामारे ऐ लूग्यां री डोरी
कोई म्हारे मामे को व्याव। म्हारी, लूग्या री डोरी
सुसुरोजी आया लेण नै ये लूग्यां री डोरी
कोई किण विध ये मै देऊ जबाब। म्हारी०
गज को काढू घूंघटो ए लूग्यां री डोरी
इण विध ए मैं देऊँ जुवाब, म्हारी लूग्यां री डोरी।

विवाह के अवसर पर ही बहू के सुख-दुःख भरे भावी पारिवारिक जीवन की कल्पना कर ली जाती है। प्रस्तुत गीत मे भावी जीवन-सम्बन्धी बहु की भावनाओ का सजीव चित्रण हुआ है।

आक के नीचे मेरा ससुराल है और नीम-नीचे पीहर। आक को तो बकरियाँ चर गई किन्तु नीम लहरा रहा है। मैने एक पत्ता तोडा तो उसमे से मजीठ चू चू कर गिरता है। मजीठ भरने के लिये नीचे कटोरा रख दिया।

मै अपने मामा के यहा गई क्योकि मेरे मामा का विवाह था।

मेरे सुसराजी लेने के लिये आये। मैं किस प्रकार उनको उत्तर दूँ। गज भर लम्बा घूघट निकालूँ और इस प्रकार उत्तर दूँ।

ताल कहरवा

सा प प प	मप ध ध प	प ऽ प रे	रे म प प
आ ऽ क त	लेऽ ऽ म्हा रो	सा ऽ स रि	यो ऐ लूँ ऽ
म ऽ ग रे	रे सा सा ऽ	नि सा ग ऽ	ऽ ऽ ग रे
ग्या ऽ री ऽ	डो ऽ री ऽ	नी ऽ म ऽ	ऽ ऽ त ऽ

प ऽ ध प   म ऽ ऽ म   नि सा ग ऽ   ऽ ऽ प ऽ
ले ऽ म्हां रा   पी ऽ ऽ र   म्हा री ए ऽ   ऽ ऽ लूं ऽ
म – ग –   रे ऽ रे सा ऽ

ग्या ऽ री ऽ   डो ऽ री ऽ

(२८) बना

सिरदार बनाजी हसती तो थे लाव्जो कजली देश रा
उमराव बनाजी घुडला थे लायीज्यो जी खुरासाणी देस रा
सिरदार बनाजी सेवरीयो झलके ओ आभा बीज को
उमराव बनाजी सोना थे लायीज्यो लंका देस रो
सिरदार बनाजी रूपो थे लायीज्यो उज्ज्वल पुर देस रो
उमराव बनाजी सेवरीयो झलके ओ आभा बीज रो

प्रस्तुत गीत विवाह के अवसर पर दूल्हे को सम्बोधित कर महिलाओ द्वारा गाया जाता है।

ओ सरदार बनाजी ! हाथी कजली देश के (कदली बन के) और उमराव बनाजी घोडे आप खुरासाणी देश के लाना।

ओ सरदार बनाजी ! आपका सेहरा आकाश मे बिजली की भाति चमकता है।

ओ उमरावजी ! सोना आप लका देश का लाना। ओ सरदार ! चाँदी आप उज्ज्वलपुर देश की लाना। ओ सरदार ! आपका सेहरा आकाश मे बिजली की भाति चमकता है।

टिप्पणी—इस गीत मे हाथी, घोडा, सोना और चादी की श्रेष्टता के लिये क्रमश कदली वन, खुरासाण, लका और उज्ज्वलपुर नामक स्थान बतलाये है।

ताल कहरवा

– – – –   – – म ग   प ऽ म म   ग ऽ रे ऽ
          सिर   दा ऽ र व   ना ऽ सा ऽ

ग ऽ म म प ऽ प म ध ऽ प ऽ ऽ म म ग
ऽ ऽ ह स ती ऽ तो ऽ ल्या यी जो ऽ ऽ क ज ली
रे ग ऽ रे सा ऽ म ग
ऽ दे ऽ स रा ऽ उ म०

(२९) वीरा–२

वीरा, म्हारे रमाझमा से आजो रे
वीरा, माथा ने भम्मर लाजो, रखडी रतन जड़ाजो
वीरा, कानां ने झाल घड़ाजो, झूटणा रतन जड़ाजो
वीरा, आप आजो ने भावज लारे लाजो जी
वीरा, सिरदार भतीजा लारा लाजो जी
वीरा, हीवड़ा ने हास घड़ाजो,, म्हारे माला पार पुवाजोजी
वीरा. बइया ने चूडला पिराजो. म्हारे गजरो मोगरो लगाजो जी
वीरा, पगल्या ने पायल लाजो, म्हारा घूघरा उथल जड़ाजो जी।
वीरा, आप आजो ने सिरदार भतीजा लारा लाजो
वीरा, म्हारे रमाझमा से आजो।

यह लोकगीत विवाह मे माहेरा लाने के अवसर पर भाई को सम्बोधित कर गाया जाता है। भाई, मेरे यहाँ रमझम करते हुए आना। भाई, मेरे सर के लिये भवर लाना और मेरी रखडी के लिये रतन जडवाना।

भाई मेरे कानो के लिये झेले घडवाना और मेरे झूटणो के लिये रतन जडवाना। भाई, आप आना और भावज को साथ लाना।

भाई सरदार ! भतीजो को भी साथ लाना। भाई छाती पर पहनने के लिये हास घडवाना और मेरे लिये माला पिरोवाना।

भाई बाहो के लिये हाथीदाँत का चुडला चिराना और मेरे गजरे के लिये मोगरा लगवाना। भाई मेरे पैरो के लिये पायल लाना और मेरे घूघरो को बदल कर जडवाना। भाई, आप आना और सरदार भतीजो को भी साथ लाना।

भाई ! मेरे यहाँ रमझम करते हुये आना ।

– – – –,	– – ग रे	नि सा ऽ नि	ध नि प ध
	वी रा	र मा ऽ झ	मा ऽ से ऽ
रे ऽ सा ऽ	ऽ ऽ सा रे	ग ऽ म म	ग ऽ सा रे
आ ऽ ज्यो ऽ	ऽ ऽ म्हारे	मा ऽ थाने	मऽम्म र
ग ऽ म ऽ	ग ऽ मा रे	नि सा ऽ नि	ध नि प ध
ला इ ज्यो ऽ	जी ऽ वी रा	र मा ऽ झ	मा ऽ ऽ से

(३०) ओलू

म्हे थाने पूछा म्हारी धीवडी,
म्हे थाने पूछा म्हारी बालकी,
इतरो बावै जी रो लाड, छोड र बाई सिछ चाल्या ?
मै रमती बावे सा रे पोल
आयो सगैजी रो सूवटो गायडमल ले चाल्यो
म्हे थाने पूछा म्हारी बालकी
म्हे थाने पूछां म्हारी धीवड़ी
इतरो माऊजी रो लाड छोड़ रे बाई सिध चाल्या ?
आयो सगाजी रो सूवटो
ओ लेग्यो टोली मां सूं टाल फूटरमल ले चाल्यो,
म्हे थाने पूछां म्हारी बहनड़ी
म्हे थाने पूछा म्हारी बाई सा
इतरो वीरे जी हेत छोड़ रे बाई सिध चाल्या ?
हे आयो परदेसी सूवटो
हे बागा मायलो सुवटो
म्हे तो रमती सहेंलियां रे साथ, जोड़ी रो जालम ले चाल्यो ।

प्रस्तुत लोक गीत विवाह सस्कार का विदाई–सम्बन्धी है, माता, पिता, भाई व वहिन की स्मृतियो को "ओलू" कहते है ।

हे पुत्री ! हम तुमको पूछते है, हमारी बालिका हम तुम्हे पूछते है कि तुम अपने बाबाजी का इतना प्रेम छोडकर कहा चली हो ?

मैं बाबा सा के द्वार पर खेलती थी। सम्बन्धी का सूवटा गायडमल आया और वह हमे ले चला। अपनी बालिका, हम तूम्हे पूछते है, अपनी पुत्री, हम तुम्हे पूछते है, माताजी का इतना प्यार छोडकर तुम किधर चली ?

सम्बन्धी का सुवटा आया और वह सुन्दर टोली मे से छाँट कर ले गया।

अपनी बहिन ! हम तुम्हे पूछते हैं। अपनी बाई ! हम तुम्हे पूछते है भाई का इतना प्यार छोडकर तुम किधर चली ?

परदेसी सुवटा आया, बागो मे से सुवटा आया, मैं अपनी सहेलियो के साथ खेलती थी और वह मेरी जोडी का जालिम ले चला।

टिप्पणी—गायडमल, फूटरमल और जोडी का जालिम विशेषणो के रूप मे प्रयुक्त हुये है।

ताल दीपचन्दी

म रे ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	म रे ऽ	प ऽ म ऽ
म्हे ऽ ऽ	था ऽ ऽ ऽ	ने ऽ ऽ	पू ऽ छा ऽ
रे सा ऽ	सा ऽ ऽ ऽ	सा ऽ ऽ	म ऽ ऽ ऽ
म्हा ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ	धी ऽ ऽ	ब ऽ ऽ ऽ
म रे ऽ	रे ऽ रे ऽ	म रे ऽ	प ऽ म ऽ
म्हे ऽ ऽ	था ऽ ने ऽ	पू छा ऽ	म्हा ऽ री ऽ
म रे ऽ	रे ऽ रे ऽ	म रे ऽ	प ऽ म ऽ
बा ऽ ऽ	ल ऽ की ऽ	इ त ऽ	रो ऽ ऽ ऽ
रे सा ऽ	सा ऽ ऽ ऽ	सा ऽ ऽ	म ऽ ऽ ऽ
बा बा ऽ	सा ऽ ऽ ऽ	रो ऽ ऽ	ला ऽ ड ऽ

(स्वर लिपियाँ—श्री रामलाल माथुर)

मेनारिया-साहित्य

डा० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम० ए० (पी-एच० डी०) साहित्य-रत्न की शिक्षा, अनुभव और साहित्य-सम्बन्धी कार्यो का सक्षिप्त-परिचय

१ जन्म—

दिनाक ५ नवम्बर, १६२३ ई० को उदयपुर मे मालवीय श्री गौड ब्राह्मण-कुल मे हुआ।

२. शिक्षा—

१ एम० ए० हिन्दी द्वितीय श्रेणी, राजस्थान विश्वविद्यालय, २ साहित्य-रत्न द्वितीय श्रेणी, हिन्दी विश्वविद्यालय, इलाहाबाद। ३. मध्यमा (विशारद) द्वितीय श्रेणी, हिन्दी विश्वविद्यालय, प्रयाग। ४ जोधपुर विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० से सम्मानित। ५ एम ए (सस्कृत) और ६ डाक्टर ऑव लिटरेचर के लिए प्रयत्न चालू है।

३ अनुभव—

१. पूर्व सचालक और मन्त्री–राजस्थान विद्यापीठ शोध सस्थान, उदयपुर, क्रियात्मक प्रशासन का अनुभव १० वर्ष–१६४१ से १६५० ई०।

२ सस्थापक और सम्पादक, शोध-पत्रिका, साहित्य-सस्थान, उदयपुर, उन्नीसवे वर्ष मे प्रकाशन चालू है।

३. प्रिंसिपल और प्राध्यापक, राजस्थान विद्यापीठ कालेज, उदयपुर। स्नातक और स्नातकोत्तर अध्यापन का अनुभव ८ वर्ष–१६४१ से १६४८।

४ रिसर्च स्कालर, सम्पादन-समिति, भारतीय स्वाधीनता सग्राम का इतिहास, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, १६५५ ई०।

सदस्य 'आबू-समिति, राजस्थान सरकार' १९५२ ई० ।

६ पर्यवेक्षक और अधिवक्ता, २६ वा अन्तर्राष्ट्रीय प्राच्यविद्या सम्मेलन, १९६४ ई० ।

७ विभागीय सचिव अखिल भारतीय सस्कृत शिक्षा सेमिनार, १९६४ ई० ।

८ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की राजस्थान समिति के सदस्य ।

९ सदस्य महासमिति, राजस्थान सस्कृत साहित्य सम्मेलन १९६६ ई० ।

१०. अनेक शिक्षण संस्थाओ की कार्य समिति के सदस्य ।

११. सहायक सचालक, शोध सहायक और उपनिदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, राजस्थान सरकार, जोधपुर । प्रतिष्ठान मे अनुसधान और प्रशासन सम्बन्धी कार्य का क्रियात्मक अनुभव- १७ वर्ष, १९५१ से ।

४. विशेष—

१. रेडियो से हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा साहित्य एव सस्कृति विषय पर प्रसारित वार्ताए—सवा सौ । १९४८ से १९६७ ई० ।

२. राजस्थान के आन्तरिक भागो मे और पूना, बम्बई, कलकत्ता आदि की यात्राए कर हस्तलिखित ग्र थ और साहित्य सम्बन्धी विस्तृत खोज, सग्रह, अध्ययन और प्रकाशन कार्य ।

३. राजस्थान मे हस्तलिखित ग्र थो की खोज का निदेशन १९४१ से १९५० ई०, प्रकाशित भाग—३ ।

४. गुजराती और मराठी आदि मे अनेको रचनाए अनुदित और प्रकाशित ।

५. देश-विदेश के अनेक प्रमुख विद्वानो द्वारा साहित्यिक कार्यो और प्रकाशनो का प्रशसात्मक उल्लेख ।

६. व्यक्तिगत साहित्य सकलन, राजस्थानी लोकगीत दस हजार, राजस्थानी लोक कथाए—एक हजार, आदि ।

७ राजस्थान सरकार द्वारा साहित्यिक कार्यो के लिए दो बार पुरस्कृत ।

८. हिन्दी, राजस्थानी, अ ग्रेजी, सस्कृत, गुजराती आदि अनेक भाषाओ का ज्ञान।

५. प्रकाशित साहित्य—

१ राजस्थान की रसधारा, राजस्थान सस्कृति परिषद्, जयपुर १९५४ ई०।

२ राजस्थानी भाषा की रूप-रेखा, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, १९५३ ई०।

३ राजस्थान की लोक कथाए, आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली। पुस्तक के तीन सस्करण प्रकाशित हो चुके है। प्रथम सस्करण १९५४ ई०।

४ राजस्थानी वाता, तीन संस्करण प्रकाशित हो चुके है, प्रकाशक स्टूडेन्ट्स बुक क० जयपुर, प्रथम सस्करण १९५४ ई०। लोक-कथा सम्बन्धी उक्त दोनो पुस्तके राजस्थान सरकार द्वारा पुरस्कृत हैं।

५. राजस्थानी लोक कथाए, प्रथम सस्करण १९५४ ई०, अप्राप्य।

६ राजस्थानी लोक-गीत, प्रथम सस्करण १९५४ ई०।

७ राजस्थानी साहित्य-सग्रह, भाग-२, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। १९६० ई०। उपाधि परीक्षा के पाठ्य-क्रम मे स्वीकृत।

८. राजस्थानी हस्तलिखित ग्र थ सूची, भाग-२, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, १९६१ ई०।

९ रुक्मिणी हरण, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, १९६४ ई०।

१० साहित्य-सरिता, जय अम्बे प्रकाशन,जयपुर। प्रथम सस्करण १९५१ई०। तीन सस्करण प्रकाशित हो चुके है।

११ पद्यतरगिणी, सरस्वती पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली १९५६ ई०।

१२ नवीन गीत, जन सम्पर्क कार्यालय, राजस्थान सरकार, जयपुर, १९५७ ई०।

१३. लोक कला निबन्धावली, भाग–१(१९५४), भाग–२ (१९५६), भाग–३ (१९५७)। भाग-१-२ का प्रथम सस्करण अप्राप्य।

१४. राजस्थानी पुस्तक माला, प्रकाशित पुस्तके ३ ।

१५ भारतीय लोक कला ग्र थावली, प्रकाशिन ग्र थ ८ ।

१६ त्रैमासिक-शोध पत्रिका, प्रथम और द्वितीय भाग, १९४६-४७ ।

१७ लोक कला, त्रैमासिक शोध पत्रिका ।

१८. पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित साहित्यिक निबन्ध, लगभग १२५ सवा सौ ।

६. मुद्रणान्तर्गत साहित्य—

१ राजस्थानी साहित्य का इतिहास, मगल प्रकाशन, जयपुर ।

२. श्री कृष्ण-रुक्मिणी विवाह सम्बन्धी राजस्थानी काव्य (शोध प्रबन्ध) मगल प्रकाशन, जयपुर ।

३ भीलो की लोक कथाए, आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली ।

४ राजस्थानी लोक गीत, एक अध्ययन, दी स्टूडेन्ट्स बुक क० जयपुर ।

५ वैताल पचविशतिका राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ।

———